प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-503
प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना/सीखाना

ब्लॉक-3
भाषा सीखना

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

श्रेय अंक (4=3+1)

खण्ड	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
खण्ड-1 भाषा की समझ	**इकाई 1**	भाषा क्या है?	4	2	भारत की संरचना एवं बच्चों के वाक्यों एवं बहुवचनों का विश्लेषण
	इकाई 2	भारतीय भाषाएँ	4	2	त्रिभाषा सूत्र को लागू करना
	इकाई 3	भाषा-अधिगम एवं भाषा-शिक्षण	4	3	• संचयी संरचना उपागम, अनुवाद एवं व्याकरण पर समूह कार्य • विभिन्न वर्गों से तीन पाठ्य वस्तुओं का विश्लेषण • भाषा शिक्षण का उपयोग साहित्यिक गतिविधियों की सार्थकता
खण्ड-2 भाषा अधिगम संबंधित कौशल	**इकाई 4**	सुनना व बोलना	5	3	• विभिन्न तकनीकों, सहायकों का उपयोग • कक्षा में श्रुतलेख का उपयोग
	इकाई 5	पढ़ना	5	3	शिक्षण-अधिगम शब्दकोश निर्माण में विभिन्न पठन उपागमों का उपयोग
	इकाई 6	लिखना	5	3	• डिस्लैक्सिया के संर्कतक के रूप में हस्तलिपि का अध्ययन • लेखन कौशल शिक्षण के लिए विभिन्न प्रविधियों का उपयोग
खण्ड-3 भाषा सीखना	**इकाई 7**	साहित्य एवं भाषा	5	2	इकाई योजनाओं का विकास
	इकाई 8	भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना	6	4	विभिन्न उपागमों में पाठ योजना प्रत्यय चित्रण की तैयारी
	इकाई 9	शैक्षिक सामग्री: कुछ नये आयाम	5	4	विभिन्न श्रव्य-दृश्य सामग्री का निर्माण
	इकाई 10	मूल्यांकन और आकलन	4	2	भाषा आकलन उपकरण
		शिक्षण	15		
		योग	62	28	30
		कुल योग = 62+ 28+ 30 = 120 घण्टे			

ब्लॉक-3
भाषा सीखना

इकाई 7 : साहित्य एवं भाषा

इकाई 8 : भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना

इकाई 9 : शैक्षिक सामग्री: कुछ नये आयाम

इकाई 10 : मूल्यांकन और आकलन

खंड प्रस्तावना

सातवीं इकाई में साहित्य और भाषा के विभिन्न पक्षों की पड़ताल करेंगे तथा यह भी जानने की कोशिश करेंगे कि भाषा में कौनसी ऐसी बातें हैं जो हमें सृजनशील बनाती हैं। साथ ही भाषा सीखने में कविता, कहानी, नाटक आदि की भूमिका पर भी विचार करेंगे।

आठवीं और नवीं इकाइयों का संबंध इस बात से है कि हम अपनी कक्षा में कैसी सामग्री लाएँ और अलग–अलग गतिविधियाँ करने के लिए कैसे तैयारी करें। एक बात तो स्पष्ट है कि जब तक कक्षा रोचक नहीं होगी और बच्चों के सामने लाई गई सामग्री चुनौतीपूर्ण नहीं होगी तो यह स्वाभाविक है कि बच्चों का मन पढ़ाई–लिखाई में नहीं लगेगा।

दसवीं इकाई आकलन व मूल्यांकन से संबंधित है। हम देखेंगे कि परम्परागत आकलन के तरीकों की क्या सीमाएँ हैं और हम कैसे आधुनिक तरीकों की मदद से अपने आकलन को छात्रों और शिक्षकों के लिए अधिक सार्थक बना सकते हैं।

विषय सूची

क्रम. सं.	*पाठ का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	इकाई 7 : साहित्य एवं भाषा	1
2.	इकाई 8 : भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना	21
3.	इकाई 9 : शैक्षिक सामग्री: कुछ नये आयाम	53
4.	इकाई 10 : मूल्यांकन और आकलन	74

टिप्पणी

इकाई 7 साहित्य एवं भाषा

संरचना

7.0 परिचय

7.1 अधिगम उद्देश्य

7.2 भाषा–शिक्षण में साहित्य की भूमिका

7.2.1 साहित्य क्या है?

7.2.2 साहित्य की विधाएँ

7.2.3 भाषा–शिक्षण में साहित्य का इस्तेमाल : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

7.3 साहित्य–शिक्षण के उद्देश्य

7.3.1 कक्षाकक्ष के प्रकार

7.3.2 प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा (या विदेशी भाषा) कक्षाकक्ष

7.3.3 साहित्य के माध्यम से विभिन्न कौषलों का विकास

7.4 विभिन्न विधाओं का शिक्षण

7.4.1 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं में विधाओं को शामिल करने का आधार

7.4.2 कक्षाकक्ष में साहित्यिक विधाओं का उपयोग कैसे करें?

7.4.3 कक्षाकक्ष में समस्याओं से सामना

7.5 सारांश

7.6 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.7 अंत्य इकाई अभ्यास

7.0 परिचय

इस इकाई में हम लोग भाषा सीखने में साहित्य की भूमिका पर विचार करेंगे। अधिकांश स्कूलों में साहित्य की एक अलग विषय के रूप में पढ़ाई की शुरुआत प्रारंभिक कक्षाओं से नहीं होती है। यह भाषा के पाठ्यक्रम में ही सम्मिलित होता है। प्राय: सभी पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ, कविताएँ, निबंध होते हैं लेकिन इस मुद्दे पर बातचीत नहीं हो पाती है कि ये क्यों जरूरी हैं या भाषा अर्जन में इनका क्या महत्त्व है। साहित्य क्या है, बाल साहित्य क्या है, कक्षाकक्ष में इसका उपयोग कैसे करें और यह किन उद्देश्यों को पूरा करता है? ऐसे कुछ प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ने की कोशिश इस इकाई में हम करेंगे।

टिप्पणी

7.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- साहित्य के स्वरूप एवं प्रकार से परिचित हो पाएँगे;
- भाषा अर्जन में साहित्य की भूमिका का विश्लेषण कर पाएँगे;
- प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं में साहित्य–चयन की शर्तों पर अपनी राय दे पाएँगे;
- साहित्य शिक्षण के दौरान आने वाली समस्याओं की पहचान कर पाएँगे;
- साहित्य शिक्षण में शिक्षक की भूमिका को स्पश्ट कर पाएँगे।

7.2 भाषा शिक्षण में साहित्य की भूमिका

7.2.1 साहित्य क्या है?

सामान्यतः शब्द और अर्थ के सहित भाव को साहित्य कहते हैं लेकिन शब्द और अर्थ का संयोग तो इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विशयों से संबंधित सामग्री (लिखित) में भी होता है। यानी हर विशय का अपना साहित्य होता है, जिसमें उससे संबंधित बातों पर विस्तार से बात की गई होती है। जैसे– पाकशास्त्र (भोजन बनाने से संबंधित विशय) का भी अपना साहित्य होता है जिसमें खाने की कोई चीज़ बनाने की विधि विस्तार से लिखी होती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि साहित्य के अंतर्गत किसी विशय की संपूर्ण एवं विस्तृत जानकारी तथा लेखन शामिल होता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि भाषा का साहित्य उपर्युक्त सभी साहित्यों से भिन्न एवं विशिश्ट होता है। इसमें शब्द और अर्थ के बीच सीधा एवं सामान्य संबंध नहीं होता है बल्कि कलात्मक संबंध होता है। भाषा के साहित्य के संदर्भ में एक बात यह भी गौर करने लायक है कि किसी भी भाषा का साहित्य अपने समय और समाज का आईना होता है। वह उसकी सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। उसमें जनता की भावनाओं एवं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी प्रकार के साहित्य को उद्देश्य के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(i) सूचनात्मक साहित्य :– इसके अंतर्गत आने वाली रचनाओं से नई–नई बातों की जानकारी मिलती है। जैसे– विश्वकोष, शब्दकोष, संदर्भ–ग्रंथ आदि।

(ii) विवेचनात्मक साहित्य :– इस प्रकार की रचनाओं को पढ़कर हमारे अंदर और अधिक जानने की इच्छा पैदा होती है क्योंकि इनमें किसी विशय पर तार्किक ढंग से और

टिप्पणी

कार्य–कारण सम्बद्धता को दर्शाते हुए चीज़ों को स्पश्ट किया जाता है। जैसे– दर्शन, विज्ञान और गणित की पुस्तकें आदि।

इन दोनों प्रकार के साहित्य को गैर–सृजनात्मक या गैर–सौन्दर्यात्मक साहित्य भी कहा जा सकता है। इसमें मुख्यतः सूचना प्राप्त करने, तथ्य याद करने एवं समस्या का हल ढूँढ़ने आदि पर बल होता है।

(iii) रचनात्मक या सॉजनात्मक साहित्य :– इसके अंतर्गत आने वाली रचनाओं का लेखक हमारी जानी हुई बातों को इस तरह से कहता है कि हमारे अंदर पढ़ने की ललक उत्पन्न होती है। इस प्रकार की रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है कि कही गई बातें हमारी अपनी हों। पात्र के सुख–दुःख हमारे अपने सुख–दुःख लगने लगते हैं। इस प्रकार के साहित्य का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में मानवीय गुणों का विकास करना एवं उनमें सॉजनात्मक क्षमता विकसित करना है। रचनात्मक साहित्य के अंतर्गत मुख्यतः उपन्यास, कविता, कहानी, रेखाचित्र आदि आते हैं।

साहित्य के इन रूपों की भाषा, आम बोलचाल की भाषा से अलग एवं कलात्मक होती है क्योंकि उसमें विभिन्न प्रकार की साहित्यिक एवं सौन्दर्यात्मक युक्तियों/कलात्मक उपकरणों का निवेश किया जाता है जैसे– उपमा, रूपक, पर्यायवाची, अनुरणात्मक शब्द आदि।

उपमा से तात्पर्य यह है कि जब किसी वस्तु की तुलना किसी दूसरी वस्तु से किसी खास गुण के आधार पर की जाती है तो उसे उपमा कहते हैं। उपमा के चार तत्त्व होते हैं–

1. उपमेय– जिस वस्तु की तुलना की जाती है उसे उपमेय कहते हैं। जैसे– 'मुख चंद्रमा के समान सुंदर है' इस वाक्य में 'मुख' उपमेय हुआ।
2. उपमान– जिस वस्तु से तुलना की जाती है उसे उपमान कहते हैं। जैसे– उपर्युक्त वाक्य में 'चंद्रमा' उपमान है।
3. साधारण धर्म– दो वस्तुओं की तुलना करने के लिए जिस गुण का उल्लेख किया जाता है उसे साधारण धर्म कहते हैं। जैसे– ऊपर के उदाहरण में 'सुंदर' साधारण धर्म है।
4. वाचक शब्द– उपमेय और उपमान के बीच समानता बताने वाले शब्दों को वाचक शब्द कहते हैं। उपर्युक्त वाक्य में 'समान' वाचक शब्द है।

उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप यानी उपमेय और उपमान में जब कोई अंतर नहीं रह जाता है तो उसे रूपक कहते हैं। जैसे 'मुख चंद्र है।'

अनुरणात्मकता शब्द वैसे शब्दों को कहते हैं जिनमें वर्णों अथवा शब्दों का प्रयोग इस तरह किया जाता है कि ध्वनि प्रभाव के कारण अर्थ का पता स्वतः ही लग जाता है। अर्थात अनुरणात्मक शब्द विभिन्न प्रकार की ध्वनियों पर आधारित होते हैं। जैसे– 'कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि।।'

इस उदाहरण में सीता के गतिशील चरणों की पायलों, कमर की किंकिणी और कलाइयों

टिप्पणी

के कंगनों की ध्वनि के द्वारा अनुरणन संभंव हो सका है यानी इन शब्दों के इस्तेमाल से वैसी ही ध्वनि का आभास हो रहा है जैसी इन चीज़ों द्वारा होती है। इस प्रकार सॉजनात्मक साहित्य की भाषा में इन उपकरणों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य भाषा सिखाने में साहित्य के इन रूपों के उपयोग एवं योगदान पर चर्चा करना है। अक्सर स्कूलों में प्रथम भाषा या द्वितीय भाषा सिखाने के लिए जिस साहित्य का प्रयोग किया जाता है वे स्कूली पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं। चूँकि स्कूलों में इसके लिए समय और संसाधन दोनों ही सीमित होते हैं अतः यह एक विचारणीय प्रश्न है कि बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अलावा कितनी मात्रा में साहित्य का एक्सपोजर दिया जाए एवं साहित्य के रूप में जिन पाठों का चयन किया जाए उनका आध ाार क्या हो। सामान्यतः इस चयन के तीन आधार हो सकते हैं–

- एक लिखित पाठ हो, जिसमें भाषा का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल किया गया हो। साथ ही उसमें रूपक, उपमा, मुहावरे, सुंदर वाक्य रचना, छंद, लय आदि का प्रयोग हो।
- पाठ किसी खास विधा जैसे– गद्य, पद्य, नाटक, उपन्यास आदि का हो।
- पढ़ने पर आनंद आए तथा सौन्दर्यानुभूति हो।

ये आधार मोटे तौर पर दिशा निर्देश मात्र हैं जिन्हें दॉढ़ता से पालन करने की ज़रूरत नहीं होती है। कोई पाठ्य सामग्री साहित्य के वर्ग में रखी जा सकती है या नहीं इस बारे में निश्चय करने में ये आधार हमारी मदद करते हैं। लेकिन जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि किसे साहित्य कहा जाय तो हमें अपनी कक्षाओं में बच्चों के उम्र के लिहाज़ से क्या उचित होगा, इसे तय करने की जरूरत होती है। इस इकाई में हम इन पाठ्य सामग्रियों को 'बाल साहित्य' के रूप में जानेंगे। बाल साहित्य पद का उपयोग हम बच्चों के लिए किसी उचित पाठ्य सामग्री के लिए करेंगे।

बाल साहित्य के कई उदाहरणों में केन्द्रीय पात्र या हीरो एक बच्चा होता है। लेकिन यह एकमात्र शर्त नहीं है। वे उदाहरण जहाँ नायक/हीरो बच्चा होता है वहाँ विचार जटिल होता है जैसे– प्रेमचंद की 'ईदगाह', जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर', जैनेन्द्र की 'खेल' आदि कहानियों में व्यक्त विचार बच्चों के लिहाज़ से जटिल हैं। बाल साहित्य भाषा और विचार की दृश्टि से सरल होना चाहिए ताकि बच्चे उसे आसानी से समझ सकें।

यद्यपि राहित्य का इरतेगाल भाषा–शिक्षण का एकगात्र तरीका नहीं है अन्य गुद्रित सामग्रियाँ जो कि साहित्य के अंतर्गत नहीं आती हैं, उनका भी भाषा–शिक्षण में प्रयोग किया जा सकता है। जैसे– विज्ञापन, कार्टून आदि।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. अब तक की हुई चर्चा के आधार पर बाल साहित्य को आप कैसे परिभाषित करेंगे? क्या आप इसे 6–14 उम्र वर्ग के बच्चों के लिए बनी सभी प्रकार की लिखित सामग्री के रूप में वर्णन करेंगे या बच्चों के बारे में लिखित सामग्री के रूप में? क्या इसे मुख्य रूप से उन्हीं के लिए लिखा जाना चाहिए? या वयस्क भी इसका आनंद उठा सकते हैं? क्या आप कॉमिक पुस्तकों को आनंद के आधार पर साहित्य की श्रेणी में रखेंगे?

   .....

   .....

   .....

2. ऊपर दिए गए आधारों के बारे में सोचकर निर्णय लीजिए कि निम्नलिखित में से किसे साहित्य के वर्ग में रखा जायेगा :–

   - समाचार पत्र के विज्ञापन
   - शब्दकोष
   - केक के लिए नुस्खे
   - कविता

3. सॉजनात्मक साहित्य और गैर–सॉजनात्मक साहित्य में क्या अंतर है?

   .....

   .....

   .....

4. निम्नलिखित में से कौन रूपक का उदाहरण है–

   (क) कश्मीर स्वर्ग–सा है। (ख) कश्मीर स्वर्ग के समान है।

   (ग) कश्मीर स्वर्ग है। (घ) कश्मीर स्वर्ग जैसा है।

7.2.2 साहित्य की विधाएँ

कक्षाकक्ष में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे– कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवनी, संस्मरण, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र आदि का इस्तेमाल पाठ्य सामग्री के रूप में विभिन्न कौशलों के विकास के लिए किया जा सकता है।

नाटक– नाटक में किसी महापुरुश के जीवन की घटनाओं का अनुकरण किया जाता है। जो कलाकार इन घटनाओं का अनुकरण कर हमारे सामने पेश करता है, अभिनेता कहलाता है। नाटक में मूलभाव अनुकरण या नकल होता है। नाटक का आनंद देख कर लिया जाता

टिप्पणी

है, इसलिए यह दृश्य–काव्य कहलाता है। नाटक की वास्तविक सफलता मंच पर खेले जाने में है। जिन व्यक्तियों की कथा नाटक में होती है, वे आपस में या स्वयं से वार्तालाप करते हैं और वार्तालाप का आधार होती है भाषा।

एकांकी– एकांकी में एक घटना होती है और वह नाटकीय कौशल से चरम सीमा तक पहुँचती है। इसमें संपूर्ण कार्य एक ही स्थान और समय में होता है। एकांकी में जीवन के किसी एक पक्ष को लिया जाता है। कम से कम पात्र होते हैं। इसमें छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन नहीं किया जाता है। संक्षिप्तता एकांकी के लिए आवश्यक है।

उपन्यास– उपन्यास में लेखक मानव जीवन की तस्वीर को इस निपुणता से प्रस्तुत करता है कि हम उसमें डूब जाते हैं और उसमें वर्णित कथा हमें अपनी सी लगती है। उपन्यास में जीवन का व्यापक चित्रण किया जाता है।

कहानी– कहानी एक ऐसा आख्यान है जो एक ही बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर किसी एक प्रभाव को उत्पन्न कर सके। इसमें उन सभी बातों को छोड़ दिया जाता है जो इस प्रभाव को आगे बढ़ाने में मदद नहीं करतीं। कहानी में जीवन के किसी एक अंक का चित्रण रहता है। बड़ी से बड़ी कहानी भी छोटे से छोटे उपन्यास से छोटी होती है। कहानी में विचार को सांकेतिक रूप में रखा जाता है।

निबंध– निबंध गद्य की वह विधा है जिसमें विचारों को क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है। निबंध ा के लेखन के लिए अध्ययन और विशय का ज्ञान आवश्यक है। बाबू गुलाबराय के शब्दों में ''निबंध सीमित आकार वाली वह रचना है जिसमें विशय का प्रतिपादन निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठव, सजीवता और आवश्यक संगति तथा संबद्धता के साथ किया जाता है।''

आत्मकथा– आत्मकथा का लेखक अपने जीवन के बारे में खुद लिखता है। दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति द्वारा लिखी गई अपनी जीवनी आत्मकथा है। आत्मकथा का नायक लेखक स्वयं होता है। इसमें वह अपने बीते हुए जीवन पर दृश्टि डालता है। अपने अतीत का विश्लेशण करता है।

जीवनी– जीवनी का लेखक किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में लिखता है। यानी जब कोई लेखक किसी अन्य व्यक्ति के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है तो उसे जीवनी कहते हैं। जीवनी का नायक लेखक स्वयं नहीं होता है, कोई अन्य व्यक्ति होता है।

यात्रा वृत्तांत– जब लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गए स्थानों का वर्णन करता है तो उसे यात्रा वृत्त या यात्रा साहित्य कहते हैं। लेखक वर्ण्य विशय का वर्णन आत्मीयता तथा निजता के साथ करता है। जिस विशय का वह वर्णन करता है उसके साथ उसका जुड़ाव होता है तथा उसके अपने जीवन संदर्भ भी उसमें आते हैं। यात्रा वृतांत्त का लेखक यात्रा के विवरणों में स्थान, दृश्य, घटनाएँ तथा व्यक्ति से संबंधित कटु एवं मधुर स्मृतियों का चित्रण करता है।

टिप्पणी

रेखाचित्र– जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, दृष्य आदि का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक के मन पर उसका हू–ब–हू चित्र बन जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। इस प्रकार के वर्णन में व्यक्ति को तटस्थ होना पड़ता है।

संस्मरण– जब लेखक अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में बीती किसी घटना अथवा दृश्य का स्मरण कर उसका वर्णन करता है तो उसे संस्मरण कहते हैं। संस्मरण स्मृति के आधार पर लिखा जाता है। संस्मरण लिखने के लिए जरूरी है कि लेखक का वर्णित व्यक्ति, घटना आदि के साथ व्यक्तिगत संबंध रहा हो। संस्मरण अतीत का ही हो सकता है, वर्तमान या भविश्य का नहीं। लेखक को उसमें अपनी कल्पना से कुछ भी जोड़ने की छूट नहीं होती है।

कविता– कविता लयात्मक होती है। अमूर्त होती है। उसमें बिंबों का प्रयोग होता है। साथ ही उसमें मितव्ययता का खास ख्याल रखा जाता है यानी कम–से–कम शब्दों में अधिक और गहरी बात कहने की कोशिश की जाती है। कविता के प्रभाव उसे विशिष्ट बनाते हैं। कविता मुक्त छंद में भी लिखी जाती है और दूसरी तरफ छंदोबद्ध कविताएँ भी होती हैं। जैसे– दोहा, चौपाई आदि। कविता का अनुवाद कठिन होता है।

साहित्य के इन रूपों से परिचय कराने का उद्देश्य यह है कि ये आपको उन पाठ्य सामग्रियों को चुनने में मदद करेंगे जिन्हें आप कक्षाकक्ष में भाषा सिखाने के लिए बच्चों के साथ इस्तेमाल करना चाहते हैं। यहाँ स्मरणीय है कि आपको यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि बच्चे इन विभिन्न साहित्यिक रूपों के लक्षण के बारे में सीखें बल्कि इतना ही काफी है कि जहाँ तक संभव हो सके बच्चों को इन साहित्यिक रूपों के रोचक उदाहरणों से रू–ब–रू कराया जाय।

पाठगत प्रश्न

1. गद्य के अंतर्गत नहीं आता है–

   (क) नाटक (ख) उपन्यास

   (ग) कविता (घ) कहानी

2. आत्मकथा और जीवनी में क्या अंतर है?

   .....

   .....

   .....

3. कविता के गुण बताइए।

   .....

.....

.....

7.2.3 भाषा शिक्षण में साहित्य का इस्तेमाल : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

20 वीं सदी के चौथे दषक से पहले तक साहित्य का इस्तेमाल भाषा–शिक्षण के प्रमुख साध न के रूप में किया जाता था। और, यह समझा जाता था कि किसी विदेशी भाषा को सीखना, उस भाषा के श्रेश्ठ साहित्य का गहन अध्ययन करना है। लेकिन 1940 से 1960 के दशकों के बीच विदेषी भाषाओं के शिक्षण में साहित्य के उपयोग को नज़रअंदाज किया जाने लगा क्योंकि उसका स्थान प्रयोजनमूलक मॉडल पर आधारित पाठों ने ले लिया। उस समय साहित्य को मुख्यतः कुलिन वर्ग की अभिरुचियों से जोडकर देखा जाने लगा तथा उसे भाषा–शिक्षण के अनावश्यक साधन के रूप में माना जाने लगा। दरअसल परंपरा से भाषा–शिक्षण का आधार व्याकरण–शिक्षण था। लेकिन पाठ्य सामग्री हमेशा व्याकरण के नियमों का दृढ़ता से पालन नहीं करती और वैसी पाठ्य सामग्री का चयन करना मुश्किल है जिसमें संज्ञानात्मक स्तर (Cognitive level) और भाषा योग्यता (Language ability) दोनो हो 1970–80 के दशक में जब संप्रेशणपरक भाषा–शिक्षण विधियों का जन्म हुआ तो पुनः भाषा–शिक्षण में साहित्य के इस्तेमाल पर विचार किया जाने लगा। इसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि उस समय साहित्यिक पाठों की प्रामाणिकता को पुनः स्थापित करने की कोशिश की जाने लगी तथा भाषा के प्रयोगात्मक पक्ष के साथ उसके प्रतिनिधि और कल्पनाशील पक्ष के प्रयोग पर भी जोर दिया जाने लगा।

विड्डोसन के अनुसार, भाषाविज्ञान संबंधी ज्ञान के दो स्तर हैं, व्यवहार का स्तर (level of use) और प्रयोग का स्तर (level of usage)। इनके अनुसार 'व्यवहार' नियमों के ज्ञान को शामिल करता है जबकि 'प्रयोग' में प्रभावी संप्रेषण के लिए इन नियमों का कैसे उपयोग करना है, की जानकारी शामिल होती है। आज की अधिकांश साहित्यिक पाठ्य सामग्री भाषा–व्यवहार के विकास के लिए एक आधार प्रदान करती है। पोवे (1972;18) का तर्क है कि, ''साहित्य भाषा के सारे कौशलों को बढ़ायेगा क्योंकि साहित्य भाषाविज्ञान संबंधी ज्ञान को बढ़ाता है।''

इस प्रकार बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक एक बार फिर से साहित्य विभिन्न भाषा कौशलों के विकास के अनिवार्य एवं अन्यतम साधन के रूप में स्वीकृत एवं स्थापित हो गया। और, आज भी भाषा अर्जन और अधिगम में संदर्भपूर्ण साहित्यिक सामग्री की महत्ता निर्विवाद रूप से कायम है। इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि वर्तमान में बच्चों को वर्णमाला के वर्णों को एक–एक करके रटवाकर सिखाने के बजाय कविता, कहानी आदि संदर्भपूर्ण सामग्रियों के द्वारा सिखाने पर जोर दिया जा रहा है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. परम्परा से भाषा–शिक्षण का आधार था–

   (क) अर्थ–शिक्षण (ख) वाक्य–शिक्षण

   (ग) व्याकरण शिक्षण (घ) ध्वनि–शिक्षण

2. भाषा विज्ञान संबंधी ज्ञान के दो स्तर कौन–कौन से हैं? दोनों में क्या अंतर है?

   .....

   .....

   .....

3. बासवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भाषा–शिक्षण में साहित्य के इस्तेमाल के कारणों पर विचार कीजिए।

   .....

   .....

   .....

7.3 साहित्य शिक्षण के उद्देश्य

भाषा की कक्षा में साहित्य का इस्तेमाल विभिन्न प्रारूपों का अनुसरण करके होता है जो साहित्य शिक्षण के उद्देश्यों और प्रथम भाषा या द्वितीय भाषा कक्षाकक्ष के व्यवहार पर आधारित होता है।

1. **भाषा प्रारूप** :– भाषा प्रारूप, भाषा विकास के लिए साहित्य का इस्तेमाल करता है जिसमें शब्द भंडार और वाक्य संरचना शामिल है। इस प्रारूप की मुख्य खामी यह है कि इसमें कौशलों के विकास के लिए साहित्य सामग्री पर आधारित गतिविधियों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे आनंद कम आता है, जो कि पढ़ने का प्रारंभिक उद्देश्य है।

2. **साहित्यिक प्रारूप** :– साहित्यिक प्रारूप का उद्देश्य विद्यार्थियों को साहित्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के बारे में ज्ञान और विचार प्रदान करना है। यह द्वितीय या विदेशी भाषा शिक्षण के संदर्भ में खास तौर से प्रासंगिक है।

3. **वैयक्तिक विकास प्रारूप** :– इस प्रारूप का उद्देश्य साहित्य के प्रति रूचि पैदा करना है जो कि परीक्षा या कक्षाकक्ष पर केन्द्रित नहीं हो बल्कि विद्यार्थियों को खुद से पाठ्य सामग्री को चुनने और पढ़ने के लिए उत्प्रेरित करे।

टिप्पणी

7.3.1 कक्षाकक्ष के प्रकार

हमने संक्षेप में साहित्य शिक्षण के उद्देश्य और मॉडल पर चर्चा की है। लेकिन कक्षाकक्ष में इन चीजों को शामिल करने का क्या तरीका होगा? क्या आपने कभी सोचा है कि आपकी कक्षा में भाषा सिखाने के क्या तरीके हैं और बच्चे घर में किस तरीके से भाषा का इस्तेमाल करते हैं? क्या आप इन दोनों में कोई अंतर बता सकते हैं? यह प्रकरण ऐसे ही कुछ सवालों का जवाब ढूँढ़ने की कोशिश करता है।

क्रेशन ने भाषा अधिगम और भाषा अर्जन में अंतर को स्पष्ट किया है। (इकाई 3: में इस पर विस्तार से चर्चा की गयी है।)

अधिकांश द्वितीय भाषा कक्षाकक्ष भाषा अधिगम के बढ़िया उदाहरण हैं जहाँ बच्ची को भाषा के नियम और इसके व्याकरण को पढ़ाया जाता है और बच्ची उन नियमों को अभिव्यक्त करती है। उस अर्थ में यह भाषा के बारे में सीखना भी हुआ। परंतु भाषा अर्जन बच्ची द्वारा मातृभाषा को सीखने/ग्रहण करने की प्रक्रिया के समान है जहाँ पर बच्ची व्याकरण के नियमों को अभिव्यक्त करने में सक्षम तो नहीं होती है लेकिन उसे इस बात का पता होता है कि व्याकरणिक दृष्टि से क्या सही होगा।

शिक्षक होने के नाते आपको ज्ञात है कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चे को द्वितीय भाषा की तुलना में प्रथम भाषा पर पर्याप्त अधिकार होता है। द्वितीय भाषा के शिक्षकों का उद्देश्य भाषा के व्यवहार को बढ़ावा देना होना चाहिए न कि नियमों के बारे में जानकारी देना होना चाहिए या कक्षाकक्ष को इस तरह से नियोजित करना चाहिए कि अधिगम के बनिस्बत अर्जन को प्रोत्साहन मिले। बच्चों को इस तरह से तैयार करना चाहिए कि वे वास्तविक दुनिया में इस्तेमाल होनी वाली भाषा के साथ अपने को जोड़ सकें, उसके साथ क़दम मिला सकें और उससे स्पर्द्धा कर सकें।

अब हम लोग अधिगम कक्षाकक्ष के एक उदाहरण को समझने की कोशिश करेंगे और इसकी तुलना अर्जन कक्षाकक्ष से करेंगे। कई द्वितीय या विदेशी भाषा शिक्षक व्याकरण अनुवाद पद्धति में विश्वास करते हैं। ये शिक्षक सबसे पहले शब्दों की द्वैभाषिक सूची उपलब्ध कराते हैं और कुछ उदाहरण देकर व्याकरण के नियमों की व्याख्या करते हैं। उसके बाद उदाहरण के लिए एक अनुच्छेद दिया जाता है जो नियमों को समझाता है और जिसमें शब्द भंडार होते हैं और आखिरी में अभ्यास के लिए प्रश्न होते हैं। इस उदाहरण में अधिगम को अर्जन की तुलना में महत्त्व दिया जाता है।

इसके विपरीत एक अर्जन कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों को तनाव–मुक्त माहौल और उचित तरीके का बोधगम्य इनपुट प्रदान किया जाता है। उनकी गलतियों पर उन्हें टोका नहीं जाता है। कक्षाकक्ष के बाहर की वास्तविक दुनिया से इनपुट (सामग्री) का इस्तेमाल करने में उन्हें सक्षम बनाया जाता है ताकि वे वांछित भाषा में बोलना और वार्तालाप करना सीख सकें।

लेकिन ऊपर हुई चर्चा का निहितार्थ आपके कक्षाकक्ष में क्या है?

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. बच्ची द्वारा मातृभाषा सीखना कहलाता है–

   (क) अधिगम (ख) अर्जन

   (ग) शिक्षण (घ) कहानी

2. द्वितीय भाषा के शिक्षकों का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

   .....

   .....

   .....

3. अधिगम और अर्जन में क्या अंतर है?

   .....

   .....

   .....

4. व्याकरण अनुवाद पद्धति क्या है?

   .....

   .....

   .....

7.3.2 प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा कक्षाकक्ष

आपने कक्षाकक्ष और घर में भाषा व्यवहार के अंतर को महसूस किया होगा। ये अंतर मात्रा, एक्सपोजर के दायरे और इनपुट के रूप में देखे जा सकते हैं।

द्वितीय भाषा कक्षाकक्ष में किस तरह के इनपुट दिए जाएँ कि बच्ची को द्वितीय भाषा में मातृभाषा के जैसी समझ विकसित हो सके?

किसी भी भाषा को सिखाने के लिए चाहे वह प्रथम भाषा हो, द्वितीय भाषा हो या अन्य भाषा हो, साहित्य का इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि इसके लिए चयनित साहित्य आसान शब्दावली, सरल वाक्य और समझ में आने वाली भाषा से निर्मित हो। तथा, चयनित पाठ्य सामग्री रुचिकर होनी चाहिए। साथ ही साथ यह भी ध्यान देना चाहिए कि व्याकरण को सिखाने पर ज्यादा जोर न दिया जाए। सीखने वाले को आगे बढ़ने के लिए बहुत सारे (सामग्रियों) इनपुटों की जरूरत होती है।

साहित्य इसका एक अच्छा स्त्रोत हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के स्तर को जाँचें और थोड़ी सी उच्च स्तरीय सामग्री (इनपुट) प्रदान करें ताकि पढ़ने वाले को चुनौतीपूर्ण लगे।

अधिकांश राज्यों में पहली कक्षा से ही अंग्रेजी की पढ़ाई शुरू हो जाती है। शिक्षक को पाठ्य सामग्री के चयन और आदान–प्रदान में ध्यान रखना चाहिए क्योंकि प्रथम भाषा बोलने वाले के लिए बने साहित्य का इस्तेमाल अन्य भाषा भाषी के लिए मुश्किलें पैदा कर सकता है। पाठ्य सामग्री का विश्लेषण कम से कम करना चाहिए और बच्चों को स्वतंत्र रूप से खोजने/ढूँढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

चाहे हिन्दी की पाठ्य सामग्री हो या अंग्रेजी की उसे ध्यानपूर्वक चुनना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को व्याकरणगत, भाषागत और शब्दगत कोई कठिनाई नहीं आए। यदि संभव हो तो पहले से सीखी गयी संरचना और शब्दावली को शामिल करना चाहिए। संवेगात्मक और बौद्धिक तैयारी को भाषागत और सांस्कृतिक तैयारी की अपेक्षा ज्यादा महत्त्व दिया जाना चाहिए।

साहित्य का इस्तेमाल करते वक़्त निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए :

1. अवबोध– पाठ्य सामग्री की पूरी समझ ज़रूरी नहीं है बल्कि आंशिक अवबोध ज़रूरी है।
2. प्रतिक्रिया– बच्चे पाठ्य सामग्री पर प्रतिक्रिया दें। यह कथन के रूप में हो सकता है जो केवल हूबहू दोहराना नहीं हो बल्कि फिर से अपने मन से कहना हो।
3. सृजनात्मकता के लिए मौके हों।
4. विश्लेषण– शब्दा: विश्लेषण या याद की गयी सूचनाओं का दुहराव मात्र नहीं होना चाहिए बल्कि बच्चों को कारण, विचार आदि ढूँढ़ने के मौके मिलने चाहिए।

7.3.3 साहित्य के माध्यम से विभिन्न कौशलों का विकास

अब तक हमने भाषा के कक्षाकक्ष में साहित्य का इस्तेमाल करने के सुस्पष्ट कारणों पर चर्चा की है। कहानियों और कविताओं में आए विवरण, सीखने वाले को संदर्भ प्रदान करते हैं जिसके फलस्वरूप भाषा का सटीक इस्तेमाल करना उसे आने लगता है। लेकिन साहित्य के एक्सपोजर के दूसरे फ़ायदे देखने को मिलते हैं। जैसे–

रुचिकर और तल्लीन रखने वाली एक कहानी एकाग्रचित्तता के कौशल का विकास करने में शुरुआती पाठक की मदद करती है। साहित्यिक सामग्री पढ़कर विद्यार्थी अपनी स्वायत्तता और स्वतंत्रता, परिकल्पना बनाने और अपरिचित शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने जैसे कौशलों का विकास कर सकते हैं।

यदि हम विद्यार्थी को खास साहित्यिक संसार और माहौल प्रदान करते हैं तो वह मनोसामाजिक संदर्भ से अपने आपको जोड़ सकता है। वह साहित्य के इस्तेमाल से अपनी

टिप्पणी

विचार प्रक्रिया को नियंत्रित करना सीखता है, तथा समाज में सकारात्मक रूप से योगदान करने की अपनी शक्ति और संभावना को महसूस करता है।

इसीलिए साहित्य की सराहना करते हुए सी. स्कॉट, (1965) ने लिखा है कि– "साहित्य राष्ट्र की सौन्दर्यपरक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों तथा सामाजिक व्यवस्था के नियमों यानी संस्कृति का आइना है।"

साहित्य द्वारा भाषा सीखने के दौरान सांस्कृतिक संदर्भ के अंतर्गत वैयक्तिक विकास के मौके मिलने चाहिए। इसलिए विद्यार्थियों को समाज के सांस्कृतिक जीवन से परिचय कराया जाना चाहिए और उन्हें भागीदारी के अवसर मिलने चाहिए।

विड्डोसन के अनुसार– "साहित्य का इस्तेमाल केवल भाषा व्यवहार या सांस्कृतिक विषयवस्तु को समझने के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि संवाद निर्माण के लिए भी होना चाहिए। साहित्यिक सामग्री न केवल पठन कौशल को बढ़ाने में सहायक है बल्कि श्रवण, वाचन और लेखन कौशल के विकास में भी मदद करती है।"

वास्तव में, साहित्यिक सामग्री के विश्लेषण और इस्तेमाल के द्वारा वास्तविक जीवन की घटनाओं और अनुभवों से जुड़ी सामान्य सूचनाओं को प्राप्त करना और समझना संभव है। इससे वैयक्तिक और सामाजिक विकास को महसूस करने में हमें मदद मिलती है। अपने संवेगात्मक लक्षणों के अनुसार यह सांस्कृतिक और शैक्षिक दृष्टि से पाठकों को उन्नति का अवसर प्रदान करती है। मातृभाषा के व्यवधानों को दूर करती है। तथा विद्यार्थियों में विश्लेषण करने और समीक्षा करने का कौशल विकसित करती है।

पाठगत प्रश्न

1. रूचिकर और तल्लीन रखने वाली कहानी से शुरूआती पाठक में विकास होता है–

   (क) एकाग्रचित्तता (ख) अनुमान लगाने का

   (ग) परिकल्पना बनाने का (घ) स्वायत्तता और स्वतंत्रता का

2. बच्चों को साहित्य का एक्सपोजर देने के क्या–क्या फायदे हैं?

   .....

   .....

   .....

7.4 विभिन्न विधाओं का शिक्षण

भाषा शिक्षक होने के नाते आपको कई प्रकार की पाठ्य सामग्रियाँ जैसे– कहानियाँ, कविताएँ, निबंध, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि पढ़ाने का अवसर मिलता है। किस

प्रकार की विधा पढ़ाने में आपको मज़ा आता है? अधिकांश बच्चे कहानी पढ़ने में रुचि लेते हैं। आप पद्य पढ़ने के लिए बच्चों को कैसे प्रेरित करेंगे और कम्प्यूटर के बारे में एक निबंध की प्रासंगिकता का वर्णन कैसे करेंगे? पाठ्यपुस्तक के अलावा उपलब्ध पठन सामग्री का उपयोग करने के लिए आप किस तरह की रणनीति अपनायेंगे? इनमें से अधिकांश पहलुओं से यहाँ परिचय होगा और इस पर पाठ योजना की इकाई में विस्तृत चर्चा होगी।

7.4.1 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं में विधाओं को शामिल करने का आधार

इस इकाई के पिछले प्रकरण में हमने विभिन्न विधाओं, जिनको साहित्य के वर्ग में रखा जा सकता है, पर बातचीत की। इस प्रकरण में हम उन विधाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जो प्रायः पाठ्यचर्या में देखने को मिलते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ, लोककथाएँ, पौराणिक कथाएँ और दंत कथाएँ अक्सर शामिल रहती हैं। जबकि उच्च प्राथमिक कक्षाओं की किताबों में इन सबके अलावा उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा आदि भी देखने को मिलते हैं।

कहानियाँ सरल होती हैं। छोटी पाठ्य सामग्री और उनकी संक्षिप्तता बच्चों को कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। कहानी में पूरी बात कुछ ही पृष्ठों में समाहित होती है वह बच्चों में रुचि पैदा करती है और साथ ही साथ चुनौतीपूर्ण भी होती है।

शुरुआती दौर में राइम (तुकांत कविता) बच्चों को समझने में आसान लगती है। बाद की कक्षाओं में शब्दों के चयन से उनमें संवेदनशीलता का विकास होता है। रूपक और दूसरे अलंकारों का इस्तेमाल भाषाई कौशल विकसित करते हैं।

नाटक बच्चों को संदर्भानुकूल सही व्याकरणिक संरचना का इस्तेमाल करने में सहायक होते हैं, उनकी कल्पना को उत्प्रेरित करने और श्रवण कौशल को बढ़ाने में मदद करते हैं। साथ ही पढ़ते वक़्त, दृश्यों की कल्पना करने में विद्यार्थियों की मदद करते हैं। नाटक में अलग–अलग संवाद अलग–अलग पात्रों द्वारा बोला जाता है। इस क्रम में कक्षा में पात्रों या विद्याथियों में परस्पर सहयोग की भावना विकसित होती है। नाटक के माध्यम से विद्यार्थी मानव होने के अर्थ को खोज सकते हैं। नाटक कल्पना, सूझ–बूझ, और स्वज्ञान को भी प्रोत्साहित करता है।

हाल के कुछ एक सालों में 'साहित्य के समाजीकरण' विशय पर हुए शोध से निष्कर्ष निकला है कि साहित्य पढ़ने से पढ़ने की क्षमता बढ़ती है यानी पढ़ने को प्रेरित करने में साहित्य निर्णायक भूमिका अदा करता है। यह बच्चे की कल्पना शक्ति को उद्दीप्त करता है। बच्चों को पढ़ने के लिए बाल साहित्य देना चाहिए ताकि बच्चों को मज़ा आए, उनकी कल्पनाशक्ति उद्दीप्त हो, अपने समाज और संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भरने के लिए उनमें संवेदनशीलता और जानने–समझने की शक्ति का निर्माण हो।

टिप्पणी

प्रारंभिक कक्षाओं में, साहित्य के रूप में उपन्यास, कहानी, पद्य, राइम (तुकांत कविता), लोककथा, रेखाचित्र, संस्मरण होते हैं और वैसी किताबें होती हैं जो बच्चों को आसानी से समझ में आ जायें। साहित्य पढ़ने से बच्चे सृजनात्मक पठन और विषयवस्तु पठन का कौशल अर्जित कर सकते हैं। पाठ्यचर्या का लक्ष्य बच्चों को विभिन्न विधाओं और कार्यों से परिचित कराना होता है और साथ ही पढ़ने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना और पढ़ने के अभ्यास को उद्दीप्त करना भी होता है।

आधारभूत भाषाई कौशलों (पढ़ना, लिखना, सुनना और बोलना) के साथ–साथ भाषाई प्रकरणों (शब्दावली और व्याकरण) के विकास में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है। एनसीईआरटी की हिन्दी और अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें यह समझने के लिए देखी सकती हैं कि अपेक्षित कौशल और बच्चे के स्तर के अनुसार किस तरह से पाठ्य–सामग्री में बदलाव आता है। कक्षा 1 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक सरल राइम से शुरू होती है। आखिरी में कहानियाँ तब आती हैं जब यह कल्पना किया जाता है कि बच्चे ने कहानी का अनुसरण करने के लिए काफी एकाग्रचित्तता का विकास कर लिया है। दूसरी तरफ कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक में कई तरह के गद्य (कहानियाँ, निबंध, साक्षात्कार), पद्य और नाटक शामिल रहते हैं। प्रेमचंद की 'ईदगाह', जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर' जैसी कहानियाँ बच्चों में संवेदनशीलता का विकास करती हैं।

पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करने से आपको अपने कक्षाकक्ष के लिए साहित्य का चयन करने में मदद मिलेगी।

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे बचपन और किशोरावस्था के बीच में होते हैं। इस अवस्था में ऐसी कहानियाँ और कविताएँ प्रासंगिक और लोकप्रिय होती हैं जो बचपन के प्रति प्रेम की भावना को उकसायें और साथ ही साथ भविष्य की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। नाटक और एकांकी बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करने में सहायता करते हैं तथा उन मुद्दों और भावनाओं को समझने में सक्षम बनाते हैं जो दो साल पहले उनकी समझ से परे थे। कुल मिलाकर भाषा सिखाने के लिए ऐसे साहित्य का चयन किया जाना चाहिए जो बचपन और किशोरावस्था के बीच के अंतर को प्रतिबिंबित करे।

7.4.2 कक्षाकक्ष में विधाओं का उपयोग कैसे करें?

इस प्रकरण में हम इस बात पर विस्तार से चर्चा करेंगे कि कक्षाकक्ष में भाषा सिखाने के लिए पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की साहित्यिक विधाओं जैसे– कहानी, कविता, नाटक, एकांकी आदि का इस्तेमाल कैसे करें।

कहानियों के सार का इस्तेमाल :

प्रायः सभी पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ होती हैं। किसी उपयुक्त कहानी के सार का चयन करके आप निम्नलिखित गतिविधियाँ करा सकते हैं :–

- आप बच्चों से यह लिखने के लिए कह सकते हैं कि आगे क्या होगा या ठीक पहले क्या हुआ होगा।

टिप्पणी

- किसी पात्र के व्यक्तित्व के बारे में विद्यार्थियों को लिखने को दे सकते हैं।
- आप विद्यार्थी से पूछ सकते हैं कि कहानी के अमुक पात्र की जगह आप होते तो क्या करते।
- विद्यार्थी चर्चा कर सकते हैं कि उनके जीवन में भी कुछ इसी तरह का हुआ था।
- विद्यार्थियों से दो पात्रों के बीच हुए संवाद को आधार बनाकर बिना किसी पूर्व तैयारी के नाटक खेलने को कहा जा सकता है।
- शिक्षक कक्षा में कहानियाँ सुना सकते हैं, पूर्व निर्धारित बिन्दु पर कहानी कहना बंद करके विद्यार्थियों से किसी भी प्रश्न का जवाब देने के लिए कह सकते हैं। कक्षा के आधार पर जवाब की प्रकृति में अंतर हो सकता है। प्रश्नों पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया कुछ ऐसी हो सकती है : वे क्या सोच रहे हैं, यदि उनके पास भी ऐसा ही अनुभव हो तो उनके दिमाग में क्या छवि बन रही है, पात्रों के बारे में उनकी क्या भावनाएँ हैं, और कहानी को लेकर उनके मन में कौन–कौन से सवाल हैं? प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे बोलकर ही प्रतिक्रिया दर्ज कर सकते हैं जबकि बड़ी कक्षाओं के बच्चे अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करने के लिए बुक जर्नल आदि का इस्तेमाल कर सकते हैं। लोककथाएँ जैसे अकबर–बीरबल, आल्हा–उदल, गोनू झा, तेनालीराम आदि की कहानियों को ऐसी गतिविधियों के लिए चुना जा सकता है क्योंकि इन कहानियों में बहुत सारे चरित्र हैं और ये साहस, हास–परिहास तथा समृद्ध भाषा से परिपूर्ण हैं।

पद्य का इस्तेमाल :

विद्यार्थियों को कविता याद करने के लिए कहने के अलावा उन्हें कविता ज़ोर से (उचित लय के साथ) पढ़ने के लिए कह सकते हैं। इसके लिए आप निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं:–

- कविता में छिपी कहानी को लिखने का कार्य विद्यार्थियों को दे सकते हैं। यह कविता किसके लिए है? यह कविता क्यों लिखी गयी? आदि सवाल पूछ सकते हैं।
- कविता में वर्णित मुद्दों/मसलों पर विद्यार्थी चर्चा कर सकते हैं और ये मुद्दे उनके जीवन से कैसे जुड़े हैं? इस पर उनसे विचार माँगा जा सकता है।
- कविता की संरचना बदले बिना उसके अर्थ को बदल कर फिर से कविता लिखने के लिए विद्यार्थियों से कह सकते हैं।
- दी गयी कविता की मिलती–जुलती शैली में कविता लिखने के लिए विद्यार्थियों से कहा जा सकता है। हालाँकि यह सभी तरह के पद्य के लिए संभव नहीं है लेकिन अक्रॉसटिक्स और हाइकू मॉडल के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं।

टिप्पणी

नाटक और एकांकी का इस्तेमाल :

नाटक और एकांकी के चयन के संबंध में कुछ विवाद है। कुछ लोग शास्त्रीय साहित्य की अपेक्षा समकालीन साहित्य को महत्त्व देते हैं। हिन्दी में भारतेन्दु का 'अंधेर नगरी', रामकुमार वर्मा का 'अशोक का शस्त्र त्याग', प्रसिद्ध नाटक हैं। हालाँकि यह निर्विवाद है कि एकांकी और संवेगात्मक रूप से प्रबल करने वाले नाटक काफी उपयोगी सिद्ध होते हैं।

विद्यार्थियों को कक्षाकक्ष में अपनी तरफ से सामग्री लाने के लिए कहा जा सकता है। जैसे– समाचार पत्र की कतरनें, आलेख, चित्र या कोई भी दूसरी सामग्री, जो उन्हें लगता है कि एकांकी के लिए उपयोगी होंगी। इस अभ्यास के बाद, वे बेहतर तरीके से संप्रेषण करने, आसानी से महसूस करने और जिस दुनिया में वे रहते हैं उसके बारे में विचारों का आदान–प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं।

7.4.3 कक्षाकक्ष में समस्याओं से सामना

साहित्यिक सामग्रियों का यदि उचित तरीके से चयन नहीं किया जाय (या कई बार वे ऐसी होती हैं) तो सीखने वाले के लिए संरचना की दृष्टि से वे सामग्रियाँ काफी जटिल साबित होती हैं। द्वितीय भाषा कक्षाकक्ष में समस्याएँ मिली–जुली होती हैं क्योंकि व्याकरण के नियमों का पालन नहीं किया जाता है। यदि विद्यार्थियों को ऐसी भाषा में पढ़ना हो, जो उन्हें मुश्किल से समझ में आती हो तो उनसे यह अपेक्षा करना बेमानी होगा कि वे संरचना, शैली आदि पर चर्चा कर सकें।

विभिन्न भाषा शिक्षकों का विभिन्न तरह की समस्याओं से सामना होता है। एक प्रथम भाषा शिक्षक को, जब बच्चा पढ़ना–लिखना सीख जाता है, तब भाषा शिक्षण के उद्देश्य को फिर से सुस्पष्ट करना पड़ता है। द्वितीय भाषा शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे विद्यार्थियों को अर्जन का माहौल प्रदान करें जबकि वस्तुस्थिति यह है कि शिक्षक स्वयं उस भाषा को बोलने में सहज नहीं होते हैं।

इन सामान्य कठिनाइयों के अलावा, खास विधा संबंधी समस्याओं से भी सामना होता है। विद्यार्थी अक्सर पद्य पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं और वे न तो इसे समझ पाते हैं और न ही इसकी सराहना कर पाते हैं। नाटक अपना महत्त्व खो देते हैं क्योंकि वे पढ़ाये जाते हैं। नाटक का मंचन करने या इसे गहराई से खोजने/समझने में ज्यादा समय नहीं खर्च किया जाता है। इसके लिए समय और संसाधन की कमी का रोना नहीं रोना चाहिए।

पाठगत प्रश्न

1. साहित्य पढ़ने से कौनसी क्षमता बढ़ती है–

   (क) पढ़ने की (ख) लिखने की

   (ग) बोलने की (घ) सुनने की

2. कक्षाकक्ष में भाषा सिखाने के लिए नाटक का इस्तेमाल करने से बच्चों में किन गुणों का विकास होता है?

.....

.....

.....

3. प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में शामिल साहित्यिक विधाओं का वर्गीकरण कीजिए और कारण सहित यह बताइए कि प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में कौन–सी साहित्यिक विधाएँ शामिल नहीं होती हैं।

.....

.....

.....

4. प्रारम्भिक कक्षाओं में साहित्यिक विधाओं के चयन का आधार क्या होता है?

.....

.....

.....

7.5 सारांश

- साहित्य किसी विशय की सारी जानकारियों और लेखन को शामिल करता है।
- साहित्य दो तरह के होते हैं– सृजनात्मक साहित्य और गैर–सृजनात्मक साहित्य। सृजनात्मक साहित्य का उद्देश्य आनंद की अनुभूति करना, सहानुभूति एवं संवेदनशीलता का विकास करना है। इसके अंतर्गत हम कहानी, कविता, रेखाचित्र, निबंध आदि का अध्ययन करते हैं जबकि गैर सृजनात्मक के अंतर्गत हमारा मुख्य उद्देश्य सूचना प्राप्त करना, तथ्य याद करना और समस्या का समाधान करना होता है जैसे अखबार, शब्दकोष, विश्वकोष, विज्ञान संबंधी साहित्य आदि।
- भाषा शिक्षण के लिए साहित्य के अतिरिक्त अन्य मुद्रित सामग्रियों जैसे विज्ञापन, कार्टून आदि का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- विधा के आधार पर साहित्य के मुख्यतः तीन वर्ग होते हैं– गद्य (कहानी, उपन्यास, जीवनी, यात्रावृत्तांत), पद्य (दोहा, चौपाई, कवित्त, मुक्तछंद) और नाटक।
- भाषा की कक्षा में साहित्य के इस्तेमाल के तीन प्रारूप हैं– भाषा प्रारूप, साहित्यिक प्रारूप एवं वैयक्तिक प्रारूप।

टिप्पणी

- भाषा सीखाने की दो दृश्टियाँ हैं– भाषा अधिगम और भाषा अर्जन। सामान्यतः प्रथम भाषा, बच्चा अपने परिवेश से बिना किसी औपचारिक शिक्षण के अर्जित करता है। जबकि द्वितीय भाषा स्कूल में जाकर औपचारिक विधियों से सीखता है।
- भाषा शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाने वाला साहित्य बच्चों के स्तर एवं रुचि का होना आवश्यक है।
- साहित्य के इस्तेमाल से बच्चों के अवबोध, किसी पाठ्यसामग्री पर प्रतिक्रिया, सृजनात्मकता, विश्लेशण क्षमता, तार्किकता एवं एकाग्रचित्तता जैसे कौशलों का विकास होता है।
- बाल साहित्य से बच्चों में कल्पनाशीलता, अभिव्यक्ति क्षमता एवं पढ़ने के प्रति रुचि विकसित होती है।
- आधारभूत भाषाई कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के साथ–साथ भाषाई प्रकरणों के विकास में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

7.7 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Agnihotri, R. K. (2007). *Hindi: An Essential Grammar*. London: Routledge.

Work Papers of the Summer Institute of Linguistics, University of North Dakota Session 1997 Volume 41 1

Krashen, Stephen D. 1981. Principles and Practice in Second Language Acquisition. English Language Teaching series. London: Prentice-Hall International (UK) Ltd. 202 pages.

ler.letras.up.pt/uploads/ficheiros/6082.pdf10Nov.2011

7.6 अंत्य इकाई अभ्यास

1. उद्देश्य के आधार पर साहित्य के प्रकार बताइये।
2. साहित्य का इस्तेमाल करते वक़्त एक शिक्षक के रूप में आपके अनुभव क्या रहे हैं?
3. क्या आप अपने विद्यार्थियों के लिए मूल पाठ्य सामग्री का इस्तेमाल को महत्त्व देंगे या संक्षिप्त रूप को?
4. विद्यार्थियों को उत्प्रेरित करने के लिए किस तरह की पूरक सामग्री का इस्तेमाल आप करेंगे?
5. कक्षा में साहित्य का इस्तेमाल करते वक़्त आप चारों कौशलों को कैसे शामिल करेंगे?
6. अनुरणात्मक शब्द से क्या तात्पर्य है? सोदाहरण स्पश्ट कीजिए।
7. कक्षाकक्ष में भाषा सिखाने के लिए आप साहित्य के विभिन्न रूपों का उपयोग कैसे करेंगे? कविता का उदाहरण देकर समझाइए।

टिप्पणी

8. प्राथमिक कक्षा के बच्चों के लिए कविता या कहानी चयन करते समय आप किन बातों का ध्यान रखेंगे?

9. भाषा–शिक्षण में साहित्य के इस्तेमाल के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर संक्षिप्त में चर्चा कीजिए।

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- अपनी कक्षा में एक पुस्तकालय कोना स्थापित कीजिए और पुस्तकालय के लिए चयनित पाठ्यसामग्री का पूरा विवरण– किताबों की संख्या, प्रासंगिकता, विधा आदि के आधार पर दीजिए।

टिप्पणी

इकाई 8 भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना

संरचना

8.0 परिचय

8.1 अधिगम उद्देश्य

8.2 योजना की जरूरत

8.3 पाठ/शिक्षण योजना क्या है?

8.4 पाठ/शिक्षण योजना के घटक

8.4.1 क्या पढ़ाना/सिखाना है?

8.4.2 किसको पढ़ाना/सिखाना है?

8.4.3 जो पढ़ाया गया, उसकी जाँच करना

8.4.4 कैसे पढ़ाएँगे/सिखाएँगे?

8.5 कितनी योजना बनाएँ?

8.6 मॉडल शिक्षण योजना– शिक्षण योजनाओं के उदाहरण

8.6.1 तूलिका की कक्षा

8.6.2 सतपुड़ा के घने जंगल

8.6.3 वर्ण सिखाना

8.6.4 राधा की कक्षा

8.6.5 कक्षा में कहानी का उपयोग

8.7 पोस्टर एवं विज्ञापन

8.8 पाठ–योजना कैसे बनाएँ?

8.9 सारांश

8.10 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.11 अंत्य इकाई अभ्यास

8.0 परिचय

जब हम बच्चों को पढ़ाने के बारे में सोचते हैं, तो इसके कई तरीके हो सकते हैं। इनमें से कुछ के बारे में हमने पहले की इकाइयों में पढ़ा है। इनमें गतिविधियों के माध्यम से बोर्ड

पर समझाना, बच्चों से पढ़वाना और पढ़े हुए का सारांश प्रस्तुत करवाना, सवाल हल करने को देना, सर्वे करवाना आदि शामिल है। इनमें अलग–अलग तरह के सिद्धान्त काम करते हैं। हमने यह महसूस किया कि कुछ शिक्षक बच्चों को याद करने में मदद के लिए उत्तर बताते हैं और उन्हें उसी तरह लिखने को कहते हैं। कुछ कक्षाओं में बच्चों को चीजों को खास तरीके से करने और शिक्षक के निर्देशों का उसी क्रम में पालन करने की उम्मीद की जाती है। दूसरी कुछ कक्षाओं में बच्चों को खुद समझने और तय करने के लिए बहुत कुछ होता है और यह उम्मीद की जाती है कि ये उनके ज्ञान और अनुभव के स्रोत होंगे। हमने यह भी महसूस किया कि बच्चे स्कूल से बाहर काफी कुछ सीखते हैं। इसमें ज्यादातर प्रकृति से और जैसा कि हम जानते हैं माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से सीखते हैं।

अगर बच्चे स्कूल के बाहर से काफी कुछ सीखते हैं, जो कि बहुत अनियोजित तरीके से होता है तो सवाल उठता है कि फिर हम योजना क्यों बनाते हैं? और स्कूल कार्यक्रम की योजना क्यों बनानी चाहिए? इसे स्पष्ट करना जरूरी है।

स्कूल व्यवस्थित पाठ्यचर्या के लिए एक जगह है जहाँ कई सारे बच्चे एक साथ सीखते हैं। तथ्य यह है कि हम एक लोकतांत्रिक गणतंत्र में रहते हैं जो एक साझी समझ की माँग करता है कि हम अपने समाज में बच्चों को कैसे विकसित कर सकते हैं। यह भी स्पष्ट होना जरूरी है कि उन्हें क्या सीखना चाहिए और इसके सबसे अच्छे तरीके कौनसे हैं जो उन्हें सीखने में मदद के साथ उनका आकलन भी करें। पाठ्यचर्या सीखने और विचारों को क्रम से व्यवस्थित करती है।

इसीलिए अब हमारा काम है कि हम कुछ प्रक्रियाओं का निर्माण करें और बताएँ कि हम किस तरह की गतिविधियों को कक्षा में करवाए जाने लायक मानते हैं। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि बच्चा पहले से ही बहुत कुछ सीख चुका है। इसीलिए योजना हमें कक्षा शिक्षण को बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ने और उन्होंने क्या सीखा है, यह समझने में मदद करती है।

इस इकाई में हम कुछ शिक्षण योजनाओं के उदाहरणों की चर्चा करेंगे और अपनी खुद की कुछ योजनाएँ विकसित करने की कोशिश करेंगे। यह महत्त्वपूर्ण है कि हम इन योजनाओं को अपने संदर्भ में देखें और बताएँ कि कक्षा शिक्षण प्रक्रिया कैसी रही।

8.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पाठ योजना के परम्परागत नजरिये को जान पाएँगे;
- शिक्षण योजना बनाने की जरूरत को समझ पाएँगे;
- शिक्षण योजना क्या है? क्यों हम शिक्षण–योजना की बात कर रहे हैं केवल पाठ

टिप्पणी

योजना की नहीं? इस बात को समझ पाएँगे;

- शिक्षण योजना के क्रियान्वयन का विश्लेषण कर संभव निष्कर्ष निकाल पाएँगे;
- योजना में लचीलेपन और एकाधिक संभावना की जरूरत को समझ पाएँगे;
- प्रभावी कक्षा शिक्षण योजना बना पाएँगे।

8.2 योजना की जरूरत

शिक्षण योजना की बात करने से पहले हमें दूसरों से और खुद से भी प्रश्न पूछने की जरूरत है कि पाठ–योजना की क्या जरूरत है। जैसा कि पिछली इकाइयों में हम कह चुके हैं कि लोग बच्चों को भाषा सिखाने की कोई विशेश योजना नहीं बनाते फिर भी बच्चे के दिमाग में भाषा सीखने की एक क्रमबद्ध योजना रहती है। कक्षा में किसी योजना की क्या जरूरत है? यह आम बात है कि कई बार अच्छे–से–अच्छे अध्यापक भी लिख–पढ़कर कोई व्यवस्थित योजना लेकर कक्षा में नहीं जाते। लेकिन उनकी विषय पर गहरी पकड़ होती है और वे बच्चों के सीखने के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। उनके अवचेतन में निश्चय ही कोई–न–कोई योजना होती है पर बच्चों के व्यवहार के अनुसार वे समय–समय पर उसे बदलते रहते हैं।

यह समझना जरूरी है कि कक्षा का औपचारिक शैक्षणिक माहौल बचपन में भाषा सीखने के अनौपचारिक माहौल से बहुत अलग होता है, सीखने–सिखाने के उद्देश्य भी बहुत अलग होते हैं। इसलिए विषय की पकड़ व बच्चों के प्रति संवेदनशीलता के साथ–साथ पढ़ने–पढ़ाने की एक योजना भी बनानी चाहिए।

पिछली इकाइयों में, हमने देखा कि बच्चा ऐसी अनेक गतिविधियों से जुड़ा रहता है जो उसके प्राकृतिक वातावरण में अन्तर्निहित होती है। बच्चे के आसपास जो प्रक्रियाएँ होती रहती हैं, वे उसे ज्ञान पैदा करने और अपने पर्यावरण से सीखने में मददगार होती हैं।

घरेलू वातावरण में बच्चे के जुड़ाव के स्तर और उसके मौकों की मात्रा को ध्यान में रखते हुए, हमने देखा कि घर में सीखने के मौकों (चाहे वयस्क द्वारा दिए गए या दूसरे अनुभवों द्वारा) का अनुपात स्कूल में मिलने वाले मौकों से ज्यादा होता है। घर में बच्चे को विभिन्न अनुभवों एवं मौकों के साथ–साथ अभिव्यक्ति की पर्याप्त आजादी और गलतियाँ करने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। जबकि स्कूल की स्थितियाँ अलग हैं। वहाँ बच्चों की संख्या वयस्कों से ज्यादा होती है और सभी बच्चों को इस तरह के मौके और अनुभव उपलब्ध नहीं करवाए जा सकते हैं। इसलिए सभी को इस तरह का अनुकूल एवं रुचि बढ़ाने वाला वातावरण उपलब्ध करवाना लगभग असंभव है। इसलिए एक ऐसी व्यवस्थित एवं नियोजित योजना की जरूरत है, जो विविध क्षमताओं एवं अनुभवों के साथ आने वाले भिन्न पृष्ठभूमि वाले सभी बच्चों की जरूरतों को पूरा कर सकें। साथ ही योजना इसलिए भी जरूरी है ताकि स्कूल को व्यवस्थित क्रमबद्ध सीखने के स्थान के रूप में विकसित किया जा सके।

पाठगत प्रश्न

1. घर में सीखने के मिलने वाले मौके, स्कूल में मिलने वाले मौकों के अनुपात में होते हैं–

   (क) कम (ख) ज्यादा

   (ग) बराबर (घ) अपर्याप्त

2. क्या आप उन तरीकों के बारे में सोच सकते हैं जिसमें जुड़कर बच्चा अपने ज्ञान का संसार रचता है। आप पिछली इकाइयों की मदद ले सकते हैं।

   .....

   .....

   .....

3. कक्षा में पाठ योजना की जरूरत क्यों है?

   .....

   .....

   .....

8.3 पाठ/शिक्षण योजना क्या है?

चलिए यह उदाहरण पढ़ते हैं–

महिमा को राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र 'कोटड़ा' के स्कूल में कक्षा 5 को हिन्दी पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया। कक्षा में 25 बच्चे थे। उसने एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक के पाठ 16 'जापान' को पढ़ाने की योजना बनाई। यह पाठ जापान की संस्कृति व त्योहारों के बारे में था।

उसने पढ़ना शुरू किया। जब वह पढ़ रही थी तब बच्चों ने अपनी उँगली पाठ पर रखी हुई थी, ज्यादातर बच्चों को पता ही नहीं था कि वह कहाँ पढ़ रही थी। दो पैराग्राफ पढ़ने के बाद वह रुकी और बच्चों को जापान देश के बारे में बताना शुरू किया। बच्चे बिना किसी भाव के उसका मुँह ताक रहे थे। थोड़ा परिचय देकर उसने वापस पढ़ना शुरू किया। बाकी सारे समय उसने यही किया। पूरे कालांश में वह अपनी कुर्सी पर बैठी रही। पीछे बैठे बच्चे उसी पाठ में दिए फूलदान का चित्र बना रहे थे, कुछ गुड़िया बना रहे थे।

पूरा पाठ पढ़ने के बाद उसने कठिन शब्दों को अर्थ के साथ बोर्ड पर लिख दिए। बच्चे बिना कुछ पूछे उस की नकल उतारने लगे। कक्षा छोड़ने से पहले महिमा ने कहा कि वह परसों पाठ का टेस्ट लेगी और सब बच्चों को सारे कठिन शब्द (स्पेलिंग) और उसका अर्थ याद करना है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. अगर आप महिमा की कक्षा को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर आँकना चाहें तो आप प्रत्येक बिन्दु को 10 में से कितने अंक देंगे और क्यों?
   - बच्चों की सक्रिय भागीदारी।
   - बाल केन्द्रित शिक्षा
   - पाठ को संदर्भ से जोड़ना
   - शिक्षक की (पाठ की) तैयारी
   - शिक्षक की विषय की समझ
   - बच्चों को खुद पढ़कर समझने के मौके

कुछ भी करने से पहले हमें उसकी एक क्रमवार योजना बनाने की जरूरत होती है। रोज सुबह जब हम उठते हैं तो एक रफ खाका बना लेते हैं कि आज हमें क्या–क्या करना है। इसी तरह खाना बनाने के लिए भी योजना बनानी होती है। जैसे हमें सुनिश्चित करना होता है कि सारी सामग्री व बर्तन उपलब्ध है। इसके लिए हमें विकल्प क्षमता की भी जरूरत है कि हम एक सामग्री या बर्तन की जगह दूसरी सामग्री या बर्तन का इस्तेमाल कर सकें।

इसी तरह जब एक शिक्षिका कक्षा में प्रवेश करती है तो उसे एक स्पष्ट रूपरेखा की जरूरत होती है कि वह क्या करवाना चाहती है और इसके लिए वह क्या करे। उसकी योजना बदल सकती या संशोधित हो सकती है, पर योजना जरूरी है। खाना बनाने या किसी दूसरे यांत्रिक उदाहरण के विपरीत कक्षा में विकल्प ज्यादा होने चाहिए और उससे भी ज्यादा जरूरी है, जो हो रहा है उसके अनुसार कदम उठाना। खाना बनाने में हम सामग्री को जानते हैं और निर्णय करना भी आसान है। साथ ही इसमें प्रयोग और नवाचार की काफी गुंजाइश है। तथापि कक्षा में बच्चों को जानना मुश्किल है क्योंकि वे लगातार आगे बढ़ते रहते हैं। एक क्षण के लिए अगर हम दोनों को देखें तो रसोई में योजना के लिए उस व्यंजन का ज्ञान, उसकी प्रक्रिया एवं सामग्री का ज्ञान होना चाहिए, जो हमें बनाना है तो फिर पाठ–योजना हमें कक्षा के बारे में क्या बताती है?

8.4 पाठ/शिक्षण योजना के घटक

रघु ने यह सूची बनाई कि पाठ–योजना हमें बताती है–

1. पाठ में हम क्या पढ़ाएँगे?
2. हमें किसे पढ़ाना है?
3 हम कैसे पढ़ाएँगे?

4. पढ़ाने में मदद के लिए क्या सामग्री चाहिए?

5. हम कैसे जानेंगे कि जो हमने पढ़ाया वो बच्चे समझ गए?

6. अगर योजनानुसार काम नहीं होता तो हम क्या तैयारी करेंगे?

आप कौनसे बिन्दुओं से सहमत हैं? इस सूची में कोई बिन्दु छूट गया है जिसे आप जोड़ना चाहेंगे?

यह एक मोटा अनुमान है कि हमारी पाठ योजना किस बारे में है, इसे थोड़ा और नज़दीक से देखते हैं।

8.4.1 क्या पढ़ाना/सिखाना है?

यह क्षेत्र पाठ्यचर्या निर्माताओं द्वारा तय किया जाता है और पाठ्यपुस्तक के रूप में हमारे सामने आता है। पाठ्यपुस्तक लिखते समय, पाठ का चयन बच्चे के सीखने के स्तर और क्रम को ध्यान में रखते हुए किया जाता है कि बच्चा अवधारणा को कैसे समझता है। पाठ सरल से कठिन के क्रम में रखे जाते हैं लेकिन एक शिक्षक के रूप में हम तय कर सकते हैं कि कौनसा पाठ पढ़ाना है। पाठ योजना हमें ये बताने में समर्थ होनी चाहिए कि आप क्या पढ़ाना चाहती हैं? और क्या आपकी कक्षा की परिस्थितियाँ आपको ये अनुमति देंगी? इसके लिए हमें यह पता करना होगा कि बच्चों ने अब तक क्या सीखा है, पिछली अन्तःक्रिया में उनके साथ क्या बातचीत की गई। इसके लिए हमें पाठ में शामिल अवधारणाओं को समझने, उन्हें क्रम से जमाने और अपने अगले कदम को चुनने में सक्षम होने की जरूरत है। साथ ही यह भी समझना होगा कि अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पाठ का कौनसा हिस्सा चुनें।

8.4.2 किसको पढ़ाना/सिखाना है?

पाठ–योजना बनाने के लिए हमें बच्चे की प्रकृति को समझने की जरूरत है। यह जानना कि कक्षा में आने से पहले बच्चा क्या जानता है और उसने यह कैसे सीखा है। यह हमें बच्चे की सीखने की क्षमता और योग्यता को समझने और अपनी पाठ योजना बच्चे के इर्द–गिर्द बुनने में मदद करता है। साथ ही हमें बच्चों के बैठने की व्यवस्था सहित स्कूल एवं कक्षा की पृष्ठभूमि को भी जानना जरूरी है।

इसके अलावा हमें कक्षा में बच्चों की संख्या व उनकी उम्र भी पता होनी चाहिए। उम्र की जानकारी हमें योजना, गतिविधि बनाने एवं इनकी क्रियान्विति के तरीके को व्यवस्थित करने में मदद करती है।

दूसरा, हमें इसकी भी थोड़ी बहुत समझ होनी चाहिए कि बच्चा विषय के बारे में क्या जानता है। बच्चे के विषय–ज्ञान को, उसकी सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, उनका खाना, कपड़ों, त्योहारों तथा घर में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा आदि को देखकर पहचाना जा सकता है। साथ ही यह भी पहचानना होता है कि हम अपनी पाठ–योजना में बच्चे की संस्कृति को कैसे शामिल कर सकते हैं।

टिप्पणी

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में भाषा की बहुत अहम भूमिका है, खासकर प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे की भाषा का कक्षा में उपयोग उनके संकोच को खत्म करने, उन्हें अतिरिक्त ज्ञान देने और कक्षा गतिविधियों में उनकी भागीदारी को अवसर और आजादी देने में मदद करता है।

8.4.3 जो पढ़ाया गया, उसकी जाँच करना

हमें, कक्षा में क्या हो रहा है, क्या बच्चे सहभागी हैं, क्या वे समझ रहे हैं, क्या वे अपने सीखने को लेकर सकारात्मक हैं, क्या हम आगे बढ़ सकते हैं या रुकने और भागीदार बच्चों को प्रोत्साहित करने की जरूरत है, के बारे में सचेत रहने की जरूरत है। हमें बच्चों के सीखने की सीमा और गति का आकलन करते हुए कक्षा को व्यवस्थित करने की जरूरत है। हो सकता है कि एक शिक्षक को लगे कि आज वह कक्षा में हर बच्चे को कई चीजों में संलग्न कर पाया है लेकिन असल में हो सकता है कि वह ऐसा ना कर पाया हो। हम कक्षा में अपनी योजना को पूरा करने की जल्दी नहीं कर सकते बल्कि हमें कक्षा में क्या हुआ इसका जायजा लेकर अपना अगला कदम तय करना होगा। इसीलिए बनाई गई योजना में काफी लचीलेपन की जरूरत है और हमें भी योजना के लचीलेपन की क्रियान्विति और वैकल्पिक विचारों के साथ तैयार रहना होगा।

8.4.4 कैसे पढ़ाएँगे / सिखाएँगे?

योजना बनाने के लिए यह जानना जरूरी है कि हमारी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया क्या होगी। जैसे क्या बच्चों को 5 या 10 के समूहों में बाँटे या छोटे समूह बनाए या फिर उन्हें वर्कशीट अकेले करने के लिए दें। हो सकता है किसी दिन शिक्षक ज्यादा समय अवधारणा के प्रस्तुतीकरण (बच्चों को बताने) में बिताए, क्योंकि वह मानता है कि यह उसका उस दिन का महत्त्वपूर्ण कदम है और अगला दिन अवधारणा पर बच्चों की आपसी चर्चा व प्रस्तुति में बीते आदि।

वहाँ अवधारणाओं के साथ बच्चों को जोड़ने के कई तरीके हो सकते हैं जो उन्हें सहजता से कुछ करने व समझने में मदद करें। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे कक्षा की गतिविधियों में भागीदार बनें और चर्चा प्रवाह के साथ आगे बढ़े। उसे पता होना चाहिए कि प्रमुख क्रम क्या है जिस पर चलना है। हालाँकि वहाँ कई संभावनाएँ एवं लचीले विकल्प हैं और कुछ हद तक यह क्रम बदल भी सकता है लेकिन उसकी योजना तो होनी ही चाहिए। उसे न केवल यह समझना जरूरी है कि कैसे उस दिन पूरी कक्षा में प्रवाह रहे बल्कि यह भी कि अगले कुछ दिनों तक यह प्रवाह (तारतम्यता) बनी रहे। हम तय नहीं कर सकते कि हमें किस दिन क्या करना जरूरी है बिना यह सोचे कि इससे पहले क्या संभव है और अगले कुछ दिनों में हम क्या करना चाहते हैं।

हमें उस सामग्री का भी ध्यान रखना होगा, जिसकी हमें जरूरत पड़ेगी। इसमें पाठ्यपुस्तक, कार्यपुस्तिका या वर्कशीट (जो हम काम लेना चाहते हैं) चार्ट, चित्र कार्ड आदि शामिल हो

टिप्पणी

सकते हैं। भाषा सामग्री को पहचानना भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह समझ में कुछ नया जोड़ने और टास्क बनाने में मुख्य भूमिका निभाती है। जैसे– शब्द कार्ड या अक्षर कार्ड की सामग्री के कई उपयोग हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चे को क्या पढ़ना है, यह तय किया जाता है–

   (क) शिक्षक द्वारा (ख) माता–पिता द्वारा

   (ग) बच्चे द्वारा (घ) पाठ्यचर्या निर्माताओं द्वारा

2. बच्चों की संख्या व उनकी उम्र के बारे में पता होना, हमें किस काम में मदद करता है।

   ....

   ....

   ....

3. योजना में लचीलेपन का क्या मतलब है?

   ....

   ....

   ....

4. प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भाषा का कक्षा में उपयोग क्यों करना चाहिए?

   ....

   ....

   ....

8.5 कितनी योजना बनाएँ?

योजना बनाना कक्षा प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह आपको यह तय करने में सक्षम बनाता है कि बच्चों के साथ बातचीत को कैसे आगे बढ़ाएँ ताकि उनकी सीखने में मदद की जा सके।

अक्सर शिक्षकों का जोर विस्तृत पाठ योजना बनाने और सालाना डायरी पूरी करने पर रहता है। इस तरह की बँधी–बँधाई पाठ योजना ऐसी कक्षाओं की ओर ले जाती है जहाँ शिक्षक बच्चों से तत्काल परिणाम की उम्मीद करते हैं। वहाँ बच्चों द्वारा अपने अनुभवों को

टिप्पणी

खुद के तरीकों से खोजने की कोई गुंजाइश नहीं होती है क्योंकि 'योग्यता' आधारित शिक्षण प्रक्रिया उसे शिक्षक या पाठ्यचर्या निर्माताओं द्वारा बताई गई दिशा में ही सोचने पर बाध्य करती है। बच्चे से शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी तरह से पालन करने की उम्मीद की जाती है। वहाँ शिक्षक जो उस दिन सिखाना चाहता है, वही सबको सीखना होता है। बच्चे के दिमाग में गतिविधि का कोई नया तरीका या बात आने पर भी कक्षा में उसकी कोई जगह नहीं होती क्योंकि बच्चे से इस तरह की कोई अपेक्षा नहीं की जाती और ना ही शिक्षक इसके लिए कोई योजना बनाता है।

जैसा कि हमने पहले भी बात की कि हर बच्चा अपने तरीके और गति से सीखता है। हमें यह सोचना होगा कि हम क्या योजना बनाएँ कि बच्ची कई चीजों को अपनी गति से और खुद खोजकर सीखे। यह पूरी प्रक्रिया उनके अनुभवों और शिक्षक द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों और उनके उत्तर खोजने पर आधारित होगी। इसके लिए जरूरी है कि बच्ची अपने विचारों, भावों और उलझनों को जैसे और जिसे चाहे बता पाए। इस प्रक्रिया में वह अपने वर्ग के भीतर ही विचारों के साथ और अपने ही अवधारणात्मक ढाँचे में काम करती है। इसमें सीखने में बच्चा और वयस्क दोनों शामिल होते हैं लेकिन पूरी बातचीत कुछ हद तक बच्ची के नियंत्रण में होती है। वह अपनी हद खुद निर्धारित करती है कि उसे कहाँ और किस दिशा में जाना है।

उपर्युक्त प्रक्रिया पर सहमति के बाद हमें सोचना होगा कि क्या योजना बनाई जाए, हमें कितनी योजना बनानी चाहिए और हम इसमें कितना लचीलापन रखें। यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि अगर हम इस तरीके से आगे बढ़ना चाहें तो आगे कैसे बढ़ें? हमें क्या कदम उठाने होंगे? अवधारणाओं की खोज एवं बच्चों की जिज्ञासा को लाने के लिए स्कूल कार्यक्रम में कैसे बच्चों के सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित अनौपचारिक माहौल को कक्षा में शामिल करें। हमें स्कूली शिक्षा के ढाँचे के सभी आयामों को ध्यान में रखकर 'सीखने के नतीजों' को परिभाषित करते हुए अन्तःक्रियात्मक कक्षा की योजना बनानी होगी। 'सीखने के नतीजे' और 'अन्तःक्रियात्मक कक्षा' सामान्य कक्षा अवधारणा के जैसी नहीं है। बच्चे की गति, पहल और नियंत्रण सीखने के तरीके के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं।

कक्षा में शिक्षक को काफी अनिश्चितता और अस्पष्टता से निपटना आना चाहिए। बच्चों के साथ बातचीत को लचीला और अपेक्षाकृत असंरचित होना होगा। कक्षा का पूरा वातावरण बच्चों के साथ गतिविधि करके बेहतर हो जाएगा। इसका यह भी मतलब है कि शिक्षक हर बच्चे के उत्तर को देखे और संवेदनशीलता के साथ उसका सम्मान करे। किसी उत्तर को काटने या गलत करने के बजाय देखने की कोशिश करे कि बच्चे ने हर प्रश्न में क्या किया है। वह यह देख सकता है कि बच्चे ने यह उत्तर देने के लिए किस तरह से ज्ञान का उपयोग किया है।

पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

   अक्सर शिक्षकों का जोर ..... बनाने और ..... पूरी करने पर रहता है।

2. यहाँ बच्चों के सीखने के बारे में किन प्रमुख बिन्दुओं का उल्लेख किया गया है?

   .....

   .....

   .....

3. अगर बच्चे कक्षा को संचालित कर रहे हों तो इससे योजना में क्या फर्क आएगा?

   .....

   .....

   .....

4. अपनी कक्षा में पढ़ाने से पहले आप किस तरह की तैयारी करेंगे?

   .....

   .....

   .....

8.6 मॉडल शिक्षण योजना–शिक्षण योजनाओं के उदाहरण

अब हम अलग–अलग तरह की एवं विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित कुछ शिक्षण योजनाओं को देखेंगे और उनका विश्लेषण करेंगे। ये योजनाएँ अलग–अलग संदर्भों में इस्तेमाल की जा रही हैं अतः देखें कि कैसे शिक्षक उन संदर्भों की मदद लेता है या अनदेखी करता है। हम यह भी देख सकते हैं कि कैसे शिक्षण में बच्चों को शामिल करने की संभावनाएँ बनाई गईं या नहीं बनाई गईं और किन शिक्षण उद्देश्यों को शामिल किया गया।

8.6.1 तूलिका की कक्षा

इस उदाहरण में कक्षा 2 के बच्चों के लिए शिक्षिका की शिक्षण योजना को देखें व विचार करें।

तूलिका बिहार के ग्रामीण इलाके के कल्याणपुर स्कूल में प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाती है। वहाँ एक ओर गाँव और दूसरी ओर जंगल है। कृषि वहाँ आजीविका का प्रमुख साधन है। कुछ बच्चों के अभिभावक शहर में मजदूरी, सुथारी, रिक्शा चलाना, सब्जी बेचना आदि काम

टिप्पणी

करते हैं और सप्ताह में एक बार घर आते हैं। घर में बच्चे अनेक काम जैसे– भाई–बहन की देखभाल, खाना पकाना, माँ की खेती में मदद करना आदि करते हैं। आधे बच्चों के अभिभावक कभी स्कूल नहीं गए और बाकी केवल कक्षा 5 या 8 तक ही पढ़े हैं। ज्यादातर घरों में कोई पत्रिका, किताबें या अखबार नहीं मिलता।

तूलिका कक्षा 2 के 30 बच्चों को हिन्दी पढ़ाती है। बच्चे घर में भोजपुरी बोलते हैं और स्कूल में हिन्दी सीखते हैं। पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ होती हैं और उसके बच्चे वर्णों की पहचान कुछ आसान शब्दों को पढ़ व लिख पाते हैं। हालाँकि वे वाक्य को पढ़ व समझ नहीं पाते। उसे बिहार की हिन्दी पाठ्यपुस्तक का दसवाँ पाठ 'सच्चा मित्र' पढ़ाना है।

तूलिका जानती है कि उसे बच्चों से हिन्दी के साथ भोजपुरी में बात करनी है तथा बच्चों द्वारा अपनी भाषा में बोलने पर उन्हें डाँटना या मना नहीं करना है। वह मानती है कि बच्चे एक–दूसरे से सीखते हैं इसलिए वह उन्हें समूह में काम भी करवा सकती है। साथ ही उसे बच्चों को अर्थपूर्ण संदर्भों के साथ कक्षा में पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने के मौके देने की जरूरत है।

'सच्चा मित्र' कहानी दो दोस्तों की है जिन्हें घर लौटते समय जंगल में भालू मिलता है। वह जानती है कि बच्चे काफी जानवरों के बारे में पहले से जानते हैं इसलिए उसने बच्चों से जानवरों के बारे में पूछकर, पाठ शुरु करना तय किया।

कक्षा में दाखिल होने से पहले उसने दो–तीन बार वह पाठ पढ़ा। उसे वह पाठ एक सप्ताह में पूरा करना था, हर दिन उसके पास 35 मिनट का एक कालांश था। उसने अपने उद्देश्य इस प्रकार रखें–

- चित्र बनाने के मौके देना।
- आपस में और टीचर से बात करने के मौके देना।
- चित्र पर चर्चा के मौके देना।
- समझ के साथ पढ़ने के मौके देना।
- जानवरों के नामों के लिखित रूप को समझने में बच्चों की मदद करना।
- बच्चों को कहानी के अंत का अनुमान लगाने के मौके देना।
- अपने आसपास और जंगली जानवरों के बारे में बात करना।

इस मोटे अनुमान पर उसने यह योजना बनाई।

पहला दिन– बच्चों को अपने आसपास मिलने वाले जानवरों के लिखित नामों से परिचित करवाना।

प्रक्रिया

1. बच्चों को उनके आसपास मिलने वाले जानवरों के नाम पूछना और उन्हें बोर्ड पर लिखना।
2. बच्चे जानवरों के नाम अपनी कॉपी में लिखें, अपने मनपसंद जानवर का चित्र बनाएँ और उसके नाम पर गोला लगाएँ।
3. बच्चों को बोर्ड पर लिखे जानवर का नाम पढ़कर उसकी आवाज निकालने का खेल खेलना।

दूसरा दिन– अनुमान लगाने के कौशल को विकसित करना।

प्रक्रिया

1. बच्चों को कहानी के तीन चित्रों का अवलोकन करके पूछना और जानना कि उन्होंने क्या देखा।
2. बच्चों से पूछना कि कहानी क्या होगी और उनकी कहानी की प्रशंसा करना।
3. आधी कहानी पढ़कर बच्चों को बाकी कहानी (अंत) का अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना।
4. बच्चों द्वारा अनुमान लगाए गए सारे अंतों को बोर्ड पर लिखना।

तीसरा दिन– पिछले अनुमानित अंतों को दोहराना और कहानी पूरी करना।

प्रक्रिया

1. पूरी कहानी पढ़ना, बच्चों के जाने–पहचाने शब्दों या कहानी में बार–बार आने वाले शब्दों को लिखना। जैसे– गाँव, भालू, फुटबॉल, मित्र, दादी, मुँह, नाक, मुर्दा, राम, श्याम आदि।
2. बच्चों को ये शब्द कॉपी में लिखने को कहना।
3. बच्चों को पहले पन्ने पर 'गाँव' और 'फुटबॉल' पर गोला लगाने को कहना और तीसरे पन्ने के आखिरी अनुच्छेद में 'मुँह', 'कान' और 'नाक' पर गोला लगाना।
4. 'भेड़िया आया' खेल खेलना।

चौथा दिन– कहानी के उस भाग को पढ़ना जिसमें पाठ से पहले दिए गए कठिन शब्द हों और बच्चों को उनके अर्थ का अंदाजा लगाने को कहना।

पाँचवा दिन– पाठ के पीछे दिए गए शब्द स्तर के अभ्यास करवाना।

छठा दिन – पाठ के पीछे दिए गए वाक्य स्तर के अभ्यास करवाना।

टिप्पणी

पहला दिन

तूलिका ने बच्चों को आसपास के जानवरों के बारे में पूछते हुए शुरुआत की। वह बोर्ड पर जानवरों के नाम बोलकर लिखने लगी। फिर उसने बच्चों से पूछा कि बोर्ड पर क्या लिखा है। बच्चे बोर्ड पर देखकर नाम दोहराने लगे। बच्चों ने पहले पालतू जानवरों से शुरू किया फिर उन्होंने जंगली जानवरों के नाम भी बताएँ।

सारे नाम लिखने के बाद उसने बच्चों के साथ एक खेल शुरू किया। उसने निर्देश दिया कि वह जिस जानवर का नाम पुकारे बच्चों को उसकी आवाज़ निकालनी है। इसके बाद उसने बोर्ड पर लिखे कुछ जानवरों के नाम पूछे। जब उसे लगा कि बच्चे जानवरों के नाम पहचान पा रहे हैं तो बच्चों से उसने ये नाम कॉपी में लिखने के लिए कहा। फिर अपने मनपसंद जानवर का चित्र बनाकर उसके नाम पर गोला लगाने के लिए कहा। सब बच्चों ने काम शुरू किया और तूलिका कक्षा में घूमते हुए बच्चों की ज़रूरत के अनुसार मदद करने लगी।

दूसरा दिन

आज तूलिका ने पाठ में दिए गए 3 चित्रों से शुरू किया। उसने कहा कि चित्र को ध्यान से देखो और बताओ कि उन्होंने चित्र में क्या देखा। बच्चों ने कहा, उन्होंने जंगल में दो लड़कों को खड़े देखा, एक भालू देखा, मेड़ पर लड़का देखा आदि। फिर उसने पूछा कि चित्र में लड़के क्या कर रहे हैं, भालू क्या कर रहा है आदि। चित्र के बारे में बात करके उसने बच्चों से उन पर कहानी बनाने को कहा पहले तो बच्चे झिझक रहे थे लेकिन बाद में उन्होंने अलग–अलग कहानियाँ सुनाईं। तूलिका ने सभी की कहानियों को सराहा।

फिर तूलिका ने कहा कि वह उनके लिए कहानी पढ़ेगी। फिर वह धीमी गति से तेज आवाज में कहानी पढ़ने लगी। उसने बच्चों को लिखे हुए पर उँगली रखने को कहा। लगभग आधे बच्चे उसके साथ धीरे–धीरे पढ़ रहे थे। कुछ नहीं पढ़ पा रहे थे लेकिन कहानी सुन रहे थे। तूलिका ने उन्हें ऐसे बच्चों के साथ बिठाया जो पढ़ पा रहे थे। जब दोनों मित्रों का भालू से सामना हुआ तो उसने पढ़ना बंद कर दिया। फिर उसने बच्चों से पूछा कि दोनों मित्र जंगल में अकेले थे, उनके पास कुछ भी नहीं था, फिर आगे क्या हुआ होगा।

बच्चों ने कई बातें सुझाईं। उसे बच्चे के नाम के साथ बोर्ड पर लिखा। फिर उसने उन्हें जोर से पढ़ा।

तीसरा दिन

आज तूलिका वापस शुरू से कहानी पढ़ने लगी और कल वाली जगह पर आकर वापस रुक गई। उसने बच्चों के पिछले दिन के अनुमानों को दोहराया फिर कहानी पढ़ने लगी। कहानी पूरी होते ही बच्चों से उसके पहलुओं (पहले मित्र का व्यवहार, उनकी दोस्ती का क्या हुआ, अगर तुम दूसरे मित्र की जगह होते तो क्या करते) पर बात करने लगी।

फिर उसने बोर्ड पर भालू लिखा और बच्चों को पाठ में 'भालू' शब्द को ढूँढ़कर उस पर गोला लगाने को कहा। फिर उसने पूछा कि पाठ में यह शब्द कितनी बार आया। फिर उसने 'गाँव' 'मुर्दा' आदि शब्द देकर बच्चों को उन पर गोला लगाने को कहा।

शब्दों की खोज के बाद 'भेड़िया आया' खेल शुरू हुआ। इसमें सभी बच्चों को मुर्दे/शव होने का नाटक करना था और एक बच्चे को भेड़िया बनकर उन पर हमला करना था। भेड़िये को मरे हुए लोगों को बिना छुए हिलाना था। जिन्हें मुर्दा बनना था उन्हें जमीन पर सीधे, आँखें बंद करके, बिना हिले–डुले, सपाट चेहरे के साथ लेटना था। अगर वे अपनी आँखें खोल दें या मुस्करा दें तो वे भेड़िए द्वारा मारे हुआ माने जाएँगे। अगर भेड़िया सारे बच्चों को मार दे तो पहले मरने वाले को भेड़िया बनना होगा। तब तूलिका ने वापस निर्देश दिए। फिर बच्चे जमीन पर लेट गए, हालाँकि अभी भी वे खिलखिलाने की वजह से हिल रहे थे। आधे बच्चे थोड़ी आँख खोलकर देख रहे थे। कुछ मुस्करा रहे थे इसलिए भेड़िए को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। 5–10 मिनट बाद बच्चे थोड़े कठोर और स्थिर हो गए थे। वे खेल को ज्यादा गंभीरता से खेलने लगे। अब अगर भेड़िया कमजोर होता तो उसे ज्यादा मेहनत करनी पड़ती। खेल चल रहा था। जैसे ही घंटी बजी उसने खेल खत्म कर दिया।

चौथा दिन

आज तूलिका ने पाठ के शुरू में दिए गए कठिन शब्दों को लिया और बच्चों को पाठ के दूसरे कठिन शब्दों पर गोला लगाने को कहा। जब बच्चे कठिन शब्द पर निशान लगाते तो वह उसे बोर्ड पर लिख देती। कुछ बच्चों को कुछ शब्दों के अर्थ पता थे उसने उन्हें दूसरे बच्चों को अर्थ समझाने को कहा। फिर उसने कठिन शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाने को प्रोत्साहित किया।

पाँचवा दिन

आज तूलिका ने पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास पर काम शुरू किया। इसमें दिए गए शब्दों में से वर्णों को उठाकर नए शब्द बनाने थे। इससे पहले उसने बच्चों से शब्द पूछे और बोर्ड पर 'कुर्सी' और 'किताब' लिखा। फिर 'कुर्सी' का 'सी' उठाया और किताब का 'ता' उसके पास लिखा और बच्चों को जोर से पढ़ने के लिए कहा। फिर दो–तीन बच्चों से बोर्ड पर यह अभ्यास करवाया और बाकी सब को उसे कॉपी में करने को कहा। कुछ बच्चों ने सबसे पहले इसे पूरा कर लिया। तूलिका उनके पास गई और अगला अभ्यास समझाने लगी। जिसमें उन्हें एक ग्रिड में से जानवरों के नाम खोजने थे, जिन्हें वे पहले से जानते थे। फिर तूलिका ने पूरी कक्षा को यह अभ्यास समझाया। यह मुश्किल अभ्यास था क्योंकि वर्ण किसी सार्थक क्रम से नहीं लगे थे। बच्चों को इन्हें क्रम से जमाना था। अन्त में उसने अभ्यास 6 को लिया। जिसमें पूरे वाक्य के लिए एक शब्द चुनना था। उसने वाक्य जोर से पढ़ा और उसका सबसे उपयुक्त शब्द पूछा। पूरा वाक्य सुनने के बाद बच्चे आसानी से शब्द लिख पा रहे थे। फिर तूलिका ने कुछ अधूरे वाक्य बोर्ड पर लिखे और बच्चों को उन्हें पूरा

टिप्पणी

करने को कहा। सभी बच्चे बोलकर वाक्य पूरे कर रहे थे। कुछ अपनी कॉपी में भी लिख रहे थे। कुछ देर बाद घंटी बजी।

छठा दिन

आज तूलिका ने वाक्य वाले अभ्यासों के साथ काम शुरू किया। पहले उसने प्रश्न–उत्तर करवाए। उसने बच्चों को मौखिक पूछना शुरू किया। बच्चे उसका उत्तर देते और जब सब बच्चों की किसी एक उत्तर पर सर्वसम्मति बन जाती तो वह बोर्ड पर लिख देती और बच्चे उसे कॉपी में उतार लेते। सारे प्रश्न–उत्तरों के साथ यही प्रक्रिया चली। वह कक्षा में घूमते हुए बच्चों की मदद भी कर रही थी।

फिर उसने अभ्यास 4 करवाया जिसमें शब्दों का वाक्य में प्रयोग करना था। उसने यह भी पहले मौखिक करवाया बच्चों को समझ ना आने पर उसने एक–दो उदाहरण दिए। वह कठिन शब्द बोर्ड पर लिखती जाती। फिर उसके प्रोत्साहन से बच्चों ने दूसरे शब्दों के भी वाक्य बनाए। बच्चे कठिन शब्दों की स्पेलिंग पूछते तो वह बोर्ड पर लिख देती। लगभग सभी बच्चे 5 शब्दों के वाक्य बना रहे थे। घंटी बजने पर उसने तीन शब्द गृहकार्य के लिए दिए और कक्षा छोड़ दी।

पाठगत प्रश्न

1. तूलिका की कक्षा में बच्चों की संख्या है–

   (क) 10 (ख) 20

   (ग) 30 (घ) 40

2. तूलिका जानवरों का चार्ट भी ले जा सकती थी, फिर उसने बच्चों से उनके नाम क्यों पूछे?

   .....

   .....

   .....

3. तूलिका ने अपनी तरफ से कोई जानवर क्यों नहीं जोड़ा?

   .....

   .....

   .....

4. अगर कहानी का अंत पहले से ही तय है तो फिर बच्चे से पूछने की क्या जरूरत है?

   .....

.....

.....

5. तूलिका ने आधी कहानी वापस क्यों दोहराई?

.....

.....

.....

6. आप तूलिका की जगह होते और कोई अभिभावक कहता कि यहाँ बच्चे कोई भाषा नहीं सीख रहे हैं क्योंकि आपने कोई लिखित काम नहीं दिया, तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होती?

.....

.....

.....

8.6.2 सतपुड़ा के घने जंगल

चलिए अब देखते हैं कि हिना ने एक कविता के लिए क्या शिक्षण योजना बनाई?

हिना मंगोलपुरी के स्कूल में कक्षा 5 के बच्चों को हिन्दी पढ़ाती है, जो भोपाल शहर की सीमा से सटा भीड़–भाड़ वाला इलाका है। लोग कच्चे घरों में रहते हैं। वहाँ जन सेवाओं जैसे पानी की निकासी, स्वच्छ पानी, अच्छी सड़कें और बिजली की कोई व्यवस्था नहीं थी। रोशनी का एकमात्र स्रोत गली में लगे सरकारी खम्बे थे। वहाँ के ज्यादातर लोग निरक्षर या अधिकतम पाँचवीं तक पढ़े थे और श्रमिक, रिक्शा चालक, कचरा बिनने या घरेलू नौकर के कामों से जुड़े थे। हिना की कक्षा में 25 बच्चे थे। उनकी भाषा हिन्दी थी जिसमें उर्दू, गोण्डी और मालवी के शब्द शामिल थे। इनमें काफी बच्चे पढ़ नहीं पाते थे। अगर पढ़ते तो भी हिज्जे (टुकड़े) करके जैसे सत–पुड़ा– के–घ– ने– जं– ग– ल करके पढ़ते थे।

सतपुड़ा के घने जंगल एक कविता है जो मध्यप्रदेश के घने जंगलों के बारे में है। हिना ने इसे 2–3 बार पढ़ा। उसने सतपुड़ा बताने के लिए मध्यप्रदेश का नक्शा भी इस्तेमाल किया। चार दिनों में यह कविता पढ़ाने के उद्देश्य निम्न थे–

- बच्चों को अपने जंगल के अनुभव बाँटने के मौके देना।
- बच्चों को चर्चा विधि से कविता समझने का मौका देना।
- बच्चों की कविता और भाषा में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहन देना।
- बच्चों को बोलकर व लिखकर खुद की अभिव्यक्ति का मौका देना।

टिप्पणी

उसके दिनवार उद्देश्य इस प्रकार थे–

पहला दिन

- जंगल के अनुभवों को बाँटना व चर्चा करना।
- विभिन्न तरीकों से बच्चों का सतपुड़ा से परिचय।
- आत्मविश्वास से कविता पढ़ना।
- कविता पर चर्चा द्वारा साझी समझ बनाना।
- जानवरों के नाम स्थानीय भाषा के साथ मानक भाषा में जानना।

दूसरा दिन

- संदर्भ से कठिन शब्दों के अर्थ समझना।
- कविता पर चर्चा द्वारा साझी समझ बनाना।
- संख्याओं से जुड़े संयुक्त अक्षरों के साथ काम करना।

तीसरा दिन

- चर्चा द्वारा कविता को समझना।
- बच्चों के संदर्भ को कक्षा में लाना।
- चर्चा द्वारा गतिविधि को पूरा करना।

चौथा दिन

- बच्चों की मदद से दी गई गतिविधि को पूरा करना।
- बच्चों को अपने उत्तर बनाने में मदद करना।
- तुकान्त शब्दों के साथ काम करना।

पहला दिन

हिना ने 'क्या आपमें से किसी ने जंगल देखा है?' प्रश्न से शुरुआत की। उसने बच्चों द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं को (स्थानीय भाषा की भी) बोर्ड पर लिखा, जिसमें जानवरों, पक्षियों के नाम भी शामिल थे। फिर उसने नक्शा निकाला और बच्चों को सतपुड़ा ढूँढ़ने के लिए कहा और बताया कि आज हम सतपुड़ा की कविता पढ़ेंगे। फिर उसने एक बच्चे से पूरी कविता

पढ़ाई फिर दूसरे बच्चे से कविता के तीन अंशों (चार लाइन के) को पढ़वाया। जंगली जानवरों की दिनचर्या के बारे में काफी चर्चा हुई।

दूसरा दिन

पिछले दिन की चर्चा के दोहरान से कक्षा शुरू हुई। फिर कविता के अगले तीन पद्य पढ़े गए और हर पद्य के बाद हिना ऐसे प्रश्न पूछती थी कि बच्चे कुछ चर्चा करें। कभी कठिन शब्द का अर्थ पूछ लेती। बच्चों के उत्तर ना देने पर उस शब्द का किसी वाक्य में प्रयोग कर मदद करती थी कि अर्थ समझ में आ जाए।

तीसरा दिन

कविता पढ़ने, चर्चा करने और समझने का पिछले दिनों का सिलसिला चलता रहा। उसकी कोशिश थी कि बच्चे कविता खुद पढ़ें, खुद चर्चा करे और अर्थ निकालें। वह उनकी मदद करने के साथ–साथ बीच–बीच में प्रश्न करती रहती। फिर उसने दो–तीन बच्चों से पूरी कविता पढ़वायी। और बोर्ड पर दो कॉलम बनाए एक पर 'मुझे जंगल अच्छा लगता है' और दूसरे पर 'मुझे जंगल अच्छा नहीं लगता है' लिखा। फिर उसने बच्चों को जंगल की अच्छी और बुरी चीजों के बारे में बताने को कहा और उनकी प्रतिक्रिया की सराहना करते हुए बोर्ड पर लिखने लगी। फिर उसने बच्चों को इस पर एक पैराग्राफ लिखने को कहा। बच्चे लिख रहे थे और वह कक्षा में घूमते हुए जरूरत के अनुसार मदद कर रही थी।

चौथा दिन

तीसरे दिन के सारे बिन्दु हिना ने वापस बोर्ड पर लिखे। फिर उसने कविता के पीछे के अभ्यास खोले और चर्चा करने लगी। ज्यादातर अभ्यासों पर कविता पढ़ने के दौरान ही बात हो चुकी थी इसलिए थोड़ी सी चर्चा के बाद बच्चे खुद से उत्तर लिखने में समर्थ हो गए। फिर उसने तुकान्त शब्द चुने और बच्चों को इनके समान शब्द ढूँढ़ने को कहा। बच्चे इस टास्क को नहीं समझे तो उसने श्यामपट्ट पर उदाहरण देकर उन्हें समझाया। हिना ने बच्चों के निरर्थक शब्दों को भी सराहा। फिर उसने बच्चों से एक पैराग्राफ लिखने को कहा कि अगर आपको एक दिन के लिए जंगल में अकेले रहना पड़े तो आप क्या करेंगे। बच्चे लिखने लगे और हिना कक्षा में घूम–घूमकर उनकी मदद कर रही थी।

पाठगत प्रश्न

1. हिना ने 'बच्चों की मदद से दी गई गतिविधि को पूरा करना' उद्देश्य किस दिन के लिए निर्धारित किया?

   (क) पहला दिन (ख) दूसरा दिन

   (ग) तीसरा दिन (घ) चौथा दिन

टिप्पणी

2. भाषा की कक्षा में नक्शा दिखने का क्या औचित्य है?

.....

.....

.....

3. पूरी कक्षा में हिना ने कहानी का अर्थ नहीं बताया। क्या वह एक अच्छी शिक्षिका है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

.....

.....

.....

4. बच्चों को इस तरह से विषय देकर पैरा लिखने को देना उनमें किन–किन क्षमताओं का विकास करता है।

.....

.....

.....

5. क्या बच्चों द्वारा प्रश्नों के उत्तर खुद देना ठीक है? अपनी राय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

8.6.3 वर्ण सिखाना

लोकेश दिल्ली के देवनगर के सरकारी स्कूल में कक्षा 1 को पढ़ाता है। उसका स्कूल शहर में है लेकिन वहाँ जो बच्चे आते हैं वे निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से हैं। ज्यादातर बच्चों के अभिभावक मजदूर हैं। उनके अपने घर नहीं है। वे वहीं रहते हैं जहाँ काम चल रहा होता है इसलिए जब तक काम चलता है तभी तक वे एक जगह पर रहते हैं। अक्सर वे काम की तलाश में एक शहर से दूसरे शहर में घूमते रहते हैं इसीलिए उनके बच्चे लम्बे समय तक एक स्कूल में नहीं जा पाते। वे कम से कम 3–4 महीने और ज्यादा से ज्यादा एक साल तक एक स्कूल में रह पाते हैं, और वे अक्सर स्कूल से छुट्टी भी लेते रहते हैं।

लोकेश की कक्षा में 15 बच्चे नामांकित हैं। 5 अन्य बच्चे उसकी कक्षा में हैं जो इन बच्चों के भाई–बहन हैं और अनामांकित हैं। इसलिए उसकी कक्षा में 1½ से लेकर 5–6 साल तक के 20 बच्चे हैं। हालाँकि ये छोटे बच्चे उसकी कक्षा का हिस्सा नहीं हैं पर फिर भी उसे

इनके साथ काम करना था। उसकी कक्षा में डेस्क या बेंच नहीं थी। बच्चे दरी पर बैठते थे और कुछ बच्चे टाट की बोरी बिछाने के लिए लेकर आते थे।

लोकेश को हिन्दी के वर्ण पढ़ाने थे। उसने पहले बच्चों से कक्षा की सारी चीज़ों के नाम पूछे थे। जैसे– पंखा, कुर्सी, कॉपी आदि। उसने बच्चों से चित्र बनवाकर उनके नीचे उसका नाम लिखने का भी अभ्यास किया था। अगले चार दिन के लिए उसके उद्देश्य थे–

- संदर्भ के साथ वर्ण सिखाना।
- कहानी सुनाकर, वर्ण की अवधारणा विकसित करना।
- बच्चों को अपने विचारों को बाँटने और अभिव्यक्त करने की जगह देना।
- उनका शब्द भण्डार बढ़ाना।

उसकी दिनवार योजना इस प्रकार है–

पहला दिन– 'र' का संदर्भ के साथ परिचय

दूसरा दिन– 'क' का संदर्भ के साथ परिचय।

तीसरा दिन– 'स' और 'ल' का संदर्भ के साथ परिचय, कविता को हाव–भाव से पढ़ना, कविता में से वर्णों को ढूँढ़कर उन पर गोला लगाना।

चौथा दिन– दोहरान, शब्दों में से वर्ण को पहचानना, बीच में आए वर्णों के हिसाब से शब्दों का वर्गीकरण

पहला दिन

लोकेश ने बच्चों के नाम पूछे और जिनके नाम में 'र' आता है उन्हें बोर्ड पर लिख दिया और बच्चों से 'र' पहचानने को कहा। फिर उसने बोर्ड पर एक डिब्बा बनाया और उसमें से 'र' वाली चीजें निकालने वाले जादूगर की कहानी हाव–भाव के साथ प्रस्तुत की। इस कहानी में एक जादूगर डिब्बे में से रुमाल, रिक्शा, रेडियो, कचरा जैसी 'र' नाम वाली चीज़ें निकालता है। इससे उसने कई सारी 'र' से शुरू होने वाली चीजों का बच्चों से परिचय करवाया और उन्हें बोर्ड पर लिखा। फिर बच्चों को 'र' वर्ण वाले कोई दो मनपसंद शब्द कॉपी में लिखने को कहा और घंटी बज गई।

दूसरा दिन

पिछले दिन के अक्षरों का दोहरान करने के बाद उसने बोर्ड पर 'क' का डिब्बा बनाया और बच्चों से पूछा इसमें से जादूगर क्या निकालेगा। तब बच्चों ने कई 'क' वाले शब्द बताए। उन सारे शब्दों को उसने बोर्ड पर लिख दिया। फिर एक ओर 'र' वाला डिब्बा बनाकर बच्चों को बुला–बुलाकर बोर्ड पर शब्द लिखवाए पर पूरी कक्षा में उसने बड़े धैर्य से काम लिया।

टिप्पणी

तीसरा दिन

लोकेश ने अपने उसी तरीके से 'स' और 'ल' वर्ण सिखाए। फिर उसने पाठ्यपुस्तक की ही दो कविताएँ बच्चों से बुलवाईं और कविता में से उन वर्णों को ढूँढ़कर गोला लगाने को कहा। बच्चे चारों वर्णों को एक साथ नहीं ढूँढ़ पा रहे थे तो उसने निर्देश बदलकर एक समय में एक वर्ण पर गोला लगवाया।

चौथा दिन

अब बच्चे चार वर्ण पहचानने लगे थे। लोकेश ने पिछले तीन दिनों में दोहराए गए सारे शब्द बोर्ड पर लिख दिए। बच्चों को कॉपी में चार डिब्बे बनाकर उन पर एक–एक वर्ण लिखने को कहा। फिर बोर्ड पर लिखे शब्दों को उनके वर्ण के अनुसार डिब्बों में लिखने के लिए कहा। श्यामपट्ट पर एक शब्द 'सलवार' भी लिखा था। इस शब्द को लेकर बच्चे असमंजस में थे कि यह कौनसे डिब्बे में आएगा। लोकेश ने उनसे बात की और बच्चों ने ही नतीजा निकाला कि यह शब्द तीनों डिब्बों में आना चाहिए। इस तरह बच्चे चारों वर्णों को लिख और पहचान पा रहे थे।

पाठगत प्रश्न

1. लोकेश ने चौथे दिन का क्या उद्देश्य तय किया?

   (क) 'स' सिखाना (ख) 'प' सिखाना

   (ग) 'च' सिखाना (घ) दोहरान करवाना

2. क्या आपको लगता है कि लोकेश का वर्ण सिखाने का तरीका अच्छा था? क्यों?

   .....

   .....

   .....

3. लोकेश ने 'सलवार' शब्द कौनसे डिब्बे में आएगा पर चर्चा क्यों की? वह सीधे उत्तर भी बता सकता था।

   .....

   .....

   .....

8.6.4 राधा की कक्षा

राधा राजस्थान के अटरू ब्लॉक में उच्च प्राथमिक कक्षाओं को अंग्रेजी पढ़ाती है जो कि गाँव और शहर का मिला–जुला इलाका है। जहाँ अधिकांश लोग खेती, किराना दुकान, ढाबा

टिप्पणी

और जूते की दुकान आदि काम करते हैं। स्कूल आने वाले बच्चे किसान परिवार के हैं। बच्चे बुवाई और कटाई के समय अभिभावकों की मदद के लिए चले जाते हैं इसलिए राष्ा की कक्षा में बच्चे मौसम के हिसाब से ड्राप आउट होते हैं।

राधा कक्षा 8 में 41 बच्चों को पढ़ाती है। वह अक्सर मौका मिलने पर कविताएँ करवाती है। पिछले दो दिन से बारिश हो रही है और वह एक कविता करवाना चाहती है, जिसके उद्देश्य निम्न हैं–

- कविता में बच्चों की सक्रिय भागीदारी।
- कविता का मानसिक चित्र बनाने में मदद करना।
- संदर्भ से उनकी भाषा का विकास करना।
- अंग्रेजी कविता पढ़ाने में बच्चों का आत्मविश्वास विकसित करना।

इन बड़े उद्देश्यों के साथ उसके विशिष्ट उद्देश्य ये हैं–

दिन–1

1. बारिश से जुड़े अनुभवों को साझा करना व उन पर चर्चा करना।
2. कविता को जोर से पढ़ना फिर उसमें हाव–भाव को भी शामिल करना।
3. चर्चा के जरिये कविता का अर्थ निकालना।
4. समूह कार्य द्वारा कठिन शब्दों के अर्थ ढूँढ़ना।

दिन–2

1. नक्शा बनाना और कविता के अनुसार नक्शे में विभिन्न चीज़ें दर्शाना।
2. संदर्भ के साथ पूर्वसर्ग पर काम।

दिन–3

विशेषण की समझ बनाना व कविता में विशेषण ढूँढ़ना।

दिन–4

अन्त में दिए गए अभ्यासों पर काम करना।

पहला दिन

राधा ने बच्चों के बारिश से जुड़े अनुभव बाँटने के लिए प्रोत्साहित करते हुए चर्चा कुछ सवालों से शुरू की। फिर एक खेल शुरू किया कि बारिश का नाम सोचते ही सबसे पहले दिमाग में क्या आता है। फिर एक बच्चे को ज़ोर से कविता पढ़ने के लिए बुलाया। उसने

टिप्पणी

बच्चों को हाव–भाव के साथ कविता पढ़ने को कहा। कविता में हाव–भाव जोड़ते समय बच्चों को कविता का अर्थ भी समझ आ रहा था।

दूसरा दिन

राधा ने बच्चों से उनके गाँव का नक्शा बनाने को कहा। बच्चों की मुश्किल देखकर उसने निर्देश बदल दिया और उन्हें घर से स्कूल के रास्तों का नक्शा **Land Marks** के साथ बनाने को कहा जो कविता में दिए गए थे। फिर राधा ने बच्चों को एक बड़ी झोंपड़ी और पेड़ का चित्र बनाने को कहा और बोर्ड पर **under, 'in' 'out** आदि स्थान लिख दिए। झोंपड़ी और पेड की मदद से वह बच्चों को **preposition** के बारे में बताने लगी। फिर बच्चों को अंग्रेजी में निर्देश दिए, जैसे **draw a doll under the tree** और कक्षा में घूमते हुए बच्चों का काम देखने लगी।

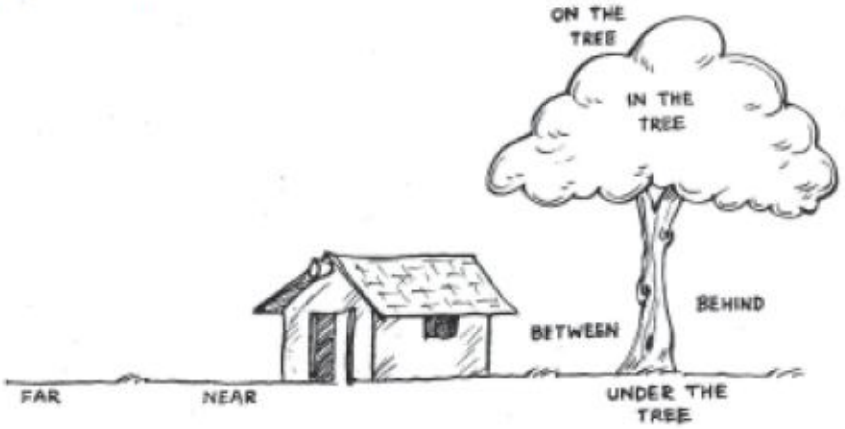

बच्चों को **around** और **behind** समझने में मुश्किल हो रही थी। राधा ने अन्य उदाहरणों से उनकी मदद की। इस प्रकार कालांश पूरा हुआ।

तीसरा दिन

राधा ने बच्चों से कविता पढ़ाई और कुछ प्रश्नों द्वारा चीज़ों का विवरण देने के लिए कहा। जैसे– **how was leaves?** फिर उसने बोर्ड पर **garden** लिखा और उसका विवरण देने के लिए कहा बच्चों ने उसमें **green, huge, big** विशेषण जोड़े। फिर राधा ने कविता में विशेषणों पर गोला लगाने को कहा। कुछ वाक्य दिए जिन में विशेषणों का प्रयोग करना था। उस प्रकार बच्चे चीजों का मानसिक चित्र बना पा रहे थे।

चौथा दिन

आज राधा अभ्यास करवा रही थी। वह प्रश्न जोर से पढ़ती, अगर बच्चों को प्रश्न समझ नहीं आता तो उसे हिन्दी या स्थानीय भाषा में बताती और उनका उत्तर पूछती। बच्चों के उत्तरों को बोर्ड पर लिखती। उसने बच्चों द्वारा हिन्दी या स्थानीय भाषा में दिए उत्तरों को भी बोर्ड पर लिखा। फिर पूरी कक्षा ने चर्चा करते हुए उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। फिर सबने बोर्ड पर लिखे उत्तरों को कॉपी में उतारा।

पाठगत प्रश्न

1. राधा कौनसा विषय पढ़ाती थी?

   (क) हिन्दी (ख) अंग्रेजी

   (ग) विज्ञान (घ) गणित

2. आखिरी दिन राधा ने बच्चों को उत्तरों की नकल करने दी। क्या इससे उन्होंने भाषा सीखी? कैसे?

   .....

   .....

   .....

3. यदि इस तरह की कविता आपको कक्षा तीन में करवानी हो तो, योजना बनाइए।

   .....

   .....

   .....

8.6.5 कक्षा में कहानी का उपयोग

कौशल फरीदाबाद (हरियाणा) के बाहरी इलाके में स्थित एक प्राथमिक स्कूल में कक्षा 5 को अंग्रेजी पढ़ाता है। उसकी कक्षा में 25 बच्चे हैं जो निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हैं। ज्यादातर बच्चों के अभिभावक दिहाड़ी (दैनिक) मजदूरी और गली–मुहल्लों में मौसमी चीज़े बेचने (फेरी लगाने) का काम करते हैं। इसी कारण ज्यादातर बच्चों पर घर और भाई–बहनों की पूरी जिम्मेदारी होती है।

आज कौशल ने हरियाणा पाठ्यपुस्तक का 9वाँ पाठ पढाने की योजना बनाई। पाठ एक लड़के नरेन्द्र के बचपन के बारे में था जो बड़ा होकर महान् व्यक्ति बना। कौशल ने कक्षा में जाने से पहले पाठ पढ़ लिया था।

पहला दिन

कौशल ने बच्चों को उनके बचपन के अनुभवों के बारे में पूछकर बात शुरू की कि वे किस तरह की शरारतें करते थे, उन्हें कैसी सजा मिलती थी आदि। बच्चों की झिझक दूर करने के लिए उसने अपना अनुभव सुनाया। फिर सब बच्चों ने भी अपने अनुभव बाँटे। फिर कौशल ने पाठ पढ़ना शुरू किया क्योंकि उसकी कक्षा में ज्यादातर बच्चे अंग्रेजी पढ़कर समझ नहीं पाते थे और जो पढ़ पाते थे वे एक साथ दो या तीन शब्दों का अर्थ ही समझ पाते थे। उसने हाव–भाव और उतार–चढ़ाव के साथ कहानी पढ़ी। कौशल बीच–बीच में

टिप्पणी

स्थानीय भाषा का भी प्रयोग कर रहे थे। कौशल ने तीन गद्यांश पढ़े जो कि नरेन्द्र के बचपन के बारे में थे। फिर बच्चों से 'नरेन्द्र कैसा था' प्रश्न किया और बच्चों को वापस गद्यांश पढ़ने के लिए कहा। बच्चे उसके बारे में बताने लगे, कौशल बीच–बीच में प्रश्न करके उनकी चर्चा को आगे बढ़ा रहा था। चर्चा के बाद उसने बोर्ड पर इस प्रकार एक प्रश्नावली बनाई–

नाम .....

उम्र .....

माता का नाम .....

माता क्या काम करती है? .....

पिता का नाम .....

पिता क्या काम करते हैं? .....

क्या पसंद है .....

क्या पसंद नहीं है? .....

पहले कौशल ने बच्चों को नरेंद्र के बारे में ये सारी बातें पाठ में से ढूँढ़ने को कहीं। बच्चों को नरेंद्र के बारे में जानकारी ढूँढ़कर व्यवस्थित रूप से लिखने में दिक्कत हो रही थी। तब कौशल ने बच्चों को अपने साथी से बात करके उनके बारे में जानने और यही प्रश्नावली भरने के लिए कहा। लड़के और लड़कियाँ पहले आपस में बात करने में हिचक रहे थे। मगर बाद में उन्होंने बात करना शुरू कर दिया।

दूसरा दिन

कौशल ने पिछले दिन की गतिविधि के बारे में बात शुरू की। फिर उसने स्थानीय शब्दों का इस्तेमाल करते हुए पूरी कहानी पढ़ी। लेकिन साथ ही कुछ मुश्किल अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल भी किया। कहानी सुनाने के बाद बच्चों को चार समूहों में बाँट दिया और उन्हें नरेन्द्र के जीवन की घटनाओं को क्रम से जमाकर लिखने के लिए कहा। साथ ही बच्चों को बात करने और अपनी भाषा में लिखने की आज़ादी भी दी। बच्चों की चर्चा के कारण कक्षा में शोर हो रहा था। कौशल उनकी मदद के लिए कक्षा में घूमते हुए बीच–बीच में उन्हें ध ीरे बोलने को कह रहा था। इस तरह से कालांश समाप्त हुआ।

तीसरा दिन

बच्चों के समूह का प्रस्तुतीकरण हुआ। कौशल ने हर समूह को एक नम्बर दिया और चिट डाल कर पहले प्रस्तुतीकरण का निर्णय किया और इस समय समूह के हर बच्चे को एक बात जोड़ने का निर्देश दिया। इससे निकले बिन्दुओं को बोर्ड पर लिख दिया और चर्चा के लिए कहा।

टिप्पणी

चौथा दिन

कौशल ने बच्चों के साथ चर्चा करते हुए पाठ के पीछे के प्रश्नों के उत्तर बच्चों से ही ढूँढ़वाए। जैसे–जैसे बच्चे उत्तर दे रहे थे, कौशल उन्हें श्यामपट्ट पर लिखता जा रहा था। इसी तरह उन्होंने अभ्यास के सारे प्रश्न पूरे किए।

पाठगत प्रश्न

1. दूसरे दिन कौशल ने किन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए पूरी कहानी पढ़ी?

   (क) स्थानीय भाषा के शब्द (ख) अंग्रेजी के शब्द

   (ग) उर्दू के शब्द (घ) हिन्दी के शब्द

2. कौशल ने बच्चों को नरेंद्र के बारे में लिखने से रोककर एक–दूसरे के बारे में लिखने के लिए क्यों कहा?

   ....

   ....

   ....

3. कौशल ने बच्चों को समूहों में क्यों बाँटा?

   ....

   ....

   ....

4. बच्चों को समूह में काम करना उसके सीखने में कैसे मददगार है?

   ....

   ....

   ....

5. कौशल की कक्षा पूरी तरह शान्त नहीं थी वहाँ काफी चर्चा और शोर था। क्या आपको लगता है कि ऐसी चर्चा अच्छी होती है? और इस तरह का वातावरण कैसे गम्भीरता से सीखने को प्रभावित करता है?

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

6. 'पाठ योजना' से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

8.7 पोस्टर एवं विज्ञापन

भाषाई क्षमता के विकास में पोस्टर एवं विज्ञापन काफी उपयोगी है। ये हमारे आसपास की लिखित सामग्री को बड़े सरल एवं रोचक तरीके से पेश करते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ये शिक्षक और बच्चों दोनों के संदर्भ से जुड़े हैं इसलिए बहुत आम हैं परन्तु अब तक इसे औपचारिक सामग्री नहीं समझा जाता। हम स्कूलों, दुकानों, ऑफिसों, बाजारों में कई तरह के साइन बोर्ड, पोस्टर, विज्ञापन देख सकते हैं। हमें इसके लिए विशेष प्रयास नहीं करने होते। ये इस सोच के साथ बनाए जाते हैं कि सबसे निम्न स्तर की क्षमता यानी संदर्भ से नहीं समझ पाने वाले व्यक्ति को भी समझ आ जाए। ये पढ़ने की क्षमता में विकास के अलावा दूसरी भाषा के विकास की संभावनाओं को भी बढ़ा देते हैं।

इसके उपयोग के कई तरीके हो सकते हैं। आप बच्चों को एक पोस्टर, साइन बोर्ड या किसी विज्ञापन के लिए रोचक और आकर्षक लिखित सामग्री तैयार करने के लिए कह सकते हैं। हमें पोस्टर की सामान्य जानकारी पढ़ने के साथ उस चित्र और लिखित सामग्री का विश्लेषण भी करने की जरूरत होती है।

शुरुआती कक्षाओं में, जैसे कक्षा 3 में बच्चे पोस्टर में प्रयुक्त शब्दों की सूची बना सकते हैं। साइन बोर्ड पर लिखी सामग्री को देखकर पूछ सकते हैं कि इसका उद्देश्य क्या है और यह क्या कहना चाहता है। वे बता सकते हैं कि इससे उन्हें कौनसी बात समझ में आई। उन्हें उस संदेश को अलग तरीके से लिखने को भी कह सकते हैं।

पोस्टर/साइन बोर्ड बनाना

कक्षा 2 या इससे बड़ी कक्षाओं में बच्चों को उनकी पसंद की चीज़ों, जगहों और उत्पादों के बारे में बात करने और विज्ञापन बनाने के लिए कह सकते हैं। इसमें उनके भाषा के इस्तेमाल की काफी सारी संभावनाएँ और सीमाएँ हो सकती हैं। इसलिए इसे कक्षा 1 में भी करवाया जा सकता है। वे इसे केवल चित्रों एवं आकृतियों के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. पोस्टर एवं विज्ञापन हमारे आसपास की लिखित सामग्री को किस जरीके से पेश करते हैं?

   (क) कठिन (ख) आकर्शणहीन

   (ग) सरल एवं रोचक (घ) नीरस

2. अपने आसपास के दिखने वाले 20 अलग–अलग पोस्टरों या साइन बोर्ड की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

3. कक्षा 5 में हम किस तरह का पोस्टर देंगे? इसमें दी जा सकने वाली कोई 5 अभ्यासों की सूची बनाइए।

4. आपके हिसाब से भाषा सीखने में ये तरीका कितना फायदेमंद है? क्या पोस्टर एवं विज्ञापन का कोई और भी उपयोग हो सकता है?

.....

.....

.....

5. कक्षा 1 व 2 के लिए कुछ विज्ञापनों का उपयोग करते हुए पाठ योजना बनाइए और फिर उन्हीं उद्देश्यों को कक्षा 4 के हिसाब से विकसित करते हुए दूसरी शिक्षण योजना बनाइए।

.....

.....

.....

8.8 पाठ–योजना कैसे बनाएँ?

कक्षा में दो मुख्य किरदार होते हैं– शिक्षक और बच्चे। दोनों ही ज्ञान का सृजन एवं ग्रहण करने वाले होते हैं। कक्षा में इन दोनों के अलावा और भी घटक होते हैं जो अपनी–अपनी भूमिका निभाते हैं जैसे– पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, परीक्षा, बच्चे के अनुभव, अभिभावकों की अपेक्षाएँ आदि। शिक्षण योजना बनाते समय इन घटकों को ध्यान में रखना जरूरी है। योजना में कठोरता व लचीलेपन का सामंजस्य होना चाहिए। कठोरता शिक्षक को पाठ योजना के उद्देश्यों पर बने रहने पर जोर देती है जबकि लचीलापन उसे वर्तमान कक्षा की जरूरतों और सुझावों को शिक्षण में शामिल करने की बात करता है। यदि समय रहते अपने फोकस पर ध्यान न दिया जाए तो कक्षा अफरातफरी में बदल सकती है।

इसलिए शिक्षक को अपने दिमाग में एक स्पश्ट उद्देश्य रखना होगा जो उसे अपनी गतिविधियों को बदल देने पर भी हमेशा आगे बढ़ने की दिशा दिखाएगा। अपने उद्देश्यों पर ज्यादा फोकस करने के लिए फायदेमंद होगा कि शिक्षक कुछ चीज़ों को लिख ले जो

टिप्पणी

उन्हें उनकी योजना के सफल क्रियान्वयन में मददगार साबित होगी। आइए देखते हैं कि पाठ–योजना बनाते समय हमें उसमें कितनी बातें, किस विस्तार के साथ शामिल करनी चाहिए–

1. कक्षा अवधि– आपके पास पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए कितनी समयावधि (प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, प्रति वर्श) है। कक्षा में अपनी एक दिन की समयावधि का ज्ञान आपको थोड़े समय में प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्यों को निर्धारित करने में मदद करेगा। जबकि पूरे वर्श की समयावधि का ज्ञान आपको अपने मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ एवं योजना बनाने में सहायक होगा।
2. कक्षा में बच्चों की संख्या एवं उनकी उम्र
3. शीर्षक
4. पूर्व ज्ञान– पूर्व ज्ञान का मुद्दा इससे संबंधित है कि आप क्या पढ़ाने जा रहे हैं, इसके लिए कौनसी उप–अवधारणाएँ बच्चों को आनी चाहिए। जैसे कक्षा 3 के बच्चों को कोई भी पाठ पढ़ाने के लिए हर बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे अंग्रेजी के सभी वर्णों की लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति आती हो, क्योंकि इसके बिना शिक्षक आगे नहीं बढ़ सकता और अगर शिक्षक को लगता है कि बच्चा उस स्तर का नहीं है तो शिक्षक को अपनी योजना को उस हिसाब से संशोधित करना होगा ताकि बच्चे अपने न्यूनतम स्तर को प्राप्त कर कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सके।
5. सामान्य उद्देश्य– ये वे उद्देश्य हैं जो आप पाठ के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं।
6. विशिष्ट उद्देश्य– ये वे उद्देश्य हैं जो एक दिन की कक्षा शिक्षण से जुड़े होते हैं।
7. प्रक्रिया– प्रक्रिया का संबंध इस बात से है कि आप कक्षा में आगे कैसे बढ़ेंगे। यह वह क्षेत्र है जहाँ हम पूरी तरह स्वतंत्र हैं और योजना को लचीला बनाने की पूरी गुंजाइश है। परन्तु उद्देश्य छूटना नहीं चाहिए।
8. स्व–मूल्यांकन– इस हिस्से को खाली छोड़ना चाहिए। यह कक्षा के बाद शिक्षक द्वारा भरा जाना चाहिए। जिसमें शिक्षक मूल्यांकन कर सके कि कक्षा में जो हुआ उसमें क्या नियोजित था और क्या नियोजित नहीं था और क्या गलत हुआ। यह आपको यह आँकने में मदद करेगा कि आपको योजना क्यों बदलने की जरूरत है।
9. सुझाव– यह हिस्सा आपको अपने अनुभव लिखने और उसके अनुसार कक्षा में गतिविधि करने में मदद करेगा। यह आपको उस दिन की कक्षा के अनुभवों के आलोक में अगले दिन की योजना का पुनर्निरीक्षण करने में मदद करता है।

पाठगत प्रश्न

1. पाठ योजना बनाते समय कितनी बातों/चीजों का ध्यान रखना चाहिए?

   (क) चार (ख) पाँच

   (ग) नौ (घ) बारह

2. स्व–मूल्याकंन किसे कहते हैं?

   .....

   .....

   .....

3. सामान्य उद्देश्य और विशिष्ट उद्देश्य में क्या अंतर है?

   .....

   .....

   .....

4. पाठ–योजना बनाने में किन–किन बातों को शामिल करना जरूरी है?

   .....

   .....

   .....

इस पूरी इकाई को पढ़ने व विभिन्न मॉडल शिक्षण–योजनाओं को देखने के बाद आपको यह स्पश्ट हो जाना चाहिए कि महिमा को 'कोटड़ा' के स्कूल में कक्षा 5 को 'जापान' नामक पाठ पढ़ाने की योजना कैसे बनानी चाहिए थी। उदाहरण के लिए पाठ शुरू करने से पहले महिमा को बच्चों से पूछना चाहिए था कि क्या कोई बच्चा जापान के बारे में कुछ जानता है। फिर जापान की संस्कृति व त्योहारों के बारे में कुछ बातचीत की जा सकती थी। दुनिया के एक नक्शे पर जापान व उसकी राजधानी टोक्यों के बारे में बातचीत करने से भी बच्चों को मदद मिलती। वहाँ के रीति–रिवाज, वेशभूशा, खान–पान व इकेबाना (फूलों को खास तरह से सजाना) जैसे पक्षों पर बातचीत करने से उनके सामने जापान की एक सार्थक छवि उभरती। इसके बाद पाठ में दिए गए चित्रों पर चर्चा हो सकती थी और कठिन शब्दों के अर्थ और प्रयोग का अभ्यास हो सकता था। प्रयास यह होना चाहिए कि बच्चे मिलकर एक के बाद एक पाठ के अशों को पढ़े व समझे। हर अशं पढ़ने के बाद अंशगत प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसी प्रकार मूल्यांकन के लिए पाठांत प्रश्नों की तैयारी भी महिमा को करनी चाहिए थी। प्रोजेक्ट व पोर्टफोलियों के अंतर्गत (देखिए इकाई 10) बच्चों को जापान के अलग–अलग पक्षों के बारे में सामग्री एकत्रित करने के लिए कहा जा सकता है। अन्ततः कक्षा में जापान के बारे में एक प्रदर्शनी आयोजित की जा सकती है।

टिप्पणी

8.9 सारांश

- पाठ योजना हमें कक्षा में व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ने में मदद करती है।
- पाठ योजना बनाने के लिए हमें बच्चे की प्रकृति, विषय की प्रकृति और कक्षा की परिस्थितियों को समझने की जरूरत है।
- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे की भाषा का निःसंकोच उपयोग करने की जरूरत है।
- पाठ योजना में लचीलापन होना चाहिए जो कि विषय से भटके बिना कक्षा की वर्तमान परिस्थिति और बच्चों के विचार को अपने साथ संलग्न कर सके।
- एक पाठ योजना से बच्चा वही सीखे जो आप सिखाना चाहते हैं, ये जरूरी नहीं है। बच्चे की अपनी सोच प्रक्रिया को सक्रिय करना पाठ योजना का एक जरूरी हिस्सा होना चाहिए।
- शिक्षक बच्चे के हर उत्तर को काटने या गलत करने के बजाय देखने की कोशिश करे कि बच्चे ने हर प्रश्न में क्या किया है।
- कक्षा में आने से पहले शिक्षक अगर पाठ को अच्छी तरह से दो–तीन बार पढ़ ले तो कक्षा में पाठ से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ कराने में शिक्षक को कोई परेशानी नहीं होगी।
- कोई भी शिक्षण योजना बनाने से पहले एक शिक्षक को विषय की जानकारी के अलावा इन बातों पर ध्यान देना जरूरी है– कक्षा में कितने बच्चे है?, बच्चों की उम्र क्या है?, वे कक्षा में क्या ज्ञान का भंडार लेकर आए हैं? आदि।

8.10 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

हिन्दी भाग–2, (2000) पटना : बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

English Book-5, (2004) Panchkula: Haryana Govt. Text Book Press

8.11 अंत्य इकाई अभ्यास

1. अब तक की सारी शिक्षण योजनाओं में आपने किन बातों को समान पाया? निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर उत्तर दीजिए।

   (क) शिक्षक का व्यवहार (ख) बच्चों की भागीदारी

   (ग) विषय पर काम (घ) प्रश्न उत्तर हल करने तरीका

टिप्पणी

2. महिमा की कक्षा और बाकी कक्षाओं में मुख्यतः क्या–क्या अंतर हैं?
3. किसी भी कक्षा में पढ़ाने से पहले कक्षा से संबंधित क्या–क्या जानकारी इकट्ठी करना जरूरी है और क्यों? इससे पाठ बनाने की प्रक्रिया में क्या फर्क पढ़ेगा?
4. अगर महिमा की जगह आपको 'जापान' पाठ पढ़ाना होता तो आप वह पाठ कैसे पढ़ाते? एक योजना तैयार करके लिखिए।

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- एक कविता पाठ, एक कहानी पाठ और एक नाटक पाठ पर शिक्षण योजना बनाकर बच्चों को पढ़ाइए तथा अपने अनुभव लिखिए।

टिप्पणी

इकाई 9 शैक्षिक सामग्रीः कुछ नये आयाम

संरचना

9.0 परिचय

9.1 अधिगम उद्देश्य

9.2 शिक्षा के लिए बुनियादी सामग्री

9.3 शैक्षिक सामग्री क्यों?

9.4 टीएलएम बनाम टीचिंग एड

9.4.1 मॉडल व प्रदर्शन सामग्री

9.4.2 टीएलएम कैसे मदद करता है?

9.5 अच्छी शैक्षिक सामग्री क्या है?

9.6 एक ही सामग्री से क्या–क्या कर सकते हैं?

9.6.1 भाषा सिखाने में कार्ड का उपयोग

9.7 भाषा शिक्षण में सामग्री व सीखने की समझ

9.8 भाषा की कक्षा के लिए सामग्री कौन–कौनसी?

9.9 सामग्री की उपलब्धता

9.10 सामग्री का उपयोग कैसे करें?

9.11 सामग्री चुनने के आधार

9.12 सारांश

9.13 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.14 अंत्य इकाई अभ्यास

9.0 परिचय

यदि आप शैक्षिक सामग्री के संदर्भ में सोचें, तो वास्तव में अपने आसपास की किसी भी वस्तु का हम कई तरह से शिक्षा में उपयोग कर सकते हैं। एक मायने में तो स्कूल, कक्षा–कक्ष व मैदान आदि भी शैक्षिक सामग्री हैं और पत्थर, पत्ती, धूल, कंकड आदि भी। पिछले कुछ

टिप्पणी

समय में सामग्री का स्वरूप ज्यादा तकनीकी व ज्यादा उलझा हुआ होता जा रहा है। यह भ्रम भी होने लगा है कि साम्रगी वही है, जो इलैक्ट्रॉनिक हो अथवा महँगी हो। आईटी (Information Technology) के आने से कम्प्यूटर, इन्टरनेट, वेबसाईट, नेटवर्क जैसे कई शब्द हमारे इर्द–गिर्द घूमने लगे हैं। एक समय था जब शिक्षा में रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकार्डर आदि यंत्र सबसे उम्दा शैक्षिक सामग्री माने जाते थे। इससे भी पहले चार्ट, पोस्टर, फ्लैश कार्ड आदि का बोलबाला था। किंतु अब इनका महत्त्व और ज़ोर कम हो गया है। यह बात अलग है कि स्कूलों में, कभी भी इनका ठीक से पहुँचना नहीं हो पाया था।

हाल के वर्षों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया की समझ में और बच्चे की क्षमता व रूचि के संदर्भ में, जो नयी बातें मानी जाने लगी हैं, उससे शैक्षिक सामग्री के अर्थ, उपयोग व उसके सम्भावित स्वरूप को खंगालने की आवश्यकता महसूस होने लगी है।

यह बात स्पष्ट होने लगी है कि शैक्षिक सामग्री को कई ढंग से वर्गीकृत किया जा सकता है। एक वर्गीकरण है– सामग्री जो शिक्षक के लिए हो और दूसरा वर्गीकरण है– सामग्री जो बच्चों के इस्तेमाल के लिए हो। इन दोनों के लक्ष्य व उपयोग के तरीक़े बहुत अलग–अलग हैं। सामग्री के बारे में आगे सोचते समय, इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि सामग्री, शिक्षण कार्य की उपयोगिता के बारे में अपने आप कुछ तय नही कर सकती। मुख्य प्रश्न यह है कि सामग्री का उपयोग किस तरह करने/करवाने की योजना है, यह उपयोग किस तरह से संभव हो रहा है और यह किन लक्ष्यों को पूरा कर सकता है। इस इकाई में हम ऊपर जो सवाल उठाये गये है उनपर चर्चा करेंगे।

9.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- शिक्षण कार्य में सामग्री के इस्तेमाल का महत्त्व जान पाएँगे;
- अधिगम सामग्री के प्रकारों को स्पश्ट कर पाएँगे;
- बुनियादी शिक्षण सामग्री को पहचान पाएँगे;
- अच्छी अधिगम सामग्री पर अपनी राय दे पाएँगे;
- टीएलएम व टीचिंग एड में फ़र्क कर पाएँगे;
- भाषा शिक्षण में अधिगम सामग्री में अधिगम सामग्री के इस्तेमाल का विश्लेशण कर पाएँगे;
- अधिगम सामग्री का उपयोग कैसे व कब करें पर अपनी समझ बना पाएँगे।

टिप्पणी

9.2 शिक्षा के लिए बुनियादी सामग्री

यह समझना आवश्यक है कि कोई भी कक्षा हो, उसमें कुछ बुनियादी सामग्री होनी चाहिए। इसी तरह से स्कूल में भी कुछ बुनियादी व्यवस्था चाहिए। अक्सर हम इस बात पर गौर नहीं करते कि स्कूल के लिए कुछ आवश्यक बुनियादी सामग्री की व्यवस्था करने की ज़रूरत होती है। इस आवश्यक सामग्री में कई चीज़ें तो एकदम निगाह में आती हैं, पर कई ऐसी हैं, जो इतनी स्पष्ट रूप से सामने नहीं आतीं। जैसेकि हर कक्षा में बच्चे के बैठने की उचित व्यवस्था के लिए बेंच, कुर्सी, मेज़ आदि तो आवश्यक हैं ही, इसी तरह कक्षा में पर्याप्त रोशनी के लिए प्रकाश का कोई उचित स्रोत आवश्यक है, पीने के पानी की व्यवस्था भी आवश्यक है। नई शिक्षा नीति 1986, जो कि देश भर के स्कूलों को बेहतर बनाने का एक प्रयास था, में एक महत्त्वपूर्ण पहलू था, हर सरकारी स्कूल में कुछ आवश्यक बुनियादी सामग्री उपलब्ध करवाना। इस सामग्री में कमरे, बैठने की व्यवस्था, कुछ खेल का सामान व पुस्तकालय की पुस्तकें आदि शामिल थीं। यह उपयोगी होगा कि अगर आप भी अपने बचपन के स्कूलों के बारे में विचारें और यह सोचें कि एक स्कूल को ठीक से चलाने के लिए किस–किस तरह की बुनियादी सामग्री की आवश्यकता होती है? आप यह याद करने का प्रयास कर सकते हैं कि आपके स्कूल में कौन–कौन सी सामग्री थी और किस सामग्री की कमी आपको महसूस होती थी।

स्कूल में इस बुनियादी सामग्री की व्यवस्था के अलावा शिक्षण के लिए कुछ शैक्षिक सामग्री की भी आवश्यकता होती है।

पाठगत प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन सी एक बुनियादी सामग्री है?

   (क) चार्ट (ख) मॉडल

   (ग) बेंच (घ) भाषा कार्ड

2. स्कूल में कौन–2 सी बुनियादी सामग्री होनी चाहिए?

   .....

   .....

   .....

3. आपको अपने स्कूल में किस प्रकार की सामग्री की कमी महसूस होती थी?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

9.3 शैक्षिक सामग्री क्यों?

शैक्षिक सामग्री के संदर्भ में पहला महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि सामग्री का उपयोग मुख्यतः किसके द्वारा किया जायेगा? इसका उत्तर इस बात पर निर्भर है कि हम सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को किस रूप में देखते हैं। इसका एक तरीका तो यह है कि हम इस बात पर जोर डालें कि सामग्री का उपयोग इस प्रकार हो, जिससे कि शिक्षक बच्चों को ठीक से अपनी बात समझा सके और उनके सामने एक ठोस प्रतिमान प्रस्तुत कर सके। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा, शिक्षक द्वारा बच्चों को ठीक से समझाना है। इसमें बच्चा ज्यादातर एक मूक श्रोता होता है, जो शिक्षक के वक्तव्य को ग्रहण करता है और उसे कॉपी में नोट करता है। इस शिक्षण में सामग्री वह है, जो बच्चे के सामने उन बातों की छवि प्रस्तुत करती है जो उसे जानना चाहिए। इसमें मॉडल, चार्ट, स्लाइड आदि उदाहरण हो सकते हैं। शिक्षण की यह शिक्षक–प्रधान समझ पहले बहुत प्रचलित थी और सर्वमान्य समझी जाती थी। इस समझ में, सामग्री का उपयोग प्रमुख रूप से शिक्षक करता था और उसे बच्चे देख भर सकते थे ; अपने हाथों से उसका इस्तेमाल नहीं कर सकते थे। यह भी डर रहता था कि सामग्री बच्चों के छूने से खराब हो जाएगी। जैसा कि आपने अन्य इकाइयों में पढ़ा होगा कि शिक्षण का यह नज़रिया अब प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए उचित नहीं माना जाता। अब यह माना जाता है कि हर बच्ची स्वयं सोचकर अपना खुद का ज्ञान बनाती है और इसमें शिक्षक मदद ही कर सकता है। बच्ची के लिए, अपने तर्क के ढाँचे बनाना व उनका उपयोग करना ज्यादा जरूरी है न कि वह दूसरों के द्वारा बनाए हुए तर्कों के ढाँचे को समझे। इसमें सामग्री, बच्ची के लिए है और वह उसे इस बात में मदद करने के लिए है कि वह विभिन्न चीज़ों के लिए अपना विचार–ढाँचा बना पाये। इसके लिए बच्ची को, स्वयं सामग्री के साथ अंतःक्रिया करने, उसका अलग–अलग तरह से परीक्षण व इस्तेमाल करने, उसके कुछ हिस्से को स्वयं बनाने आदि के लिए मौका होना चाहिए। शिक्षण की इस समझ में, सामग्री सीखने वाली बच्ची के लिए है और सामग्री उसके पास, उसके हाथ तक पहुँचनी आवश्यक है।

भाषा की कक्षा में सामग्री का उपयोग, अन्य विषयों की सामग्री से अलग है। भाषा की कक्षा में, किस प्रकार की सामग्री हो सकती है और शिक्षण की दोनों प्रकार की समझ के संदर्भ में सामग्री के प्रकार, उनके उदाहरण व उपयोग के तरीके पर हम आगे विचार करेंगे।

अगले हिस्से में हम कुछ प्रचलित शब्दों पर भी चर्चा करेंगे। पहले हम उन्हें शिक्षण के दो नज़रियों के संदर्भ में व बाद में भाषा शिक्षण के संदर्भ में खंगालने का प्रयास करेंगे। शिक्षा के विमर्श में 'टीएलएम' शब्द काफी प्रचलित है और इसके बारे में काफ़ी विचार–विमर्श भी होता है। इसी तरह 'टीचिंग एड' भी एक शब्द है जिसका काफी प्रयोग होता है। अक्सर इन दोनों शब्दों को एक–दूसरे का पर्याय मान लिया जाता है। किन्तु ये दोनों शब्द अलग–अलग तरह की सामग्री और उनके अलग–अलग तरीके से उपयोग को इंगित करते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. टी.एल.एम. का विस्तार है–

   (क) टोटल लिस्निंग मैटर (ख) टोटल लर्निंग मास्टर

   (ग) टीचिंग लर्निंग मटिरियल (घ) टाइट लर्निंग मॉडयूल

2. सीखने–सिखाने की सामग्री को बच्चों तक पहुँचाना क्यों जरूरी और महत्त्वपूर्ण है?

   .....

   .....

   .....

3. 'टीएलएम' शब्द का अर्थ क्या है?

   .....

   .....

   .....

4. कौनसा नज़रिया अब प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए उचित नहीं माना जाता?

   .....

   .....

   .....

9.4 टीएलएम बनाम टीचिंग एड

9.4.1 मॉडल व प्रदर्शन सामग्री

आजकल टीएलएम की बहुत चर्चा है। कोई भी कक्षा हो अथवा कोई भी विषय हो, हर संदर्भ में टीएलएम को अचूक हल के रूप में देखा जाता है। ऐसा समझा जाता है कि टीएलएम का उपयोग कक्षा में कोई जादू कर देगा, जिससे सब कुछ बदल जाएगा।

अक्सर टीएलएम बनाने के लिए कार्यशालाएँ होती हैं। थर्मोकोल, चार्ट पेपर, रंग व अन्य सभी तरह की सामग्रियाँ सामने रखी जाती हैं। शिक्षक कोशिश करके अपनी कला व कल्पना का प्रदर्शन करते हैं और सुन्दर से सुन्दर मॉडल बनाते हैं। इन मॉडलों, व इनके उपयोग के गुणों के बारे में सोचें, तो ये तीन प्रमुख सवाल पूछे जा सकते हैं:

1. क्या ये मॉडल बच्चे को सोचने में मदद करते हैं? क्या इनके आधार पर वह कुछ कल्पना कर सकता है, अपने स्वतंत्र विचार बना सकता है और उन्हें अभिव्यक्त कर सकता है?

   अथवा

   ये सिर्फ कुछ जानकारी प्रदर्शित करते हैं। इनसे सभी को एक ही बात समझनी है और उसे समझकर व्यक्त करनी है।

2. क्या बच्चे इनके साथ कुछ कर पाते हैं? इन्हें छूकर, बदलकर देख सकते हैं?

   अथवा

   इनसे बच्चों को दूर ही रहना है, क्योंकि छूने से यह टूट जाते हैं। खराब हो जाते हैं।

3. बच्चे इन मॉडलों के काफ़ी समय तक नजदीक रह सकते हैं और उन्हें कुछ समय तक अपने पास रख सकते हैं। हर बच्चा इनका उपयोग कर सकता है।

   अथवा

   मॉडल का एक प्रारूप बनाना ही बहुत मुश्किल है। एक मॉडल बनाने में ही इतना समय खर्च हो जाता है कि प्रत्येक बच्चे के लिए ऐसे मॉडल उपलब्ध हो पाना संभव नहीं है।

वस्तुतः जिस सामग्री की हम बात कर रहे हैं, अगर वह प्रत्येक प्रश्न के अथवा के बाद वाली श्रेणी की है तो यह शिक्षण–अधिगम सामग्री यानी टीएलएम नहीं है। टीएलएम का सरल अनुवाद है– सीखने–सिखाने की सामग्री। दरअसल अथवा के बाद वाली श्रेणी में आने वाली सामग्री में सीखने वाले की भूमिका लगभग नगण्य होती है। यह तो शिक्षण सहायक सामग्री यानी सिर्फ टीचिंग एड है।

टीएलएम और टीचिंग एड, दोनों ही उपयोगी हो सकते हैं लेकिन इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है कि वे किन परिस्थितियों में और किस प्रकार से उपयोगी हो सकते हैं। यह भी समझना जरूरी है कि टीएलएम क्या है, और वह सब कुछ जो टीएलएम के नाम पर होता है, टीएलएम क्यों नहीं है? कक्षा में मात्र सामग्री उपलब्ध होना अच्छी शिक्षण प्रक्रिया का द्योतक नहीं है।

लेकिन अक्सर टीएलएम व शिक्षण सामग्री की बात करते समय जो उदाहरण सामने आते हैं, वे हैं चार्ट, मॉडल, थर्मोकोल से बनी आकृतियाँ आदि। अन्य उदाहरण ऐसे भी हो सकते हैं, जिनमें स्पोक, प्लास्टिक से बने आकार आदि शामिल हों। किन्तु इनके उपयोग का उद्देश्य भी, शिक्षक द्वारा बनाए गए मॉडल रूपी उपकरणों को बच्चों के सामने प्रदर्शित करना है। सामान्य तौर पर, शिक्षक इन मॉडलों को बनाने में, कई–कई दिन लगाते हैं और यह टीएलएम–कक्ष की सालों तक शोभा बढ़ाते हैं किन्तु कक्षा में न तो बच्चे इन्हें छू सकते हैं और न ही इन्हें ध्यान से और लम्बे समय तक देख सकते हैं। मॉडल की कला और उस पर हुई मेहनत के ख़राब होने का डर जो रहता है और फिर कक्षा में बच्चों की संख्या भी तो कम नहीं होती!

टिप्पणी

वही विचार, वही मॉडल, ठीक उसी स्वरूप में सभी स्कूलों और डाइटों में मिलते हैं। फर्क है, तो बस उनको बनाने में इस्तेमाल की गई सामग्री, रंग और बनाने की सफाई का। अक्सर मॉडल बनाने वाले के हस्तकौशल के लिए तो यह चुनौतीपूर्ण कार्य है, पर बच्चों के लिए अरुचिकर। बच्चों में यदि एक बार इन मॉडलों के प्रति नयेपन का भाव कम हुआ, तो इनमें बच्चों की रुचि खत्म हो जाएगी।

9.4.2 टीएलएम कैसे मदद करता है?

इसका जवाब देने से पहले, हमें इस बारे में सोचना पड़ेगा कि हम बच्चे को क्या सिखाना चाहते हैं। यदि हम यह अच्छे से समझते और मानते हैं कि सीखने के लिए बच्चों का क्रियाशील होना जरूरी है, तो बच्चों को सीखने के मौके उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। इसमें सामग्री मदद करती है। जैसे अगर बच्चों को समूह की अवधारणा पर विचार करना है, तो उसके लिए वस्तुओं के ठोस गुणों के आधार पर समूह बनाने से मदद मिलेगी। यह ठोस गुण रंग हो सकता है, आकार हो सकता है, वज़न हो सकता है या फिर कोई और गुण। समूह बनाने की इस प्रक्रिया में, उसका गुण सोचना, उसके लिए एक शब्द ढूँढ़ना, जहाँ वह पर्यावरण अध्ययन का एक हिस्सा है, वहाँ वह भाषा के विकास का भी हिस्सा है। वैसे तो समूह बनाने का अभ्यास करवाने के लिए, किसी भी सामग्री का उपयोग किया जा सकता है व उससे अलग–अलग अभ्यास बनाए जा सकते हैं, किन्तु सीखने को आगे बढ़ाने के लिए अभ्यासों के प्रकार व स्तर में हमें परिवर्तन करना होगा और उसके लिए उपयुक्त सामग्री का चयन भी करना होगा।

उदाहरण के लिए इस प्रकार के अभ्यास अलग–अलग स्तर के लिए बनाए जा सकते हैं। जैसे वस्तुओं को उनके कुछ गुणों के आधार पर, बच्चों से छँटवाना या फिर बच्चे स्वयं वस्तुओं के गुणों के बारे में सोचें, अलग–अलग समूह बनाएँ, फिर धीरे–धीरे दो गुणों को एक साथ मिलाकर वस्तुओं को छाँटें, जैसे लाल गोलाकार वस्तु या फिर चमकीली चौकोर वस्तु आदि। यह प्रक्रिया बच्चों की, वस्तुओं को श्रेणियों में बाँटने की क्षमता को पैना करती है। जैसे–जैसे यह समझ बढ़ती है, विचार स्तर पर भी वस्तुओं को श्रेणीबद्ध कर पाने की क्षमता में इज़ाफा होता है। यह भाषाई कौशल को बढ़ाने में तो मदद करती ही है, साथ ही शब्दों को विभिन्न भाषाई श्रेणियों में बाँटे जाने की प्रक्रिया को समझने में भी मदद करती है।

हम यह देख पाते हैं कि बहुत ही आसानी से उपलब्ध सामग्री का अलग–अलग ढंग से उपयोग हो सकता है और इनका व्यवस्थित उपयोग करने से सीखने में मदद की जा सकती है। हर विषय में अनेक तरह से सामग्री का उपयोग, बच्चों को सीखने में मदद करता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. सीखने वाले की भूमिका नगण्य किसमें होती है?

   (क) टीएलएम (ख) टीचिंग एड

   (ग) अधिगम (घ) मॉडल

2. 'टीएलएम' कोई जादू नहीं है। इसका मतलब समझाइए।

   ....

   ....

   ....

3. टीएलएम और टीचिंग एड में क्या अन्तर है?

   ....

   ....

   ....

4. टीएलएम तक बच्चों की पहुँच क्यों जरूरी है?

   ....

   ....

   ....

5. टीएलएम शिक्षण में क्या और कैसे मदद करता है?

   ....

   ....

   ....

9.5 अच्छी शैक्षिक सामग्री क्या है?

जब हम यह कहते हैं कि अच्छी शैक्षिक सामग्री शिक्षक के लिए अपनी बात को समझाने व जानकारी देने का साधन मात्र नहीं है, तो फिर यह सवाल उभरता है कि क्या शिक्षण में अतिरिक्त सामग्री जरूरी है? क्या कक्षा में ब्लैकबोर्ड, चॉक व पाठ्यपुस्तक के अलावा और कुछ होना चाहिए। शैक्षिक सामग्री के संदर्भ में हमारी वर्त्तमान समझ व उपयोग का तरीका, ठीक नहीं है। तो फिर सामग्री का उपयोग कैसे करें? क्या यह ब्लैक बोर्ड के बेहतर विकल्प के अलावा और भी कुछ है? इस सवाल पर गौर करने के लिए, यह सोचना आवश्यक होगा कि हम बच्चों के सीखने के बारे में क्या जानते हैं, क्या मानते हैं?

टिप्पणी

इस संदर्भ में सोचते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि आज की हमारी सीखने–सिखाने की समझ क्या है। इस समझ का एक प्रमुख पहलू यह है कि इन्सान व बच्चे जब कोई चीज़ सीखते हैं, तो वह उसे अपने पहले की समझ के साथ जोड़ते हैं। हर ज्ञान पुरानी समझ के संदर्भ में ही ग्रहण किया जाता है। यह भी स्प÷ट है कि मूर्त व ठोस अनुभव, बच्चे को समझने में मदद करते हैं और बच्चे अमूर्त्त अवधारणाओं से जूझकर अपने ढंग से उन्हें आत्मसात करते हैं। यह भी माना जाता है कि सीखने–सिखाने में सीखने वाले की भागीदारी अहम होनी चाहिए। विशे÷ा रूप से प्रारम्भिक स्तर पर, उसे कभी भी मूक दर्शक अथवा श्रोता नहीं होना चाहिए। इसलिए सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो बच्चे के मूर्त अनुभवों को शामिल करे व सीखने में मदद करे। यानी सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को सीखने व ज्ञान बढ़ाने के उनके प्रयास में मदद करे तथा जिसे बच्चे छू सकें, उपयोग कर सकें और उससे अन्य गतिविधियाँ भी कर सकें।

टीएलएम बच्चों को ऐसे मौके दे सकता है, जिसमें वे स्वयं अपने ज्ञान का निर्माण करें। सामग्री को उलट–पलटकर उसका विश्ले÷ाण करने से, दोबारा करके देखने से या फिर अभ्यास करने से सीखने में मदद मिलती है। उदाहरण के तौर पर अमूर्त्त अवधारणाओं को समझने के लिए उनके ठोस प्रतिमानों (टीएलएम का एक रूप) को देखने, विभिन्न संदर्भों में अलग–अलग तरह से उसका सामना करने व उनका चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उपयोग करने से, अवधारणाओं की समझ बनती है और समृद्ध होती है।

यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि कुछ समय के बाद बच्चे अवधारणाओं को बगैर ठोस प्रतिमानों (टीएलएम का एक रूप) के समझ सकें और उनका उपयोग कर सकें। इससे तात्पर्य यह है कि सामग्री का उपयोग एक माध्यम है, लक्ष्य नहीं है। जब तक हमें लक्ष्य स्प÷ट नहीं होगा, सामग्री कोई मदद नहीं कर सकती। यह कहना भी उचित होगा कि अलग–अलग विषयों, उनके अलग–अलग हिस्सों, अलग–अलग प्रकार की अवधारणाओं और अलग–अलग उम्र व अलग–अलग स्तर तक सीख चुके बच्चों के लिए टीएलएम का एक ही अर्थ नहीं हो सकता। उसकी प्रकृति व उपयोग का तरीका भी बहुत अलग–अलग हो सकता है।

यह स्प÷ट है कि शैक्षिक सामग्री स्कूल में आए मेहमानों को दिखाने के लिए व शिक्षकों की सृजनात्मकता व कलात्मकता का प्रदर्शन करने के लिए बनती है। वह डाइट के टीएलएम कक्ष की या प्रधानाचार्य के कक्ष की शोभा बढ़ाती है। टीएलएम के बारे में बात करते समय, यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चा इसका उपयोग कैसे करेगा। यदि सीखने के लिए सामग्री को देखना, परखना, उठाना, पटकना, उससे कुछ नियोजित क्रियाएँ करना, कुछ नई क्रियाएँ सोचना व करना है, तो सामग्री का स्वरूप, उस सबसे बहुत अलग होना चाहिए, जैसी प्रदर्शन के लिए बनाई जाती हैं। वह सामग्री ऐसी होनी चाहिए, जो कि बहुत महँगी न हो और जल्दी टूटे–फूटे नहीं।

इसी तरह से वह कक्ष, जिसमें बच्चों को सीखने–सिखाने की गतिविधियों से जोड़ना है, उनकी सोच व क्रियाओं को उभरने के लिए मौके देने हैं, आक÷ाक तो होना ही चाहिए। परन्तु यह आक÷ाण सुन्दर दिखने व सुन्दर रहने के लिए नहीं, बल्कि बच्चों के उपयोग के

टिप्पणी

लिए होना चाहिए। कक्ष ऐसा हो, जो बच्चों का स्वागत करता प्रतीत हो और उन्हें अपना लगे, न कि ऐसा जो उनके छूने से, खेलने से, उनके वहाँ होने से साफ नहीं रहे। किसी भी प्राथमिक शाला के कक्ष की सुन्दरता खेलते और चहकते बच्चे हैं, न कि कक्षा की रंग–बिरंगी दीवारें, दीवार पर टँगे रंगीन चार्ट व आक÷िक सामग्री। यदि प्राथमिक शाला के कक्ष को वास्तव में सुन्दर व आक÷िक बनाना है, तो उसमें ऐसी सामग्री और ऐसी प्रक्रिया चाहिए, जिसमें बच्चे क्रियाशील हों व उस जगह पर स्वतन्त्र व सक्षम महसूस करें। उन्हें वह स्थान और सामग्री अपनी लगे और उसमें उनके अनुभवों को विकसित करने की संभावना हो।

पाठगत प्रश्न

1. प्राथमिक शाला के कक्ष की सुंदरता क्या होती है?

   (क) रंग–बिरंगी दीवारें (ख) रंगीन चार्ट

   (ग) खेलते और चहकते बच्चे (घ) अन्य आकर्शक सामग्री

2. अच्छी शैक्षिक सामग्री में क्या गुण होने चाहिए?

   ....

   ....

   ....

3. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सीखने वाले की भूमिका अहम क्यों है?

   ....

   ....

   ....

4. शैक्षिक सामग्री का कक्ष कैसा होना चाहिए?

   ....

   ....

   ....

9.6 एक ही सामग्री से क्या–क्या कर सकते हैं?

सीखने के लिए हमें बहुत ज्यादा सामग्री नहीं चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि हर कार्य के लिए नई सामग्री हो। अगर लक्ष्य स्प÷ट हो और हम सोचें तो एक ही प्रकार की सामग्री के बहुत से उपयोग हो सकते हैं। यह उपयोग सिर्फ एक ही विषय नहीं वरन् बहुत से

टिप्पणी

विषयों के लिए हो सकते हैं। उदाहरण के लिए हमारे पास यदि एक पासानुमा गुटका है, तो उससे क्या–क्या अभ्यास हो सकते हैं? पहले, गुटके पर बिन्दु अंकित कर उसे पासा बना सकते हैं। इसके बाद बच्चे आस–पास से कंकड़ इकट्ठे कर सकते हैं। फिर जितने बिन्दु पासे पर आएँ (अथवा जो संख्या ऊपर आएँ) उतने कंकड़ उठा सकते हैं। फिर दो चालों में, तीन चालों में या और ज्यादा चालों में कुल कितने कंकड़ आए, यह जाँच सकते हैं। अगर खेल टोली में खेला जा रहा है, तो यह देख सकते हैं कि किस बच्चे के पास ज्यादा कंकड़ आए और कितने ज्यादा। या किस बच्चे के पास सबसे कम कंकड़ आए और कितने कम। इसी तरह और भी खेल सोच सकते हैं। पासा बार–बार फेंककर यह भी देख सकते हैं कि कौनसी संख्या कितनी बार आयी और किस क्रम में आयी।

पासे को कागज़ पर रख–रखकर यह हिसाब लगा सकते हैं कि कागज़ का क्षेत्रफल कितने पासों के बराबर है। पासों से बच्चे और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। बच्चों को इन पासों से कोई आकृति बनवा सकते हैं, आकृति बनाकर उसे समझने का प्रयास करवा सकते हैं, गुटके का विवरण लिखवा सकते हैं। अगर आपके पास अक्षर, शब्द अथवा चित्र कार्ड हैं तो इनमें से किसी भी एक को लेकर अनेक रोचक व सीखने में मददगार गतिविधियाँ सोची जा सकती हैं।

9.6.1 भाषा सिखाने में कार्ड का उपयोग

भाषा सिखाने के संदर्भ में इनका एक उद्देश्य तो पढ़ना सीखने के **decoding** के हिस्से पर बच्चों की मदद करना है। इसके लिए हम उन्हें चित्र कार्ड व शब्द कार्ड को मिलाने के लिए कह सकते हैं। किसी एक शब्द कार्ड व उसके जैसे दूसरे शब्द कार्ड को ढूँढ़कर इकट्ठा करने के लिए कह सकते हैं, शब्द कार्डों को जोड़कर काल्पनिक कहानी बनाने का प्रयास कर सकते हैं और चित्रों व चित्र कार्डों से वार्तालाप, कल्पना, विवरण आदि के मौखिक अभ्यास करवा सकते हैं। हर कक्षा के लिए अलग–अलग स्तर पर अलग–अलग उद्देश्यों के लिए एक ही तरह के कार्डों का उपयोग किया जा सकता है। सोचें कि कक्षा 1 में शब्द कार्ड का क्या उपयोग हो सकता है और कक्षा 3 में क्या।

यहाँ पर फिर स्पष्ट है कि हर प्रकार की सामग्री का कई तरह का उपयोग हो सकता है और वह हमारे लक्ष्यों व सीखने–सिखाने की समझ से निर्धारित होगा। कुल मिलाकर बात इतनी है कि टीएलएम तभी फायदेमंद है, जब उपयोग करने वाले को यह समझ हो कि बच्चों को क्या सिखाना है, उसे सिखाने के क्या चरण हैं और उसके लिए क्या–क्या गतिविधियाँ बन सकती हैं, जिसे बच्चे कर सकते हैं। यह हो जाए, तो आसपास से उपलब्ध सामग्री ढूँढ़ना मुश्किल नहीं है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. भाषा सिखाने में कार्ड का एक उद्देश्य क्या है?

   (क) पढ़ना सीखने के डिकोडिंग के हिस्से पर बच्चों की मदद करना

   (ख) चित्र देखना (ग) चित्र बनाना (घ) वर्ण लिखना

2. एक गेंद का कक्षा में आप क्या–क्या उपयोग कर सकते हैं?

   .....

   .....

   .....

3. भाषा सिखाने में आप 'शब्द कार्ड' और 'चित्र कार्ड' का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

   .....

   .....

   .....

9.7 भाषा शिक्षण में सामग्री व सीखने की समझ

भाषा शिक्षण के संदर्भ में सीखने–सिखाने की समझ में अन्तर भी सामग्री व उसके उपयोग में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करता है। अगर भाषा सिखाने का उद्देश्य एक विशे÷ा तरह के गद्यों व पद्यों को समझाना है, तब शिक्षण की प्रक्रिया और उसमें लगने वाली सामग्री एक किस्म की होगी। इसके विपरीत अगर भाषा शिक्षण का उद्देश्य सीखने वाले को स्वतन्त्र विचारक, चिन्तक, अध्ययनकर्त्ता व साहित्य एवं अन्य विषयों में रुचि रखने वाले के रूप में विकसित करना है और यह अपेक्षा है कि वह अपने विचार स्प÷ट रूप से व्यक्त कर पाए, ठीक से समझा पाए, तो सामग्री का स्वरूप अलग तरह का होगा। हमें यह स्प÷ट करना है कि हम बच्चे से, किताब की कविताओं का सही लय–ताल व उच्चारण के साथ वाचन व गायन करवाना चाहते हैं अथवा यह चाहते हैं कि वह नयी–नयी कविता व गीत गाए। हम उससे याद किए हुए निबन्ध लिखवाएँ व याद किए हुए प्रश्नोत्तर सुनें अथवा वह अपने अनुभवों, विचारों के बारे में बोले और नये–नये निबन्ध लिखे। शायद हम यह भी देखना चाहेंगे कि उसमें भाषा का नये–नये संदर्भों में उपयोग का आत्मविश्वास हो। अगर हमारा लक्ष्य दूसरा है, तो यह आवश्यक है कि हमारी कक्षा की रणनीति में, बच्चे के पास अपनी बात को कहने के और अपनी कल्पना को व्यक्त करने के अधिकाधिक मौके हों।

इसके लिए ऐसे चित्र चाहिए जो उसे नये लगें, रोचक लगें व उसे कल्पना करने का मौका दें। इसी तरह एक–दूसरे के साथ मिलकर नई कहानियों को गढ़ने के मौके हों, जिसमें कि

टिप्पणी

बच्चों को स्वतन्त्रता भी हो और एक क्रमबद्धता भी हो। ऐसी और भी सामग्री हो सकती है जो प्रेरक के रूप में काम करे। वह बच्चों को खुलकर सोचने, चर्चा करने व अपने विचारों को जोड़कर व्यवस्थित करने में मदद कर सकती है।

बताने व सुनाने की शिक्षण प्रक्रिया, हर विषय में बच्चे को एक सीमित ज्ञान तक ले जाने के लिए तो उपयोगी हो सकती है, किन्तु यह इन्सान के दिमाग के विकास और वह कैसे विचारों को पकड़ता है, को आगे बढ़ाने में अड़चन पैदा करती है। भाषा के खुले इस्तेमाल की शिक्षण प्रक्रिया के लिए ऐसी सामग्री चाहिए, जिसमें सीखने वाले को खुल के सोचने का और कल्पना की उड़ान का मौका मिल सके। इसके संदर्भ में कुछ उदाहरण ऊपर दिए गए हैं। एक वृहद् चित्र, चित्रों का कोलॉज या फिर चित्रों की एक क्रमबद्ध लड़ी आदि को साथ रख कर बच्चे कुछ कहानी बना सकते हैं। इस तरीके में सामग्री इस्तेमाल करने का उद्देश्य, चित्र को समझना नहीं है, बल्कि चित्र की सीमा से आगे बढ़कर उसमें अपने विचार गूँथकर उन्हें भाषा में व्यक्त करना है।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चे भाषा का नये–नये संदर्भों में आत्मविश्वास के साथ उपयोग करें तो इसके लिए हमें क्या करना जरूरी है?

   (क) बच्चे को अपनी बात कहने और कल्पना को अभिव्यक्त करने के मौके देना

   (ख) बच्चों से याद किए हुए प्रश्नोत्तर सुनना

   (ग) किताब की कविताओं का गायन कराना

   (घ) विशेश तरह के गद्य एवं पद्य को समझाना

2. भाषा शिक्षण की एक कक्षा में बच्चों को सामग्री के रूप में आप क्या–क्या करने के मौके उपलब्ध करवा सकते हैं?

   .....

   .....

   .....

3. कहानी कहने अथवा कहानी गढ़ने के मौके कैसे बच्चों के भाषा–विकास में मदद कर सकते है?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

9.8 भाषा की कक्षा के लिए सामग्री कौन–कौनसी?

भाषा की कक्षा में सामग्री का उपयोग, बच्चों को विभिन्न भाषाई पाठ्य से परिचय करवाना नहीं है वरन् उनकी भाषाई क्षमता का विकास करना है। इसका अर्थ है, उन्हें ऐसे स्रोत उपलब्ध करवाना, जिनसे वे अपनी कल्पना से भाषाई क्षमता के विकास का अभ्यास कर सकें। यह भाषाई सामग्री लिखित भी हो सकती है और मौखिक भी। इसके अलावा शिक्षक के लिखने के लिए व बच्चों के लिखने के लिए भी सामग्री की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह भाषा शिक्षण का एक प्रमुख हिस्सा है। छोटे बच्चों की कक्षा में बहुत–सी ऐसी सामग्री जरूरी है, जो बच्चों को नये शब्दों का इस्तेमाल करने व आपस में चर्चा करने के लिए प्रेरित करें। उनके लिए, भाषा की विविध सामग्री को सुनना व लय व ताल पकड़ना, उनके भाषाई विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

अगर हम यह सूची बनाने की कोशिश करें कि कौन–कौनसी सामग्री भाषा की कक्षा के लिए आवश्यक है, तो उसके हम दो मोटे–मोटे भाग कर सकते हैं। एक तो वह सामग्री, जो लिखित है और दूसरी वह, जो मौखिक है।

लिखित सामग्री में सबसे पहले, पाठ्यपुस्तक व वर्कबुक आती हैं। इसके अलावा चार्ट और पोस्टर (जिन पर गीत या कविता अथवा केवल शब्द आदि लिखे हों), गत्ते अथवा अन्य पदार्थ के कार्ड (शब्द, अक्षर, शब्द चित्र व अन्य किस्म के कार्ड), पुस्तकालय (पत्रिकाएँ, किताबें, अख़बार, मैगज़ीन) आदि शामिल हैं।

मौखिक सामग्री, जो कि रेडियो, टेपरिकॉर्डर, सीडी प्लेयर, फिल्म प्रोजेक्टर आदि के माध्यम से बच्चों तक पहुँचाई जाती है। यह सामग्री, न सिर्फ बच्चे को कविता, कहानी, नाटक आदि सुनवाती है वरन् उसे हाव–भाव से व्यक्त करना व सुर–ताल के ज्ञान का भी अनुभव कराती है। इस तरह की सामग्री सुन के समझने की क्षमता का भी विकास करती है और उन्हें व्यक्त करने और उच्चारण की विविधता से भी परिचित कराती है। यह बात स्प÷ट है कि ऐसा कर पाने के लिए श्रव्य सामग्री, चाहे वह रेडियो के प्रोग्राम हों, चाहे टेप या सीडी पर हों, की गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए। सिर्फ अच्छे यंत्र होने से कोई लाभ नहीं है।

कम्प्यूटर और इन्टरनेट भी बहुत सारी चीज़ों में मदद कर सकते हैं, बशर्ते वे बच्चों को उपलब्ध हो सकें। ये न सिर्फ बच्चे को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के अलग–अलग तरह के चित्रों व दृश्यों से रूबरू होने का मौका दे सकते हैं, बल्कि पूरी कक्षा के लिए फिल्म के प्रदर्शन का भी साधन हो सकते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि भाषा के विकास में श्रव्य–दृश्य सामग्री का बहुत महत्त्व है और चूँकि हर शिक्षक अच्छे से गा नहीं सकता या कहानी नहीं सुना सकता, इसलिए अच्छा हो, अगर बच्चों के लिए ठीक से गाई गयी कविताएँ व अच्छी तरह से सुनाई जा रही कहानियों को सुनने का मौका मिले। यह इन्टरनेट और कम्प्यूटर से भी किया जा सकता है। शिक्षक को अच्छे कार्यक्रम चुनना व उनका सही समय पर उपयोग करना आना चाहिए।

भाषा की कक्षा में अन्य अवधारणाओं का विकास भी होता है। जैसा कि पहले भी कहा गया

टिप्पणी

है कि चीज़ों को समूह में बाँटना, उनके गुणों का अध्ययन, निर्देश पढ़कर कुछ क्रियाएँ करना, दिए गए अवलोकनों से कुछ नि÷क÷र्ा निकालना, कुछ कथनों व अवलोकनों के आध ाार पर तर्क के ढाँचे विकसित करना आदि सभी भाषा शिक्षण के हिस्से हैं। किन्तु इस सामग्री के बारे में उस विषय के अन्तर्गत बात करना उचित होगा। यह समझना जरूरी है कि विज्ञान, गणित व सामाजिक अध्ययन की किताबें भी भाषा के लिए सामग्री हैं और बच्चों को दिए गए प्रोजेक्ट अथवा गतिविधि के निर्देश भी भाषा सिखाने के लिए उपयुक्त हैं।

पाठगत प्रश्न

1. कौनसी एक मौखिक सामग्री नहीं है?

   (क) रेडियो (ख) पाठ्यपुस्तक

   (ग) सीडी प्लेयर (घ) फिल्म प्रोजेक्टर

2. भाषा की कक्षा में मौखिक सामग्री के रूप में आप कौन–कौन सी चीजों का उपयोग करना चाहेंगे और क्यों?

   .....

   .....

   .....

3. भाषा शिक्षण में आप पुस्तकालय का उपयोग कैसे करेंगे?

   .....

   .....

   .....

4. भाषा शिक्षण के संदर्भ में अच्छी सामग्री चुनने में किन–किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

   .....

   .....

   .....

9.9 सामग्री की उपलब्धता

जब हम सामग्री की बात करते हैं, तो कुछ सामग्री तो हमारे आसपास उपलब्ध होती है और स्वाभाविक तौर पर हम इसको हासिल कर सकते हैं। कुछ सामग्री ऐसी होती है, जो आसपास उपलब्ध नहीं होती है, जिसे ढूँढ़ना और प्राप्त करना पड़ता है। इसमें से बहुत–सी

सामग्री को खरीदना भी पड़ता है। यह आवश्यक हो जाता है कि जो सामग्री हम इस्तेमाल करने के लिए चुनें, वह बहुत महँगी न हो और जो हमारे आसपास के बाज़ार में उपलब्ध हो। कुछ सामग्री ऐसी भी हो सकती है, जो व्यापक स्तर पर खरीदकर स्कूलों तक पहुँचाई जा सकती है। अगर शिक्षक को स्वयं सामग्री खरीदनी हो, तो इस सामग्री की उपलब्धता और इसके लिए आवश्यक राशि की व्यवस्था को सुनिश्चित किया जाए।

पिछले दो दशकों में, स्कूलों में सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए एक व्यवस्था बनाने पर ज़ोर दिया जाता रहा है। काफ़ी प्रयास के बाद, यह व्यवस्था बनी है कि स्कूल और प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था के प्रत्येक शिक्षक को सामग्री खरीदने के लिए कुछ राशि मुहैया करवाई जाए। शिक्षक अपने अनुसार सामग्री खरीदे व उसका उपयोग करे। इस व्यवस्था में हिसाब–किताब के नियम भी अपेक्षाकृत सरल हैं, अतः सामग्री के उपयोग की संभावना भी बढ़ी है। कई जगह तो यह दबाव भी बनाया जा रहा है कि स्कूल और शिक्षक इस पैसे का उचित उपयोग करें। अब शिक्षक को सामग्री तो मिल सकती है, लेकिन क्या इससे यह सुनिश्चित होता है कि कक्षा में सामग्री का उपयोग सही तरीके से शुरू हो जाएगा। क्या स्कूलों में सामग्री के उचित उपयोग का कोई प्रभावी प्रयास चल रहा है?

आमतौर पर स्कूल व शिक्षक इस राशि का उपयोग, स्कूल के लिए सुन्दर–सुन्दर प्रदर्शन सामग्री खरीदने अथवा कच्ची सामग्री खरीद कर स्वयं बनाने के लिए कर रहे हैं। यह भी सामने आया है कि बहुत–सी सामग्री जो खरीदी जा रही है, उसे स्कूलों में रखने से शिक्षक व प्रधानाध्यापक कतराते हैं। जो शिक्षक उपयोगी सामग्री प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए पर्याप्त स्रोत उपलब्ध नहीं हैं, जहाँ से वे उपयुक्त सामग्री पा सकें, खरीद सकें अथवा उन्हें छाँट सकें। बाज़ार में न तो विविध प्रकार की अच्छी किताबें उपलब्ध हैं और न ही सुनने के लिए अच्छी कैसेट्स अथवा अच्छे चार्ट, जिनका बच्चों को भाषा का परिचय कराने के लिए, उपयोग किया जा सके।

आजकल हर राज्य में शिक्षा विभाग, जिले की कुछ प्राथमिक शालाओं को चुनकर, उनमें एक ऐसे कक्ष के निर्माण की बात कर रहा है, जो आकर्षक, सामग्री से भरा और बच्चों के लिए खुला हो। इस विचार की उपयोगिता व अनुपयोगिता पर चर्चा करते समय हमें कई पहलुओं पर ध्यान देना होगा। यह विचार करना होगा कि इसके क्या लक्ष्य होंगे, इसे कैसे क्रियान्वित करना है और इसे करने के आधारभूत कारण व सिद्धांत क्या हैं? इसके साथ आज की परिस्थितियों व संदर्भ को हम ध्यान में रखें तो यह सोचना होगा कि इसका स्कूलों व शिक्षा के लिए क्या निहितार्थ है। यह देखना होगा कि क्या इस तरह के कक्ष पर प्रति छात्र होने वाला खर्च व्यापक स्तर पर किया जा सकता है? कितने स्कूलों में किया जा सकता है? क्या इस तरह के कक्ष प्रदर्शन के लिए हैं अथवा इनमें बच्चे जाकर सामग्री का इस्तेमाल कर सकते हैं और सीख सकते हैं। अगर इनमें से हर सवाल का जवाब नहीं है, तो फिर इस तरह के सामग्री कक्ष किसी काम के नहीं हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. इस्तेमाल करने वाली सामग्री का चुनाव करने के बारे में कौन सा एक सही नहीं है?

   (क) सामग्री बहुत महँगी हो (ख) आसपास के बाज़ार में उपलब्ध हो

   (ग) सामग्री बहुत महँगी न हो (घ) खरीदकर स्कूलों में पहुँचायी जाए

2. सामग्री की अनुपलब्धता की समस्या को आप कैसे हल करेंगे?

   .....

   .....

   .....

3. पर्यावरण अध्ययन में आपके द्वारा चुनी गई सामग्री का उपयुक्त इस्तेमाल करने के लिए आप क्या तैयारी करेंगे?

   .....

   .....

   .....

4. सामग्री चयन में आप किन–किन बातों का ध्यान रखेंगे?

   .....

   .....

   .....

9.10 सामग्री का उपयोग कैसे करें

जब हम शिक्षण के लिए, उपयोगी सामग्री का इस्तेमाल करने के बारे में सोचें, तो कुछ मुख्य सिद्धान्त जो हमने इस इकाई में सीखें हैं, को दोहराना उचित होगा। ये सिद्धान्त शिक्षक को सामग्री के उचित उपयोग में मदद कर सकते हैं।

1. सामग्री आसानी से पहुँच में हो। अगर शिक्षक को भी सामग्री इस्तेमाल करनी है, तो उसकी व्यवस्था भी पहले से हो। बच्चों के लिए यह परेशान करने वाला होता है कि उन्हें इन्तजार करते रहना पड़े कि जब शिक्षक सामग्री ढूँढ़ लेगें, तब काम शुरू होगा। ऐसे में सीखने की निरन्तरता और रुचि खो जाती है।

2. यह याद रखना जरूरी है कि सीखने में सहायक सामग्री का इस्तेमाल होना चाहिए, उसे सिर्फ दिखाना नहीं है। शिक्षक को यह पता होना चाहिए कि कौनसी सामग्री, किस विशेष परिस्थिति में, उपयोग के लिए ठीक रहती है। सामग्री अपने आप पढ़ा

नहीं देगी, वह तो मात्र साधन है, जिससे पाठ को ज्यादा अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है। किन्तु यह कार्य शिक्षक को स्वयं करना होगा।

3. अगर बहुत सारी सामग्री का इस्तेमाल करना है, तो उनका एक के बाद एक उपयोग करना उचित होगा। जब इन सामग्रियों के बीच संबंध दिखाना हो या उनके बीच कुछ अन्तःक्रिया हो, तभी उनको एक साथ दिखाया जा सकता है।

4. सामग्री को ठीक से रखना भी जरूरी है और साथ ही यह भी जरूरी है कि बच्चों को इस्तेमाल करने के लिए उसका वितरण जल्दी से हो सके। अगर हर बच्चे के पास कुछ सामग्री पहुँचनी है और उसके बाद वापस ली जानी है, तो वितरण व वापसी की ऐसी प्रक्रिया बनानी होगी, जिसमें बच्चे भी शामिल हों, जिम्मेदारी भी महसूस करें और उसमें बहुत समय भी नहीं लगे।

5. उपयोग करते समय, यह संभव है कि सामग्री में टूट–फूट हो जाए। यह आवश्यक है कि ढाँचे (शिक्षा की व्यवस्था) में, सामग्री के उपयोग से सामग्री के क्षरण के लिए जगह हो और यह माना जाए कि सामग्री कुछ समय के बाद नष्ट हो जायेगी और नई सामग्री की जरूरत होगी। जब बच्चे पुस्तकें पढ़ेंगे, चार्ट छुएँगे, चॉक इस्तेमाल करेंगे तो ये सभी चीज़ें या तो धीरे–धीरे फट जायेंगी, टूट जायेंगी अथवा खर्च हो जायेंगी। कोई भी ऐसा ढाँचा, जिसमें इन सबके लिए जगह नहीं है तो वह सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित नहीं करेगा।

पाठगत प्रश्न

1. सामग्री का इस्तेमाल करते समय कौनसी एक बात संभव नहीं है?

   (क) सामग्री में टूट–फूट हो जाए (ख) खर्च हो जाएगी

   (ग) धीरे–धीरे उसमें क्षरण होगा (घ) पहले जैसी रहेगी

2. शिक्षा की व्यवस्था या ढाँचे में शैक्षिक सामग्री के इस्तेमाल के संदर्भ में किस सिद्धान्त की जगह होनी चाहिए? और क्यों?

   .....

   .....

   .....

3. कक्षा में सामग्री को ठीक से रखना क्यों जरूरी है?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

9.11 सामग्री चुनने के आधार

सामग्री जुटाते समय हर शिक्षक को यह सोचना पड़ेगा कि वह किस तरह की सामग्री जुटाए, क्या चीज़ें खरीदे और किन पर ज़ोर दे। हमें यह विचार करना पड़ेगा कि उपयुक्त सामग्री चुनने के आधार क्या हों।

1. पहला आधार यह हो सकता है कि सामग्री ऐसी हो, जो हमारे शैक्षिक उद्देश्य को पूरा कर सके। यानी, जो काम हम करना चाहते हैं, जो मौका हम बच्चों को देना चाहते हैं, वह इस सामग्री के द्वारा किया जा सके। मानो हम चाहते हैं कि बच्चे अपनी कल्पना को विस्तार देने व अपने विचारों को पिरोकर व्यक्त करने का अभ्यास करें, तो हमारे पास ऐसा चित्र चाहिए, जिससे उनको यह करने का मौका मिल सके।

2. दूसरा आधार– सामग्री ऐसी होनी चाहिए, जिसका विविध उपयोग संभव हो। ऐसी सामग्री को इकट्ठा किया जाना चाहिए और शिक्षकों की इस बात की तैयारी होनी चाहिए कि वे सामग्री के बारे में लचीले ढंग से सोच पाएँ।

3. तीसरा आधार यह है कि सामग्री आसानी से उपलब्ध हो और उसके लिए बहुत मशक्कत नहीं करनी पड़े। यह भी आवश्यक है कि वह पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो, बहुत महँगी नहीं हो और जल्दी से टूटे–फूटे नहीं। थर्मोकॉल के ऐसे मॉडल, जो छूने पर टूट जाते हों, बहुत उपयुक्त सामग्री नहीं हैं। यह ध्यान रहना चाहिए कि ज्यादातर सामग्री ऐसी हो जिसका बच्चे इस्तेमाल कर सकें।

4. चौथा आधार– बच्चों को जिस सामग्री का इस्तेमाल करना है, वह ऐसी होनी चाहिए जिसके उपयोग में, कोई बहुत बड़ी सावधानी रखने की जरूरत न हो।

5. पाँचवाँ आधार– यह आवश्यक है कि सामग्री के चुनाव और उसके विकास व उपयोग के तरीकों में शिक्षकों की भागीदारी होनी चाहिए। यह उचित नहीं होगा कि सामग्री पहले से तय करके स्कूलों और शिक्षकों को सौंप दी जाए। इसके चयन में शिक्षकों की भागीदारी अनिवार्य है।

सामग्री क्यों, उसका उपयोग कैसे, इसकी सुरक्षा, निरंतरता, क्रमबद्धता व उसके बारे में फैसलों में शिक्षक की भागीदारी आदि के बारे में, ढाँचे में काम कर रहे लोग सामान्य तौर पर क्या सोचते हैं, यह हम सब जानते हैं। अक्सर यही माना जाता है कि स्कूल व शिक्षक पर भरोसा नहीं किया जा सकता व सामग्री का चयन किसी और को ही करना चाहिए। अभी भी यही प्रयास रहता है कि तय सामग्री, शिक्षकों को पहुँचा दी जाए। उन्हें स्वयं चुनने का मौका देना ठीक नहीं है। हालाँकि स्कूलों में सामग्री देने के बहुत से अनुभव हैं और अभी का प्रयास कोई पहला अनुभव नहीं है। फिर भी बुनियादी समझ वही है।

पाठगत प्रश्न

1. सामग्री चुनने के कितने आधार हैं?

   (क) दो (ख) चार (ग) पाँच (घ) आठ

2. सामग्री के चुनाव, उसके विकास और उपयोग के तरीकों के बारे में शिक्षकों की भागीदारी क्यों महत्त्वपूर्ण है?

   .....

   .....

   .....

3. सामग्री चयन के किन्हीं दो महत्त्वपूर्ण आधारों का उल्लेख कीजिए।

   .....

   .....

   .....

9.12 सारांश

स्कूल में बच्चों के लिए कुछ सामग्री की व्यवस्था होना लाजिमी है। जैसे दरी, बेंच, कुर्सी, शौचालय, पीने का पानी आदि। इस सामग्री को हम बुनियादी सामग्री कहते हैं। दूसरे प्रकार की सामग्री के अंतर्गत हम शैक्षिक सामग्री को रख सकते हैं। जैसे चार्ट, मॉडल, भाषा कार्ड आदि। शैक्षिक सामग्री एक प्रकार का साधन है, जो शिक्षक को शिक्षण में और बच्चों को सीखने में मदद करता है। इसीलिए इसको सीखने–सिखाने की सामग्री या टीएलएम कहते हैं। शैक्षिक सामग्री के नये नजरिये के अनुसार सामग्री तक बच्चों की पहुँच होना जरूरी है। अर्थात् बच्चे कक्षा में सामग्री को छू सकें, उलट–पुलट कर देख सकें व परख सकें। सामग्री के टूटने या खराब होने का भय नहीं होना चाहिए। अच्छी शैक्षिक सामग्री वह है जो बच्चे के अनुभवों को, मूर्त को शामिल करे व सीखने में मदद करे। यह जरूरी नहीं है कि हर कार्य के लिए नयी सामग्री हो। अगर हम सोचें तो एक ही सामग्री के बहुत से उपयोग हो सकते हैं। भाषा की कक्षा में सामग्री का उपयोग, बच्चों को विभिन्न भाषाई पाठ्य से परिचय करवाना नहीं है बल्कि उसकी भाषाई क्षमता का विकास करना है। साथ ही हमने यह भी जाना कि सामग्री के चुनाव और उसके विकास व उपयोग के तरीकों में शिक्षकों की भागीदारी होनी चाहिए।

9.13 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Dewan, H.K.( ) *TLM Banaam Teaching Aid.* Udaipur: Vidya Bhawan Society.

टिप्पणी

9.14 अंत्य इकाई अभ्यास

1. बुनियादी सामग्री और शैक्षिक सामग्री में क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझाइए।
2. शैक्षिक सामग्री के प्रति नया नजरिया क्या है?
3. एक अच्छी शैक्षिक सामग्री की विशेशताएँ बताइए।
4. सामग्री चयन के मुख्य आधार क्या होने चाहिए?
5. सामग्री उपयोग करने के क्या–क्या सिद्धान्त हैं?
6. 'शैक्षिक ढाँचे में सामग्री के क्षरण होने की जगह होनी चाहिए।' इसका क्या तात्पर्य है?

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- अखबार के विज्ञापनों एवं आसपास दिखाई देने वाले होर्डिंग्स, पोस्टर, बैनर आदि का भाषा की कक्षा में इस्तेमाल कीजिए और अपने अनुभव लिखिए। क्या हम इनका उपयोग शैक्षिक सामग्री के रूप में कर सकते हैं?

इकाई 10 मूल्यांकन और आकलन

संरचना

10.0 परिचय

10.1 अधिगम उद्देश्य

10.2 वर्तमान में चल रही आकलन की प्रक्रिया

10.3 आकलन क्यों?

10.4 भाषा में आकलन के बिन्दु

10.4.1 सुनना और बोलना

10.4.2 लिखना

10.4.3 अभिव्यक्ति

10.5 भाषा में आकलन के तरीके

10.5.1 मौखिक परीक्षण

10.5.2 अवलोकन

10.5.3 लिखित परीक्षण

10.6 भाषा में गद्य, पद्य और नाटक के लिए आकलन हेतु गतिविधियाँ

10.6.1 गद्य

10.6.2 पद्य

10.6.3 नाटक

10.7 सारांश

10.8 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.9 अंत्य इकाई अभ्यास

10.0 परिचय

इस इकाई में हम यह समझ बनाने की कोशिश करेंगे कि भाषा की कक्षा में आकलन किस तरह से किया जाता है? आखिर आकलन है क्या? आकलन में क्या–क्या शामिल होता है आदि। भाषा के संदर्भ में आकलन करते समय किन–किन बिन्दुओं पर ज़ोर देना चाहिए इस

टिप्पणी

पर चर्चा करेंगे। हम यह भी देखेंगे की आकलन कि जो प्रचलित प्रक्रिया है वह कैसी है? क्या वह आकलन के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है? प्रचलित प्रक्रिया के अलावा आकलन के और कौन–कौनसे तरीके हो सकते हैं, जिसके द्वारा आकलन के कारण बच्चे में सीखने के प्रति अरुचि पैदा न हो। बल्कि आकलन इस तरह से हो कि बच्चे के आत्मविश्वास और क्षमताओं को बढ़ावा मिले। आकलन बच्चे और शिक्षक दोनों को मदद करता है। भाषा में विभिन्न विधाओं कहानी, कविता और नाटक के आकलन हेतु किस तरह की गतिविधियाँ और प्रश्न संभव हैं इस पर विस्तार से जानने का प्रयास करेंगे।

10.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मूल्यांकन की प्रचलित प्रक्रिया के परिणाम जान पाएँगे;
- 'आकलन की जरूरत क्यों है' पर अपनी समझ बना पाएँगे;
- विभिन्न भाषाई कौशलों के आकलन के तरीके का विश्लेशण कर पाएँगे।

10.2 वर्तमान में चल रही आकलन की प्रक्रिया

वर्तमान में आकलन की जो प्रक्रिया चल रही है क्या उसके द्वारा आकलन के उद्देश्य पूरे हो रहे हैं? क्या सही तौर से जिस चीज का आकलन होना चाहिए, वह हो रहा है। प्रचलित प्रक्रिया को समझने के लिए आइए हिन्दी भाषा की एक कक्षा पर नजर डालते हैं।

उदाहरण–1 : एक प्राथमिक विद्यालय में भाषा की शिक्षिका ने कक्षा तीन के विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियों में से एक कहानी सुनाने का टेस्ट लिया। कक्षा में कुल 30 बच्चे थे। मयंक के अलावा सभी बच्चों ने पाठ्यपुस्तक में से कहानी सुनाई। अधिकांश बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए। सबसे ज्यादा अंक प्रकृति को मिले 8 और मयंक के सबसे कम 2 अंक आए। शिक्षिका ने जब सभी बच्चों को अंक बताए तो मयंक के अंक सुनकर सभी बच्चे हँसने लगे तथा चिढ़ाने लगे। मयंक को यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसके इतने कम अंक क्यों आए?

सभी की तरह उसने भी कहानी सुनाई थी। वह उदास होकर चुपचाप बैठ गया। कुछ देर बाद शिक्षिका से कक्षा के बाहर जाकर पूछा कि मैडम मेरे सबसे कम अंक क्यों आए हैं?

शिक्षिका ने कहा– ''मैंने पुस्तक में से कहानी सुनाने के लिए कहा था। अपने मन से कुछ भी बोलने के लिए नहीं।'' उसके बाद मयंक ने कभी भी कक्षा में अपनी खुशी से कक्षा की किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लिया और न ही खुशी से स्कूल आना चाहा। उसके माता–पिता को बड़ी मुश्किल से उसे स्कूल के लिए तैयार करना पड़ता था।

उदाहरण–2 : यह भी उदाहरण हिन्दी भाषा की कक्षा 3 का है। जहाँ शिक्षक ने बच्चों को 'गाय' विषय पर पाँच वाक्य लिखवाए–

1. गाय हमारी माता है।
2. उसके चार पैर होते हैं।
3. वह हरी घास खाती है।
4. गाय दूध देती है।
5. गाय के गोबर से उपले बनते हैं।

शिक्षक ने लिखाने के बाद कहा कि उन पाँचों वाक्यों को याद कर लो टेस्ट में लिखना होगा। 1 वाक्य पर एक नम्बर मिलेगा और जो पाँचों वाक्यों को सही लिखेगा उसे पूरे–पूरे नम्बर मिलेंगे।

शिक्षक के निर्देश के अनुसार सभी बच्चे याद करने में लग गए। टेस्ट हुआ, अधिकांश बच्चों ने शिक्षक के द्वारा लिखवाए गए वाक्यों को हू–ब–हू लिखा। नीलम ने भी 5 वाक्य लिखे। किन्तु ये शिक्षक के द्वारा लिखवाए गए वाक्यों से अलग थे।

1. गाय हमारी माता है।
2. उसके चार पैर होते हैं।
3. मेरे घर में बहुत सारी गायें हैं।
4. गाय के दूध से पैसे मिलते हैं।
5. जीतू की गाय के छोटा–सा बच्चा है।

अधिकांश बच्चों को 5 में से 5 नम्बर दिए गए। नीलम को सिर्फ 2 नम्बर दिए गए। जबकि उसने भी बाकी बच्चों की तरह 5 वाक्य लिखे। वाक्यों के लिखने में कोई गलती नहीं की फिर भी कम नम्बर दिए गए।

ये केवल दो कक्षाओं का उदाहरण हैं। यदि हम अपने आस–पास देखें तो हमें इस तरह की ही आकलन की प्रक्रिया देखने को मिलती है। आपने भी इस तरह के उदाहरण देखे होंगे। इस तरह आकलन से बच्चों में तनाव, असुरक्षा, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। पाठ्यपुस्तक की सामग्री को ही रटकर छात्र बता पाए यह वास्तविक आकलन नहीं है। बच्चे की अपनी कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता का भी आकलन में स्थान अवश्य होना चाहिए।

टिप्पणी

आकलन के संबंध में जो भी कुछ हो रहा है वह पूरी तरह से औपचारिक ताने बाने में बँधा हुआ है। एक निश्चित समय पर तय किया जाता है और कहा जाता है कि अमुक दिन मौखिक परीक्षा है और इस दिन लिखित परीक्षा। इससे सिर्फ बच्चों में डर पैदा होता है। परीक्षा का जो वातावरण होता है उसको देखकर ऐसा लगता है कि यह सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से एकदम अलग है। प्रश्न पत्र कहीं और से बनकर आता है और पढ़ानेवाला कोई और होता है। प्रश्नपत्र बनानेवाले को उन बच्चों के बारे में पता ही नहीं होता है कि वो कौन हैं, उनकी क्या पृष्ठभूमि हैं उन्होंने कहाँ तक सीखा है। प्रश्न पत्र भी विषयवस्तु केन्द्रित होता है न कि छात्र केन्द्रित।

पाठगत प्रश्न

1. वर्तमान में चल रही आकलन की प्रक्रिया से बच्चे में कौनसी स्थिति आने की नगण्य संभावना होती है?

   (क) तनाव (ख) असुरक्षा

   (ग) चिंता और अपमान (घ) प्रसन्नता

2. यदि आप शिक्षिका की जगह होते तो मंयक के उत्तर का आकलन किस तरह करते?

   .....

   .....

   .....

3. नीलम को कम नम्बर मिलने के पीछे आप किन कारणों को मानते हैं? क्या वे उचित थे? लिखिए।

   .....

   .....

   .....

10.3 आकलन क्यों?

आकलन ऐसा साधन है जो बच्चे व शिक्षक दोनों के लिए उपयोगी है। आकलन से एक तरफ बच्चे की क्षमता, उम्र, स्तर, आवश्यकता और सीखने की गति आदि को ध्यान में रखते हुए यह जाना जाता है कि कौनसा बच्चा क्या कर सकता है? अभी उसका सीखने में स्तर कैसा है? दूसरी तरफ शिक्षक को यह मदद मिलती है कि किस बच्चे के साथ किस तरह का कार्य करना है।

आकलन मात्र इसलिए नहीं किया जाना चाहिए कि छात्र को अंक दिए जा सके। यह

पर्याप्त नहीं है कि कक्षा में किसके ज्यादा अंक आए किसके कम अंक आए। आकलन का उद्देश्य यह कभी नहीं होना चाहिए कि कक्षा में पढ़ रहे बच्चों को एक क्रम में रखना है जो सबसे होशियार पर शुरू हो और सबसे कमजोर पर खत्म। आकलन का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि शिक्षक को यह पता चले कि उसके पढ़ाने में कहाँ कमी रह गई और अब उसे क्या करना चाहिए? एक छात्र का अपनी स्वयं की पिछली प्रगति से वर्तमान तक में क्या बदलाव आया है, क्या प्रगति हुई है, उसको बता सके। आकलन शिक्षक या माता–पिता को यह बताने वाला हो कि बच्चे की क्या जरूरतें हैं और उसके आधार पर किस प्रकार से उसके लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में बदलाव लाया जाए। आकलन वह जो सुधार की सम्भावना को बता सके।

आकलन शब्द से सामान्यतया यह अर्थ लगाया जाता है कि छात्र पास हुआ है या फेल। कितने अंक आये हैं। लेकिन वास्तव में इतना सीमित दायरा इसका नहीं है। एक बच्ची की उपलब्धि के स्तर से भी अधिक आकलन में यह जानने का प्रयास किया जाता है कि सीखना–सिखाना प्रभावी बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए एक भाषा शिक्षक जब आकलन करना चाहता है तो वह देखना चाहता है कि एक बच्ची कितना पढ़ पाती है? कैसे पढ़ पाती है? रुक–रुककर या प्रवाह में पढ़ती है? भाषा को सुनकर कितना समझती है? कितने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह पाती है? लिखित रूप में अपनी अभिव्यक्ति कर पाती है आदि। आकलन सीखने की गति को गहराई से समझने में मदद करता है। जैसे कोई बच्ची ठीक से पढ़ नहीं पा रही तो उसकी वजह क्या है? क्या कुछ अक्षरों को पहचानने में कमजोर है या शब्दों और वाक्यों को एक सार्थक इकाई के रूप में पढ़ने की आदत नहीं पड़ सकी है या हिज्ज़े करके पढ़ने की आदत की वजह से अर्थ नहीं समझ पा रही है आदि यह जानकारी हमारे लिए उपयोगी है। इससे बच्चों को समझने में मदद मिलेगी। अभी हमने यह जाना कि एक बच्ची की भाषा पढ़ने में क्या स्थिति है या कितनी समझ भाषा के बारे में है। इन सारी बातों को व्यवस्थित रूप में अंकित करना पड़ेगा। आकलन के दौरान प्रत्येक बच्चे के बारे में विवरणात्मक टिप्पणी लिखना जरूरी है। यह जरूरी नहीं कि ये टिप्पणियाँ बहुत विस्तार से हों लेकिन हर टिप्पणी का आधार स्पष्ट होना चाहिए। प्रत्येक टिप्पणी की पुष्टि ऐसे उदाहरण से हो जो आकलन के दौरान देखा गया हो। उदाहरण के लिए, पहली कक्षा में नये प्रवेश लिए, इस बच्ची के बारे में यह टिप्पणी बहुत ही कम और अधूरी है–

'जया किताबों में दिलचस्पी दिखाती है।'

यह टिप्पणी जिस आकलन पर आधारित हो, उसका उल्लेख आवश्यक है यह इस तरह से लिखी सकती हैं–

'जया पुस्तकों में दिलचस्पी दिखाती है। रीडिंग कॉर्नर की किताबों को वह काफी देर उलटती–पलटती रही। अंत में 'बुढ़िया की रोटी' किताब लेकर बैठ गई और एक–एक करके उसके चित्र निहारती रही।'

यहाँ आपका आकलन बच्ची के व्यवहार और असल में घटी घटना के सन्दर्भ में है। यह

टिप्पणी

टिप्पणी महज़ एक राय नहीं है। जब दो–चार महीनों में आपके पास इस तरह की 7–8 टिप्पणियाँ दर्ज हो जायेंगी तब आप बच्ची के भाषाई कौशलों के विकास का पूरा क्रम देख व समझ सकते/सकती हैं।

टिप्पणी से स्पष्ट हो पायेगा कि सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों ने क्या सीखा? वास्तविकता को ध्यान में रखने से आगे की प्रक्रिया के बारे में हमें दिशा मिल सकेगी। जैसे सीखने में आने वाली कठिनाइयों को हम जान गए हैं। अब हमको समाधान ढूँढ़ना पड़ेगा। समाधान के रूप में हमें विभिन्न गतिविधियों और अभ्यासों द्वारा या अन्य तरीके से सिखाने के लिए तैयार होना पड़ेगा। आकलन के दौरान यह भी ध्यान में रखना पड़ेगा कि किसी एक बच्ची की प्रगति की तुलना उसकी खुद की पिछली स्थिति से करनी है। किसी दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं। हर बच्चे की सीखने की गति और किसी विषय पर अपनी समझ को विकसित करने में लगने वाला समय अलग–अलग होता है। आप जानते ही हैं कि कुछ बच्चे पढ़ने, समझने और बोलने जल्दी लगते हैं पर कठिन अवधारणाएँ समय आने पर ही समझते हैं। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि हमें कुछ ही अर्थात् केवल जल्दी सीखने वाले बच्चों को ही नहीं सिखाना है, बल्कि हर एक बच्चे को सीखने के लिए प्रेरित करना है। आकलन की प्रक्रिया सतत रूप से वर्षपर्यन्त ही नहीं जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

पाठगत प्रश्न

1. आकलन के दौरान किस चीज़ का ध्यान रखना होगा?

   (क) एक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी खूद की पिछली स्थिति से करना होगा

   (ख) दूसरे बच्चों की प्रगति से तुलना करना होगा

   (ग) जल्दी सीखने वाले से तुलना करना होगा

   (घ) जल्दी बोलने वाले से तुलना करना होगा

2. आकलन की प्रक्रिया छात्र केन्द्रित क्यों होनी चाहिए? इसके क्या–क्या लाभ है?

   .....

   .....

   .....

3. आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से किस प्रकार जुड़ा है? अपने विचार लिखिए।

   .....

   .....

   .....

4. आकलन के सन्दर्भ में एक बच्ची के पढ़ने के बारे में टिप्पणी आपने पढ़ी। अब आप, एक बच्ची के लेखन की स्थिति को स्पष्ट करने के बारे में टिप्पणी लिखिए और उसके आधार को स्पष्ट कीजिए।

टिप्पणी

10.4 भाषा में आकलन के बिन्दु

वह क्षमता जिसमें सही व्याकरण एवं शब्दावली का उपयोग करते हुए वाक्य का सही उच्चारण हो या सही लिखा जाए, 'शुद्धता कहते हैं। दूसरी तरफ 'वह क्षमता जिसके द्वारा बालक सहजता के साथ बोल, पढ़ और लिखकर अपने आपको अभिव्यक्त कर पाए, प्रवाहिता कहलाता है। इसमें व्याकरणीय गलतियों की बजाय अर्थ एवं संदर्भ पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

आकलन की बात की जाए तो हमें प्राथमिक स्तर पर प्रवाहिता पर ध्यान देने की जरूरत है। उसके बाद शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए। प्राथमिक स्तर के बाद हमें शुद्धता एवं प्रवाहिता का संतुलन रखते हुए दोनों पर ध्यान देना जरूरी है।

हम यह जानना चाहते हैं कि बच्चे ने भाषा में कौन–कौनसे कौशल प्राप्त किए हैं? इससे पहले आकलनकर्त्ता को यह सोच लेना चाहिए कि कौशलों को प्राप्त के लिए छात्रों को बार–बार अलग–अलग तरह के मौके दिए गए हैं या नहीं। मौके देना बहुत ही जरूरी है। यहाँ पर कौशलों को समझने के लिए अलग–अलग बिन्दुवार विभाजन कर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। यह आपको अनिश्चितता की स्थिति से उबरने में मदद के लिए किया गया है। गतिविधियों के दौरान जब आकलन करें तो यह जरूरी नहीं है कि भाषा के हर कौशल के लिए अलग–अलग गतिविधि कराएँ। एक ऐसी गतिविधि भी चुनी जा सकती है जिससे तीन, चार या अधिक कौशलों का आकलन किया जा सकता है। प्रमुख कौशल इस प्रकार हैं–

10.4.1 सुनना और बोलना

बच्चे चित्रों पर विवरण दे पाएँ। वे अपनी बात को स्वतंत्र रूप से कह पाएँ। सुनी हुई बात, भाषण या चर्चा के बारे में अपना मत दे सकें। भाषा के शब्दों को सही ढंग से उपयोग कर पाएँ। सूचनात्मक प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दे पाएँ। जानी पहचानी चीजों लोगों घटनाओं के बारे में बोल पाएँ।

10.4.2 पढ़कर समझना

इस कौशल के शुरुआती चरण में अक्षर पहचान से लेकर अर्थ ग्रहण करने तक की क्षमता का आकलन किया जाता है। छात्र परिचित शब्दों नामों को शब्द कार्ड में पहचान पाएँ। शब्दों के अर्थ समझकर पढ़ें। इसके बाद चित्र कहानी के साथ–साथ लिखे शब्दों, वाक्यों को पढ़ पाएँ। पढ़ी हुई सामग्री की मुख्य बात बता पाएँ। तथा जो शब्द सीखा उसका उपयोग प्रसंग के अनुसार कर सकें।

टिप्पणी

10.4.3 लिखना

लिखने के आकलन की गतिविधि के दौरान यह देखने की कोशिश करें कि छात्र अक्षर या शब्द देखकर लिख पा रहे हैं या नहीं। उसके बाद बिना देखे अपने मन से शब्दों या अक्षरों को लिख पाए। इसके बाद इन बातों जैसे– प्रश्नों को सुनकर/पढ़कर एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिख सकें। दो–तीन वाक्यों में विवरण लिख सकें। अपरिचित शब्दों को सुनकर लिख सकें।

10.4.4 अभिव्यक्ति

इसके अन्तर्गत छात्र देखी हुई चीज या चित्र के समान चित्र बना पाएँ। इसके बाद स्वतंत्र चित्र बना सकें। कविता/कहानी/परिचित घटना स्थिति का अभिनय कर सकें। मिट्टी तथा आसपास की अन्य सामग्री से चीजें बना सकें। मन से कहानी बनाना, कहानी को आगे बढ़ाना आदि के आधार आकलन किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न

1. प्रवाहिता का क्या अर्थ है?

   (क) वाक्य का सही उच्चारण करना (ख) शुद्ध लिखना

   (ग) सहजता के साथ बोल, पढ़ और लिखकर अपने को अभिव्यक्त करना

   (घ) व्याकरण के नियमों को स्पष्ट करना

2. किसी विषय–वस्तु को पढ़कर छात्र की समझ बन पायी है या नहीं। इसके आकलन के लिए कौन–कौनसी गतिविधियाँ की जा सकती हैं?

   .....

   .....

   .....

3. सुनना और बोलना के आकलन के दौरान आप किन–किन आधारों को ध्यान में रखेंगे?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

10.5 भाषा में आकलन के तरीके

हिन्दी भाषा में आकलन के लिए मुख्यतया मौखिक और लिखित परीक्षा ही ली जाती है। प्रश्न पत्र जो बनाया जाता है वह आमतौर पर पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित होता है। इससे भाषा की समझ का कम पता चलता है और याददाश्त की ही जाँच होती है।

आकलन के नए तरीकों में मौखिक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, अवलोकन आदि का भी समावेश होना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 में भी आकलन की युक्तियों में बदलाव पर जोर दिया है। भाषा के संदर्भ में कुछ परीक्षण इस तरह के हो सकते हैं–

10.5.1 मौखिक परीक्षण

मौखिक परीक्षण औपचारिक के अलावा अनौपचारिक रूप से भी किया जा सकता है। पढ़ाते समय ही बच्चों से अलग–अलग विषय पर बातचीत करना, प्रश्न पूछना, समूह में चर्चा आयोजित करवाना, अभिनय करवाना इन गतिविधियों के द्वारा बच्चों के भाषाई कौशलों की जाँच की जा सकती है। औपचारिक रूप से आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ निम्न हो सकती हैं–

- **प्रश्न उत्तर सत्र**

इसके अन्तर्गत बच्चों से सवाल–जवाब किए जाते हैं। शुरुआत के प्रश्न एक दो शब्द के उत्तरवाले होने चाहिए जिससे सभी बच्चे भाग ले सकें। प्रश्न दिनचर्या और उसके अनुभव, रुचि, आवश्यकता आदि के संबंधित हो सकते हैं।

इस गतिविधि में आकलनकर्त्ता द्वारा छात्रों को अपनी बात कहने का पर्याप्त समय देना आवश्यक है। शिक्षक को अच्छे प्रश्न बनाने की कला का ज्ञान होना चाहिए। इस प्रश्न उत्तर सत्र से छात्रों के शब्द भण्डार, उच्चारण और वाक्य निर्माण की क्षमता आदि का आकलन संभव है।

- **कहानी कहना**

छात्र पढ़ी या सुनी हुई कहानियों को अपने शब्दों में सुना पाए या स्वरचित कोई कहानी सुना पाए। इन दोनों ही बातों को ध्यान में रखकर आकलन किया जाए। इसके अतिरिक्त हावभाव के साथ कहना, कहानी के घटनाक्रम को याद रखना भी ध्यान में रखना जरूरी है।

- **बोलकर पढ़ना**

विद्यार्थियों के बोलकर पढ़ने के कौशल की जाँच के दौरान शब्दों के उच्चारण, भाव के अनुसार शब्दों पर जोर देना, वाणी में उतार–चढ़ाव की भी जाँच साथ–साथ हो सकती है।

टिप्पणी

इस परीक्षण के दौरान, खुशी या दुख के अलग–अलग तरह के वाक्यों, संवाद के छोटे–बड़े टुकड़े या नाटक का कोई हिस्सा या पाठ्यपुस्तक का कोई अंश बोल–बोलकर पढ़ने के लिए दिए जा सकते हैं।

कोई छात्र सही उच्चारण न कर पाए या विस्मय, प्रश्नबोधक, हाव–भाव का प्रयोग न कर पाए तो तुरंत ही टोकना नहीं चाहिए। इससे छात्र में डर और अरुचि के भाव उत्पन्न होंगे। यह आप पर ही निर्भर करता है कि सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए समय–समय पर छात्रों को सही उच्चारण बताएँ और बोलने का तरीका भी बताया जाए।

- **देखी–सुनी या पढ़ी बात का वर्णन करना**

भाषा में आकलन के दौरान 'वर्णन करना' बहुत ही महत्त्वपूर्ण चरण है। प्राथमिक कक्षाओं में शुरुआत के दौरान छात्र को किसी परिचित वातावरण में परिचित वस्तु दिखाकर, चित्र दिखाकर या कोई क्रिया दिखाकर वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है। वर्णन की शुरुआत छात्र एक–एक ही वाक्य बोलकर कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. यदि कोई छात्र सही उच्चारण न कर पाए या विस्मय, प्रश्नबोधक, हाव–भाव का प्रयोग न कर पाए तो शिक्षक को क्या करना चाहिए?

   (क) तुरंत टोकना चाहिए
   (ख) उच्चारण ठीक करना चाहिए
   (ग) उस शब्द/ध्वनि का उच्चारण बार–बार करवाना
   (घ) तुरंत टोकना नहीं चाहिए

2. प्रश्न उत्तर सत्र के प्रश्नों के बारे में बताइए कि ये किस तरह के होने चाहिए।

   .....

   .....

   .....

3. यहाँ खेल के मैदान का चित्र दिया हुआ है अब सोचकर लिखिए कि इस चित्र को देखकर कक्षा 2 व कक्षा 5 के बच्चे क्या–क्या संभावित उत्तर देने चाहिए।

टिप्पणी

10.5.2 अवलोकन

कक्षा में आप जब पढ़ा रहे होते हैं उस समय भी अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करते हैं। इस अवलोकन का रिकॉर्ड रखा जाना चाहिए। यह भाषा का प्रवाह और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को जाँचने में मदद करता है।

परीक्षण में अंक या ग्रेड देने के लिए तीन या पाँच बिन्दुओं वाला रेटिंग स्केल प्रयोग में लिया जा सकता है। सारणी इस तरह हो सकती है–

सारणी

विवरण	1	2	3	4	5
शब्द ज्ञान		✓			
प्रवाह				✓	
संरचना			✓		
अभिव्यक्ति					✓

उपर्युक्त सारणी में 5 का अंक उत्कृश्ट प्रदर्शन और 3 से औसत प्रदर्शन का पता चलता है। यह इस बात का इशारा करता है कि विद्यार्थी को अभी और अवसर देने की आवश्यकता है।

10.5.3 लिखित परीक्षण

इस तरह के परीक्षण में प्रश्न पत्र पर बहुत ध्यान देने की जरूरत है। प्रश्न पत्र ऐसा हो जिसमें पढ़ना–समझना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, तर्क करना, सार लिख सकना, तुलना कर अंतर को समझना का आकलन किया जा सके। प्रश्न पत्र कौशल की जाँच करनेवाला होना चाहिए न कि याददाश्त का। प्रश्न पत्र छात्रों के समालोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने वाला होना चाहिए। ऐसे प्रश्न हों जो छात्रों को अनुभव बताने के मौके दे पाएँ। ऐसे प्रश्न भी होने चाहिए जो उनकी विश्लेषण क्षमता को बढ़ाने में सहायक हो। छात्र जब उत्तर लिखे तो उनके शब्दों को महत्त्व दे न कि केवल पाठ्यपुस्तक की हूबहू भाषा को ही।

- **श्रुतलेख**

इसका उपयोग भी भाषाई क्षमता की जाँच के उपकरण के रूप में किया जा सकता है। लेकिन यह पारम्परिक श्रुतलेख से अलग है। बोलने–सुनने की क्षमता के आकलन का महत्त्वपूर्ण तरीका श्रुतलेख है। नई दृष्टि से श्रुतलेख को बच्चों को परखने के साधन मात्र के रूप में न देखकर भाषा सिखाने के एक साधन के रूप में देखा जा रहा है। यह बच्चे के सुनकर समझने एवं लिखने के स्तर की पहचान करता है ताकि उसके स्तर के अनुरूप आगे काम करने की योजना बनाई जा सकें।

टिप्पणी

श्रुतलेख का अभ्यास कक्षा तीन के बाद से शुरू करवाया जा सकता है। इसके लिए गद्यांश के चुनाव में भी बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। श्रुतलेख के लिए एक ऐसे गद्यांश को चुनना चाहिए जो अपने आपमें पूर्ण हो और जिसका कुछ अर्थ समझ में आए। गद्यांश सार्थक सन्दर्भ से जुड़ा होने के साथ ही बच्चे के स्तर से एक स्तर ज्यादा का होना भी जरूरी है ताकि बच्चे ने अपने स्तर पर और उससे कितना ज्यादा सीखा है, पता चल सके।

श्रुतलेख करवाने के लिए सम्पूर्ण प्रक्रिया एक क्रम में तथा निश्चित समयान्तराल में होनी चाहिए। इस प्रक्रिया को निम्न चरणों द्वारा देखा जाता है–

चरण–1 : शिक्षक को पहले चयनित गद्य को बच्चों के सामने संतुलित प्रवाह और उतार–चढ़ाव के साथ सामान्य गति से पढ़ना चाहिए, उस समय बच्चों को केवल सुनने दिया जाए ताकि वे इस गद्य के सन्दर्भ को समझें और इसके लिए मानसिक रूप से तैयार हो सकें।

चरण–2 : दूसरी बार शिक्षक सामान्य से थोड़ी धीमी गति ने गद्य को पढ़े ताकि बच्चे उसे आराम से लिख पाएँ।

चरण–3 : शिक्षक वापस उसी गद्य को धीमी गति से पढ़े ताकि यदि किसी बच्चे का लिखना रह गया हो तो वह उसे पूरा कर पाए तथा अपने द्वारा लिखे को पढ़े और पहली नजर में पहचान में आने वाली गलतियों को पहचान कर खुद ही सही कर ले।

प्रत्येक बार पढ़ने के मध्य 5–8 मिनिट का अन्तराल रखना चाहिए।

इस तरह से करवाए गए श्रुतलेख में बच्चों को स्वयं अपनी गलतियों को पहचानकर सुधारने का समय मिलता है। इससे बच्चों के निर्णय करने की क्षमता का विकास होता है और वे अपनी गलतियों से सीख भी लेते हैं। उनके द्वारा अपनी पुस्तिका में सही की गई गलतियों से शिक्षक को भी बच्चे के स्तर का आभास हो जाता है। शिक्षक श्रुतलेख की जाँच करते समय बच्चों की खास तरह की गलतियों को देखकर उनके साथ आगे काम करने की योजना बनाए। इस प्रकार यदि श्रुतलेख का सही ढंग से संचालन किया जाए तो यह न सिर्फ बच्चों के सीखने में मदद करता है बल्कि शिक्षक को भी बच्चे के स्तर को पहचानने एवं आगे की कार्य योजना बनाने में भी मदद करता है।

पाठगत प्रश्न

1. बोलने–सुनने की क्षमता के आकलन का महत्त्वपूर्ण तरीका कौनसा है?

   (क) बोलना (ख) सुनना

   (ग) बोलना–सुनना दोनों (घ) श्रुतलेख

2. मौखिक परीक्षण के द्वारा भाषा शिक्षण के कौन–कौनसे कौशलों का आकलन किया जा सकता है?

टिप्पणी

.....

.....

.....

3. एक अध्यापक शिक्षक आकलन के दौरान अपने साथी से कह रहा है– ''बात तो बच्चे ने बिल्कुल सही लिखी है, पर मैंने जिन शब्दों में बताई थी, वे शब्द नहीं है, क्या करूँ, नम्बर काट लूँ क्या?'' आप इस शिक्षक महोदय की मदद किस तरह से करेंगे?

.....

.....

.....

10.6 भाषा में गद्य, पद्य और नाटक के लिए आकलन हेतु गतिविधियाँ

अभी हमने कौशलों को जाँचने के तरीकों को विस्तार से जाना। अब हम गद्य–पद्य और नाटक के उदाहरण के द्वारा जानने का प्रयास करेंगे कि किस तरह के प्रश्न मौखिक या लिखित हो सकते हैं। कौन–कौनसी गतिविधियाँ सम्भव हैं? उसका नमूना प्रस्तुत है।

10.6.1 गद्य

क्लोज़ टेस्ट

यह भाषाई निपुणता जानने का एक अच्छा तरीका है। इससे बच्चे की भाषा के संबंध में सभी तरह की निपुणता के स्तरों को मापा जा सकता है। यह एक प्रभावशाली तरीका है। इसमें बच्चों को एक पाठ्यसामग्री दी जाती है जिसमें हर निश्चित अंतराल पर शब्द निकाल दिए जाते हैं।

क्लोज़ टेस्ट निर्माण की प्रक्रिया

क्लोज़ टेस्ट में जो पाठ्यवस्तु चुनी जाती है वह ऐसी होनी चाहिए कि संदर्भ स्पष्ट होता हो। कोई एक बात पूरी तरह से कही गई हो। जो भी अंश चुना जाए वह चुनौतीपूर्ण और रुचिकर हो। इसके बाद पाठ्यवस्तु के शुरुआत की पंक्ति ज्यों की त्यों रखी जाती है। दूसरी पंक्ति से हर पाँचवाँ/सातवाँ शब्द हटा दिया जाता है। इस पाठ्य सामग्री की अन्तिम पंक्ति ज्यों की त्यों रखी जाती है। इस टेस्ट में कम से कम 20 रिक्त स्थान होने चाहिए। शब्दों को हटाने का एक अन्य तरीका यह है कि कुछ खास शब्दों को जैसे– वर्तमान काल की क्रियाएँ या विशेषणों को ही हटाएँ जिससे किसी प्रकरण के बारे में बच्चों की समझ को जान सकें और अपनी शिक्षण रणनीति बना सकें।

टिप्पणी

छात्रों को स्पष्ट निर्देश दिए जाएँ कि वे गद्यांश दो या तीन बार अच्छी तरह से पढ़ें। रिक्त स्थान में केवल एक ही उचित शब्द लिखें।

इस टेस्ट का इस्तेमाल तीसरी कक्षा से शुरू किया जा सकता है। शिक्षक पहले बच्चों को इसका अधिक से अधिक अभ्यास करने का मौका दे फिर इसमें वे कठिनता का स्तर बढ़ा सकते हैं।

क्लोज़ टेस्ट के अंकन के प्रायः दो तरीके हैं। पहले तरीके में यह अपेक्षा की जाती है कि मूल पाठ्य सामग्री के ही शब्द रिक्त स्थान में आएँ तभी सही माना जाएगा। दूसरा तरीका यह है कि मूल पाठ के समान शब्दों को भी सही उत्तर के रूप में स्वीकार किया जाता है। क्लोज़ टेस्ट का एक उदाहरण प्रस्तुत है।

मूल पाठ

शादी के बाद धनिया पहली बार ससुराल जा रहा था। धनिया खाने–पीने का शौकीन था। इसलिए उसकी पत्नी कुल्फ़ी ने कहा– "सुनो जी, वहाँ कम खाना। मेरे घरवाले तुम्हें पेटू न कहें।"

ससुराल पहुँचते ही पकवान परोसे जाने लगे। गर्म–गर्म पूड़ियाँ, दाल का हलवा! मलाई की लस्सी! बेचारा धनिया, थोड़ा–सा लेकर हर चीज़ को न–न करता। आख़िर वह किसी तरह मन मारकर सोने चला। लेकिन आधी रात को उठ बैठा। कुल्फ़ी को जगाकर बोला– "मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं। कुछ तो कर!" दोनों दबे पाँव रसोई में पहुँचे।

अन्दर धनिया को अँधेरे में एक मटका छत से लटकता दिखाई दिया। पास पड़े कनस्तर पर चढ़ गया। झट मटके में हाथ डाला। अरे! यह तो कोई चिपचिपी चीज़ है! घबराकर हाथ झटका तो कनस्तर लुढ़का। ऊपर से उलटा शहद का मटका। आवाज़ें सुनकर ससुरालवाले जागे। शहद से लथपथ धनिया ज़मीन से चिपक गया। कुल्फ़ी ने पति को खींचकर सामने की कोठरी में धकेला। धनिया जा गिरा रूई के ढेर पर। शहद में डूबे शरीर पर चिपक गई सफेद रूई। तब तक ससुरालवाले आँगन में इकट्ठे हो गए। लोगों को आता देख कुल्फ़ी ने पति को कहा– "भागो।" और चिल्लाने लगी "भूत! भूत!" धनिया बाहर दौड़ा। उसे देखकर डर के मारे सब कमरों में घुस गए। धनिया बाहर नल पर नहाकर आराम से लौट आया। (उड़ान, हिन्दी, कक्षा–3, पृष्ठ–75)

क्लोज

शादी के बाद धनिया पहली बार ससुराल जा रहा था। धनिया खाने–पीने का शौकीन था।

इसलिए (1) ..... पत्नी कुल्फ़ी ने कहा– ''सुनो जी, (2) ..... कम खाना। मेरे घरवाले तुम्हें पेटू (3) ..... कहें।''

ससुराल पहुँचते ही पकवान परोसे (4) ..... लगे। गर्म–गर्म पूड़ियाँ, दाल का हलवा! (5) ..... की लस्सी! बेचारा धनिया, थोड़ा–सा लेकर (6) .... चीज़ को न–न करता। आख़िर वह (7) ..... तरह मन मारकर सोने चला। लेकिन (8) ..... रात को उठ बैठा। कुल्फ़ी को (9) .....बोला– ''मेरे पेट में चूहे कूद (10) ..... हैं। कुछ तो कर!'' दोनों दबे (11) ..... रसोई में पहुँचे।

अन्दर धनिया को (12) ..... में एक मटका छत से लटकता (13) .... दिया। पास पड़े कनस्तर पर चढ़ (14) .....। झट मटके में हाथ डाला। अरे! (15) ..... तो कोई चिपचिपी चीज़ है! घबराकर (16) ....कृकृकृ झटका तो कनस्तर लुढ़का। ऊपर से (17) ..... शहद का मटका। आवाज़ें सुनकर ससुरालवाले (18) .....। शहद से लथपथ धनिया ज़मीन से (19) ..... गया। कुल्फी ने पति को खींचकर (20) .... की कोठरी में धकेला। धनिया जा (21) ..... रूई के ढेर पर। शहद में (22) ..... शरीर पर चिपक गई सफेद रूई। (23) ..... तक ससुरालवाले आँगन में इकट्ठे हो (24) .....। लोगों को आता देख कुल्फ़ी ने (25) ..... को कहा– ''भागो।'' और चिल्लाने लगी '' (26) ....! भूत!'' धनिया बाहर दौड़ा। उसे देखकर (27) .... के मारे सब कमरों में घुस (28) .....। धनिया बाहर नल पर नहाकर आराम से लौट आया।

गद्य के आकलन के लिए अन्य सम्भावित गतिविधियाँ–

- इस कहानी को अपनी भाषा (मातृभाषा/घरेलू भाषा) में लिखिए।
- शीर्षक देना

इस गतिविधि के दौरान शिक्षक छात्रों से बातचीत करे कि उसने यह शीर्षक क्यों चुना, कौनसा शीर्षक ज्यादा उपयुक्त है यह बच्चों से चर्चा करें।

- प्रश्न बनाना

यह कार्य समूह में या व्यक्तिशः दोनों तरह से करवाया जा सकता है। यदि समूह में कार्य किया है तो एक समूह प्रश्न बनाए और दूसरा समूह उसका जवाब दे।

इस विषयवस्तु पर निम्न प्रकार के प्रश्न बन सकते हैं–

1. धनिया किस चीज का शौकीन था?
2. कुल्फ़ी को जगाकर धनिया ने क्या कहा?

टिप्पणी

3. धनिया को जब खाना परोसा जा रहा था तो मना क्यों कर रहा था?

4. कुल्फी जोर से भूत–भूत क्यों चिल्लायी?

5. कुल्फी ने कम खाने के लिए कहा था। यदि आप धनिया की जगह होते तो क्या करते?

- कहानी में आए मुहावरों को छाँटना उनको वाक्यों में प्रयोग करना।
- कहानी को संवाद में बदलना

अलग–अलग परिस्थिति पर कहानी के दृश्यों पर बातचीत को लिखना। यह कार्य बच्चों के दल बनाकर किया जा सकता है।

10.6.2 पद्य

मेघ

चमक उठी बिजली बादल में कड़का कड़का शोर हुआ,
उभर चला फिर मेघ घुमरकर पानी चारों ओर हुआ।
हवा बह रही ठंडी–ठंडी, बूँदें तिरछी गिरती हैं,
पूरब से जो छटी घटाएँ पश्चिम जाकर घिरती हैं।
काला कंबल ओढ़े वन में भीग रहा है चरवाहा,
गैया भीग रही है उसकी, भीग रहा है हलवाहा।
मुन्नू का वह बना घरौंदा टप–टप–टप–टप चूता है,
नाली में वह बहा जा रहा जाने किसका जूता है।
नाच रहे हैं भरे खुशी से, मेंढ़क अर–पों बोल उठा,
एक साल के बाद आज फिर चातक का मन डोल उठा।
मुन्नू, मुन्ना, मोहन, रग्घू सब पानी में खेल रहे,
सब कागज की नाव बनाकर धारा में है ठेल रहे।

–युगल
(उड़ान, हिन्दी, कक्षा–5, पृष्ठ–1)

इस कविता के आकलन हेतु निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं–

प्र.1 बादल जब घुमड़कर आते हैं, तो क्या–क्या होता है?

प्र.2 वन में चरवाहा ने बारिश से बचने के लिए क्या किया?

प्र.3 घरौंदा जब चूता है तो किस तरह की आवाज़ आती है?

प्र.4 बारिश में बच्चे क्या कर रहे हैं? खुशी से कौन नाच रहा है?

प्र.5 घटाएँ किस दिशा में जाकर इकट्ठी हो रही हैं?

(1) पूरब (2) पश्चिम (3) उत्तर (4) दक्षिण

प्र.6 "नाली में वह बहा जा रहाकृकृ।" वह शब्द इस पंक्ति में किसके लिए आया है?

(1) खिलौना (2) जूता (3) चप्पल (4) गेंद

- मुन्नू का वह बना घरौंदा बारिश में टप–टप–टप–टप चू रहा है।

  अपनी कल्पना के आधार पर घरौंदे का चित्र बनाइए।
- एक साल के बाद आज फिर चातक का मन डोल उठा। यहाँ पर 'चातक का मन डोल उठा' से क्या मतलब है?
- बिजली का चमकना और बादल का गरजना आपने देखा सुना होगा? अब बताइए दोनों में से पहले क्या होता है?

कक्षा में अभिनय करके बताइए

- 'ठेलना का अर्थ धक्का देना होता है। अब इसका अभिनय करके बताइए।
- जब लगातार वर्षा होती है तो हमें क्या–क्या समस्याएँ हो सकती हैं? बताइए।
- इस कविता में बादल के लिए मिलते–जुलते अर्थ वाले शब्दों को ढूँढकर लिखिए।

अपनी बात कहने का तरीका

- कविता में 'हवा बह रही ठंडी–ठंडी', लिखा हुआ है इसे बोलचाल में हम ठंडी–ठंडी हवा बह रही है बोलते हैं। अब बताइए इन्हें कैसे बोलेंगे–

1. भीग रहा है चरवाहा।
2. गैया भीग रही है उसकी।

10.6.3 नाटक

किसी भी नाटक के अभिनय करने या संवाद लिखने का कार्य किया जा सकता है। अब किस छात्र को कितने–कितने अंक दिए जाएँ, यह इस बात पर निर्भर करता है कि नाटक के पात्र, भाव और जो बात कहनी है वह संवाद में उभरकर आ पा रही है या नहीं। क्या विद्यार्थी अपनी बात को समझाने में सफल हो पा रहा है? क्या नाटक में प्रयुक्त शब्दों के अलावा बाहर के शब्दों का भी प्रयोग कर पा रहे हैं? संवाद बोलते समय उनमें सरलता और चुटीलापन नज़र आ रहा है या नहीं इन सबके आधार पर नाटक के मुख्य बिन्दुओं का आकलन किया जा सकता है।

लुक्को मौसी

पहला दृश्य

स्थान – एक मकान का कोना।

समय – आधी रात

(दो मुर्गी के बच्चे बैठे–बैठे कुछ सोच रहे हैं।)

पहला बच्चा – इस लोमड़ी ने तो आफ़त कर दी है। कल अपने भाई–बहनों को खा गई।

दूसरा बच्चा – मैं छोटा हूँ, बड़ा होता तो मुक्के मार–मारकर उसकी नाक तोड़ देता।

पहला बच्चा – छोटे हैं तो क्या हुआ? आओ कोई तरकीब सोचें।

दूसरा बच्चा – तरकीब क्या करेगी?

पहला बच्चा – तरकीब से हम लोग लोमड़ी को ऐसा मज़ा चखाएँगे कि फिर कभी इधर आने का नाम नहीं लेगी।

दूसरा बच्चा – ऐसी तरकीब क्या हो सकती है?

पहला बच्चा – भइया! वही तो सोचना है।

दूसरा बच्चा – अच्छा तू सोच, तब तक मैं आराम कर लूँ।

(दूसरा बच्चा ज़मीन पर लेट जाता है। पहला बच्चा बैठा–बैठा सोच रहा है। सोचते–सोचते घूमता है। पास ही एक कुआँ है। कुएँ में झाँककर देखता है। कुएँ में झाँकते ही खुशी के मारे उछल पड़ता है। भागता–भागता अपने भाई चूज़े के पास आता है।)

पहला बच्चा – आज मैं लोमड़ी को मज़ा चखाऊँगा।

दूसरा बच्चा – (उठकर) कैसे?

पहला बच्चा – मैंने तरकीब सोच ली।

दूसरा बच्चा – मुझे भी तो बताओ।

पहला बच्चा – इधर देख, कुएँ में क्या है?

दूसरा बच्चा – (कुएँ में झाँककर) चंदा मामा की परछाई।

पहला बच्चा – बस यही तो मेरी तरकीब है।

दूसरा बच्चा – इससे क्या होगा?

पहला बच्चा – उस चालाक लोमड़ी को आने दे, फिर मैं बताऊँगा कि इससे क्या होगा।

दूसरा बच्चा – (डरकर) भइया!

पहला बच्चा – क्या हुआ?

दूसरा बच्चा – वह आ रही है! देखो। उधर देखो। मुझे तो डर लग रहा है।

पहला बच्चा – लोमड़ी? आने दो। डरो नहीं, मैं अभी उसे मज़ा चखाता हूँ। (लोमड़ी आती है।)

लोमड़ी – (हँसकर) आधी रात बीत गई। अभी तक शिकार नहीं मिला। तुम लोगों को खाने से पेट तो भरेगा नहीं। खैर कोई बात नहीं। स्वाद तो आ जाएगा।

पहला बच्चा – लोमड़ी मौसी! हम लोग छोटे–छोटे हैं। हमें खाने से आपका पेट नहीं भरेगा। चलिए, हम आपको बहुत अच्छी चीज़ खिलाएँगे।

लोमड़ी – क्या खिलाओगे तुम लोग?

पहला बच्चा – पनीर

लोमड़ी – (जीभ से होंठ चाटकर) पनीर! पनीर तुम्हारे पास है?

पहला बच्चा – हाँ लोमड़ी मौसी! आइए मेरे साथ।

(बच्चा लोमड़ी को कुएँ के पास ले जाता है। कुएँ पर एक चरखी है। चरखी पर एक रस्सी है। रस्सी में दो बाल्टियाँ टँगी हैं।)

पहला बच्चा – कुएँ में झाँककर देखिए। हमारा मालिक पनीर को रोज़ इसमें छिपा देता है।

लोमड़ी मौसी – बड़ा चालाक है तुम्हारा मालिक। (झाँककर देखती है।) वह सफेद–सफेद, गोल–गोल पनीर का टुकड़ा है?

पहला बच्चा – हाँ मौसी, वह पनीर का टुकड़ा ही है।

लोमड़ी – लेकिन बच्चो! इस कुएँ में कैसे जाऊँ

पहला बच्चा – जिस हमारा मालिक इस पनीर को छिपाने जाता है।

लोमड़ी – कैसे जाता है तुम्हारा मालिक?

पहला बच्चा – इस चरखी पर ये दो बाल्टियाँ टँगी हैं। इनमें से एक नीचे जाने की है और दूसरी ऊपर आने की है।

लोमड़ी – नीचे जाने की कौन–सी बाल्टी है?

टिप्पणी

पहला बच्चा – (एक बाल्टी की ओर इशारा करके) आप इसमें बैठ जाइए। यह आपको नीचे ले जाएगी।

लोमड़ी – आज तो भूख के मारे प्राण निकल रहे हैं।

पहला बच्चा – लोमड़ी मौसी! थोड़ा–सा पनीर हमारे लिए भी लाना।

लोमड़ी – अगर मेरा पेट भर गया और फिर कुछ बचा तो ज़रूर लाऊँगी। अच्छा, मैं जाती हूँ।

(कहते–कहते लोमड़ी बाल्टी में बैठती है। बाल्टी में बैठते ही कुएँ में जा गिरती है।)

पहला बच्चा – (ताली पीटकर) बड़ी चालाक बनती थी। चंदा मामा की परछाई को ही पनीर का टुकड़ा समझ लिया।

लोमड़ी – (कुएँ से आवाज़ आती है।) मुझे ऊपर खींच लो। मैं पानी में डूब रही हूँ।

पहला बच्चा – (हँसकर) मौसी! खाना खाने के बाद आराम करना चाहिए। पनीर आपने खा लिया, अब आराम कीजिए।

लोमड़ी – (कुएँ में रोती है।) मुझे बचाओ! बचा लो मुझे!!

दोनों बच्चे – (उछल–उछल कर)

लुक्को मौसी राम राम।
लुक्को मौसी राम राम।
लुकछिप कर तुम आती थीं,
चूज़ों को खा जाती थीं।
पाप किए थे तुमने भारी।
अब तो बोलो राम नाम।
लुक्को मौसी राम राम।
लुक्को मौसी राम राम। *('उड़ान' हिन्दी, कक्षा–3, पृष्ठ–45)*

इस नाटक से सम्बन्धित आकलन के लिए इस प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं?

1. नाटक का नाम लुक्को मौसी क्यों है?
2. तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे?
3. नीचे कुछ पात्रों के नाम दिए गए हैं। वो आपस में क्या–क्या बात करेंगे, सोचकर संवाद के रूप में लिखिए।

   (1) चूहे और बिल्ली (2) खिलौना और लड़का (3) माँ और बेटा
4. नाटक के अन्त में आई हुई कविता की तरह नीचे दी गई कविता को तुकबंदी करते हुए पूरी करो–

लड्डू भाई गोल–मटोल।

..... ।।

हलवाई के प्यारे हो।

..... ।

जब–जब दिखे थाल भरे।

..... ।।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चे की भाषा के बारे में सभी तरह की निपुणता के स्तर को मापने का एक तरीका क्या है?

   (क) निबंध लेखन (ख) कहानी लेखन

   (ग) क्लोज टेस्ट (घ) श्रुतलेख

2. क्लोज टेस्ट से आप क्या समझते हैं? लिखिए।

   .....

   .....

   .....

3. क्लोज टेस्ट बनाते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

   .....

   .....

   .....

4. कक्षा–5 के लिए कोई एक गद्यांश या विषयवस्तु चुनिए और क्लोज टेस्ट बनाइए अपनी कक्षा में उपयोग करते हुए पता लगाइए कि भाषा सम्बन्धी त्रुटियों का पता लगाइए।

   .....

   .....

   .....

5. नाटक के कुछ दृश्यों का अभिनय बच्चों को समूह में करने को कहा जाए और शिक्षक रेटिंग स्केल का प्रयोग कर आत्मविश्वास, हावभाव आदि के आधार पर श्रेणी निर्धारित कर सकता है।

टिप्पणी

.....

.....

.....

10.7 सारांश

इस इकाई में आपने सीखा कि आकलन की प्रचलित प्रक्रिया में बदलाव की जरूरत है। आकलन का बिन्दु केवल पाठ्यवस्तु ही नहीं होती है बल्कि अलग–अलग क्षेत्रों की समझ के साथ समय विशेष के साथ हुए बदलाव और परिवर्तनों को जानना आवश्यक है। यह प्रक्रिया पूरे सत्र पर्यन्त चलती रहती है। इस प्रक्रिया में विभिन्न चरण हैं जिनके द्वारा सूचनाओं को संग्रहीत किया जाता है। इनके आधार पर बच्चों की विभिन्नताओं और विशेष जरूरतों के अनुसार सीखने का अवसर दिया जाता है। इस इकाई में कुछ सुझाव मात्र है। आप अपने अनुभवों के आधार पर बहुत कुछ जोड़ सकते हैं।

1. भाषाई कौशलों को ध्यान में रखते हुए आकलन को न कि विषयवस्तु को ध्यान में रखा जाए।
2. प्राथमिक स्तर पर शुद्धता से पहले प्रवाहिता को प्राथमिकता देना आवश्यक है।
3. अलग–अलग कौशल की जाँच के लिए अलग–अलग गतिविधि करवाने की जरूरत नहीं है। एक ही गतिविधि के माध्यम से विभिन्न कौशलों का आकलन भी संभव है।
4. आकलन के माध्यम से बच्चों को विभिन्नताओं और जरूरतों के अनुसार सीखने का अवसर भी मिलता है।
5. आकलन की प्रक्रिया सतत चलती रहती है।

10.9 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

आकलन एवं स्त्रोत पुस्तिका (2009), नई दिल्ली : एनसीईआरटी

पढ़ने की समझ, (2008), नई दिल्ली : एनसीईआरटी

10.8 अंत्य इकाई अभ्यास

1. वर्तमान में प्रचलित आकलन की प्रक्रिया से छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को किन–किन समस्याओं से जूझना पड़ता है? लिखिए।
2. आकलन से शिक्षक को शिक्षण योजना बनाने में मदद मिलती है, कैसे? स्पष्ट कीजिए।
3. एक बच्ची की प्रगति की तुलना अन्य बच्ची से क्यों नहीं की जानी चाहिए?

टिप्पणी

4. भाषा में आकलन के दौरान प्राथमिक स्तर पर आप 'प्रवाहिता' या 'शुद्धता' दोनों में से किसको अधिक महत्त्व देंगे और क्यों?

5. भाषा में आकलन के प्रमुख बिन्दु कौन–कौनसे हैं? किसी एक बिन्दु को ध्यान में रखते हुए विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

प्रदत्त कार्य (Assignment)

- कक्षा 3 से एक–एक गद्य, पद्य व नाटक विधा चुनकर आकलन के लिए प्रश्न बनाइए।